शुद्ध हिन्दी

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद प्राय: सभी क्षे[illegible] हिन्दी की उन्नति हुई है। नवीनता के नाम पर लेखक अपनी रचनाओ में कुछ न कुछ नयापन लाना चाहता है। लेखक अंग्रेजी भाषा की नकल करते हैं। नवीनता लाने और सरल करने वाले हिन्दी भाषा की प्रकृति को भुला देते हैं या वे प्रकृति से अनभिज्ञ होते हैं। इन कारणों से भाषा में स्वेच्छाचार बढ़ रहा है और भाषा का स्वरूप विकृत हो रहा है।

हिन्दी भाषी क्षेत्र के छात्रों के मन में यह धारणा है कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, अत: वे ध्यान नहीं देते हैं और उनकी भाषा बहुत लचर होती है, सैकड़ों तरह की भूले होती हैं।

भाषा का ज्ञान लगातार प्रयत्नपूर्वक अध्ययन करने और सीखने पर ही होता है और इसमें कुछ समय भी लगता है। इसके द्वारा सम्बद्ध भाषा विशेष का शुद्ध लिखना, पढना और बोलना सीखा जा सकता है, उस विद्या या शास्त्र को व्याकरण कहते हैं। इस विद्या के माध्यम से भाषा को उसकी लघुतम इकाई तक विभाजित किया जाता है। भाषा को छोटी-छोटी इकाइयो में विभाजित कर उसकी सरचना की पुष्टि करता है और भाषा का अध्ययनार्थ सुबोध व सरल रूप से प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत पुस्तक में व्याकरण के सिद्धान्तो व नियमों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक विषय को अधिक से अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, उदाहरणो के माध्यम से बालक प्रतिदिन व्यवहार में आने वाली सामान्यरूप से होने वाली भूलो व दोषों को जान सके।

भाषा का प्रकृति-तत्व ही उसका प्राण होता है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की प्रकृति, उसके शब्दों की बनावट, मुहावरों, कहावतों आदि का ज्ञान कराने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक केवल छात्रों के लिए ही नहीं, अपितु उन सभी के लिए उपयोगी होगी जो भाषा सम्बन्धी भूलों और दोषो से बचना चाहते हैं। जो अपनी भाषा को शुद्ध और सुन्दर बनाना चाहते हैं।

भूलें सबसे होती हैं, अत: सम्भव है कि प्रस्तुत पुस्तक मे भी भूलें हुई हों। हमें विश्वास है कि विद्वान लेखक और पाठक हमें उन भूलो के बारे में सूचित करने की कृपा करेंगे। उनके विचारों और सुझावों का स्वागत किया जायेगा और समुचित लाभ उठाने का प्रयास किया जायेगा।

शुद्ध हिन्दी

डॉ. जगदीश प्रसाद कौशिक

साहित्यागार

शुद्ध हिन्दी

लेखक
डॉ. जगदीश प्रसाद कौशिक

प्रकाशक
साहित्यागार
धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता,

संस्करण
1999

मूल्य
दो सौ रूपये मात्र

सम्पादक
राजेन्द्र गुप्ता

मुद्रक
किशोर ऑफसेट, जयपुर।

आमुख

बड़े खेद की बात है कि देश की आजादी के 50 वर्ष बाद भी हम भारतवासी हिन्दी की निरंतर उपेक्षा करते रहे हैं। मातृभाषा के प्रति हमारी यह प्रवृत्ति किस मनोवृत्ति की परिचायक है ?

"जिसे न निज भाषा, निज राष्ट्र का अभिमान है।
वह नर नही पशु निरा और मृतक समान है।

भारतेदु हरिश्चंद्र की ये पंक्तियां हमारी मानसिकता पर कैसा करारा चांटा है, फिर भी हम इतने ढीठ व निर्लज्ज हो चले हैं कि मातृभाषा की उपेक्षा पर हमारा स्वाभिमान आहत नही होता। अंग्रेजी के प्रति माह क्यों कर है ? क्या सिर्फ इसलिए कि हम अंग्रेजी के दो-चार जुमले बोलकर अपने आपको अधिक सुसंस्कृत व शिक्षित दिखा सकें। अग्रेजी को भाषा के रूप में सीखना बुरा नही है। बुरा है अग्रेजी के मात्र दो-चार शब्द बोलकर अपने आपको कथित सभ्य व सुसस्कृत दिखाने का ढोग।

हिन्दी का अपमान करने की हमारी भावना नही भी हो, किन्तु हिन्दी के प्रति हमारी उपेक्षा की प्रवृत्ति अनजाने ही हिन्दी का अहित कर जाती है। जब हम अपने क्षेत्रीयता के प्रभाव को अपनी भाषा व बोली पर डाल देते है। स्थानीय, क्षेत्रीय या बोलीगत संस्कारो और प्रयोगो से जान नहीं छुड़ा पाते तो हिन्दी का अहित ही करते हैं।

प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हरदेव बाहरी "प्रायः यह देखा गया है कि पजाब के लोग अपना पजाबीपन, बगाल के बगालीपन, बिहार के पूर्वीपन, गुजरात के गुजरातीपन और दूसरे लोग अपने-अपने व्यवहार में हिन्दी ले आते हैं। ऐसा स्वाभाविक तो है, किन्तु वाछनीय नही है। इस तरह प्रादेशिकता के प्रभाव से हिन्दी का कोई एक आदर्श, परिनिष्ठित और मान्य रूप नहीं रह जाएगा। तब यह सामान्य भाषा नही बन पाएगी।

यदि वर्षों तक हिन्दी भाषा और साहित्य पढ़ते रहने के बाद भी कोई व्यक्ति, शाशन, बिद्या, जथार्थ, शबद, अरमूद आदि ग्राम्य उच्चारण नहीं छोड पाता, अथवा "हम जाता है, पहिया अच्छी है, आप जाओगे मैने जाना है, हम उसको बताये, उसने बताये, उसने बात किया आदि का प्रयोग करता है तो उसे अनपढ़ आदमी के समान ही समझना चाहिये। भाषा से ही आदमी की शिक्षा, सभ्यता और कुलीनता का परिचय मिलता है।"

शुद्ध हिन्दी सिखाने के उद्देश्य से कई पुस्तकें लिखी गई हैं। किन्तु उनमें व्याख्यानात्मक सामग्री अधिक है, व्यावहारिक और उपयोगी सामग्री कम है। मैंने व्यावहारिक व उपयोगी सामग्री अधिक देने का प्रयास किया है। मैंने सामग्री का वर्गीकरण इस ढग से किया है कि व्याख्यानात्मक टिप्पणियो की आवश्यकता नही रही है। जहाँ कही आवश्यकता महसूस हुई, मैंने संक्षिप्त सामग्रो दी भी है—

इस पुस्तक को लिखते समय माध्यमिक शिक्षा के छात्रों के पाठ्यक्रम का पूरा ध्यान रखा गया है जिससे छात्र लाभान्वित हो सकें।

यह पुस्तक केवल छात्रो के लिए ही नही अपितु उन सभी के लिए उपयोगी होगी जो भाषा सम्बंधी भूलो और दोषो से बचना चाहते है। जो अपनी भाषा को शुद्ध और सुन्दर बनाना चाहते हैं।

इस पुस्तक को सरल, व्यावहारिक और रोचक बनाने का पूरा ध्यान रखा गया है। साथ ही यह भी ध्यान रखा गया है कि पुस्तक व्याकरण संबंधी नियमो व सिद्धातों से ही बोझिल न हो जाए।

अत. पुस्तक के रचना भाग को व्यापक और उपादेय बनाने तथा उसकी ग्राह्यता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उदाहरण बहुत अधिक मात्रा में दिए गए है। हमारे व्यवहार व बोली में घुल-मिल गए शब्दों व वाक्यों को ही प्रस्तुत पुस्तक में शामिल किया गया है। पुस्तक को सरल, रोचक व व्यावहारिक बनाने के लिए अन्य विद्वानो की पुस्तको मे दिए गए उदाहरण भी इस पुस्तक में शामिल किये गए हैं, इसके लिए मै उन सभी विद्वानों का आभार प्रदर्शित करता हूँ। मैं आभारी हूँ डॉ जगदीश प्रसाद कौशिक, डॉ. विजय अग्रवाल, डॉ वचनदेव कुमार, डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, डॉ. हरदेव बाहरी, डॉ हरिवंश तरुण का जिनकी पुस्तको मे दिए गए उदाहरणों को प्रस्तुत पुस्तक में शामिल किया गया है।

भूल सबसे होती हैं अत सभव है प्रस्तुत पुस्तक मे भी भूले हुई हो। हमे विश्वास है विद्वान लेखक और पाठक हमे उन भूलों के बारे मे सूचित करने की कृपा करेंगे। आशा है आपका आत्मिक स्नेह एवं सद्‌भाव हमे निश्चय ही प्राप्त हो सकेगा।

हमे आपके मार्गदर्शन की हमेशा प्रतीक्षा रहेगी।

राजेन्द्र गुप्ता

अनुक्रमणिका

■□■

1

वर्तनी सम्बन्धी समस्याएं और अशुद्धियाँ

हम यह जानते ही है कि हिन्दी भाषा में देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है और यह भी सर्वविदित है कि इस भाषा मे एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि-चिह्न को व्यवहार मे लाते हैं। अत शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने से वर्तनी भी शुद्ध हो जाती है किन्तु शिक्षण सस्थाओं, घर-परिवार तथा पास-पड़ोस मे शुद्ध उच्चारण का अपेक्षित वातावरण न होने के फलस्वरूप वर्तनी मे अशुद्धियॉ देखी जाती है।

वर्तनी सम्बन्धी समस्याएँ दो प्रकार की है –

(1) शब्दो मे वर्तनी की अनेकरूपता के कारण अशुद्धियॉ।

(2) अज्ञानजन्य वर्तनी की अशुद्धियॉ।

(1) शब्दो मे वर्तनी की अनेकरूपता–'वर्तनी की अनेकरूपता' जहॉ एक ओर किसी भाषा की समस्या होती है वहा दूसरी ओर उसकी विशेषता भी होती है। अनेकरूपता भाषा विकास की परिचायका होती है, क्योकि जैसे-जैसे कोई भाषा विकास की ओर अग्रसर होगी वैसे-वैसे उसमे अनेकरूपता का भी समावेश होता चला जाएगा। इसके अनेक कारण होते है, यथा–क्षेत्रीयता, उच्चारण की विभिन्नता, भाषा की प्रकृति के प्रति उपेक्षा या अनभिज्ञता, अन्य समृद्ध भाषाओ का दुष्प्रभाव आदि। विश्व की कोई भी समृद्ध भाषा ऐसी नहीं होगी जिसमे पूर्णत वर्तनी की एकरूपता पाई जाती हो, फिर भी व्याकरण इस ओर सजग रह कर वर्तनी की एकरूपता को बनाये रखने का प्रयास करते है। इससे अनेकरूपता मे अधिक वृद्धि नही हो पाती है।

जहॉ तक सम्भव हो वर्तनी की अनेकरूपता से बचना चाहिए और वर्तनी में एकरूपता लाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये। अगर वर्तनी के दो या अधिक रूप नियम सिद्ध हों तो उन्हे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

अज्ञानजन्य वर्तनी की अशुद्धियाँ

जब शब्दों के साथ प्रत्ययो का योग किया जाता हे तब अनेक स्थलो पर शब्द के मूल रूप मे भी विकार उत्पन्न हो जाता है। फलत· हम लिखते एव बोलते समय सम्बद्ध प्रत्यय तो शब्द के साथ लगा देते है किन्तु शब्द मे तज्जन्य विकार पर ध्यान नही देते हैं। फलत वर्तनी की अशुद्धि हो जाती है। शब्द के साथ जब 'इक, य, अ' प्रत्यय जोडे जाते हैं

तब शब्द के आदि स्वर की वृद्धि होती है अर्थात् 'अ' का 'आ,' 'इ', ई, 'ए' का 'ऐ' और 'उ', 'ऊ', 'ओ', का 'औ' होता है। सस्कृत मे 'आ, ए और ओ' को वृद्धि कहते हैं। सस्कृत में 'ऋ' की 'आर' की वृद्धि होती है।

(1) शब्द के साथ जब इक, य, अ, प्रत्यय जोडे जाते हैं तब शब्द के आदि स्वर को वृद्धि आदेश होता है अर्थात् 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ई', 'ए' को 'ऐ' और 'उ', 'ऊ', 'ओ' को 'औ' आदेश होता है। सस्कृत मे 'आ, ए, और औ' को वृद्धि कहते हैं। सस्कृत में 'ऋ' की 'आर' वृद्धि होती है।

'अ' के स्थान पर 'आ' लिखने की अशुद्धियॉ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अनधिकार	अनाधिकार	बरात	बारात
दुरवस्था	दुरावस्था	ढकना	ढांकना
अध्यात्म	आध्यात्म	चहारदीवारी	चाहरदीवारी
अत्यधिक	अत्याधिक	हथगोला	हाथगोला
अभ्यर्थी	अभ्यार्थी	अभ्यतर	अभ्यांतर
अध्यवसाय	अध्यावसाय		
अधीन	आधीन	बगला भाषा	बागला भाषा

'आ' के स्थान पर 'अ' लिखने की अशुद्धियॉ :

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
आवाज	अवाज	जागेगा	जगेगा
तालाब	तलाब	पाजामा	पजामा
बाजार	बजार	भागना	भगना
महाराज	महराज या माहराज	महात्म्य	माहात्म्य
बादाम	बदाम	नाराज	नराज
मालूम	मलूम	आहार	अहार
आगामी	अगामी	आजमाइश	अजमाइश
चाहिए	चहिए	भागीरथी	भगीरथी
प्रामाणिक	प्रमाणिक	आविष्कार	अविष्कार
सामाजिक	समाजिक	आध्यात्मिक	अध्यात्मिक
अन्त्याक्षरी	अन्त्यक्षरी	आशीर्वाद	अशीर्वाद

पारलौकिक	परलौकिक या पारलोकिक	साहित्यिक	सहित्यिक
साप्ताहिक	सप्ताहिक	व्यावसायिक	व्यवसायिक
आध्यात्मिक	अध्यात्मिक	रासायनिक	रसायनिक
आधिक्य	अधिक्य	आधुनिक	अधुनिक
तात्कालिक	तत्कालिक	जननात्रिक	जनतन्त्रिक
(आजकल यह रूप भी चल पडा है)			
पारिवारिक	परिवारिक	व्यावहरिक	व्यवहारिक
सांसारिक	संसारिक	नादान	नदान
चातुर्य	चतुर्य		

अंग्रेजी के 'ऑ' का लेखन

'ऑ' ध्वनि अंग्रेजी के कुछ शब्दो को शुद्ध रूप से लिखने के लिए हिन्दी ने स्वीकार की है। लिखने मे तो इस ध्वनि की शुद्धता कुछ शेष है, लेकिन उच्चारण मे यह ध्वनि समाप्त–सी होती जा रही है। यहां कुछ ऐसे शब्दो की सूची दी जा रही है, जिनमे 'ऑ' लिखा जाना चाहिए। ऐसे कुछ महत्वपूर्ण शब्द है -

ऑन, बॉल, ऑफ, ऑफिस, ऑमलेट, शॉप, हॉल, ऑर्डर, ऑस्ट्रेलिया, कॉन्फ्रेन्स, कॉर्नर, कॉलोनी कॉलेज, गॉड, चॉकलेट, टॉफी, टॉकीज, डॉक्टर, ड्रॉइग पॉकेट, पॉलिश, प्लॉट, फॉर्म, फुटबॉल, मनिऑर्डर, लॉटरी, लॉर्ड, लॉन, ऑर्डिनेंस आदि।

यहा ध्यान रखने की बात है कि 'ऑ' केवल अंग्रेजी के ही शब्दो में प्रयुक्त होता है।

'इ' के स्थान पर 'ई' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
आदि	आदी	अतिथि	अतिथी
प्रीति	प्रीती	प्राणियो	प्राणीयो
इच्छा	ईच्छा		
बधाइयाँ	बधाईयां	उन्नति	उन्नती
उपाधि	उपाधी	भाइयो	भाईयो
मन्दिर	मन्दीर	रात्रि	रात्री
कठिनाइयाँ	कठीनाइयाँ	विधि	विधी
कीर्ति	कीर्नी	जाति	जाती

टाइम	टाईम	पिया	पीया
निर्मित	निर्मीत	लडकियॉ	लड़कीयाँ
हिजडा	हीजडा	हानि	हानी
समिति	समींती	वाल्मीकि	वाल्मीकी
आपूर्ति	आपूर्ती	पुष्टि	पुष्टी
क्षत्रिय	क्षत्रीय	कोटि	कोटी
स्त्रियो	स्त्रीयो	साइस	साईंस
लाइन	लाईन	लाइब्रेरी	लाईबेरी
लाइट	लाईट	सृष्टि	सृष्टी
नीति	नीती	परिचय	परीचय
कालिदास	कालीदास	शनि	शनी
मति	मती	अद्वितीय	अद्वीतीय
शाति	शाती	तिलांजलि	तिलांजली
स्थिति	स्थिती		

'ई' के स्थान पर 'इ' लिखने की अशुद्धियॉ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अधीन	अधिन		
मैत्री	मत्रि	परीक्षा	परिक्षा
श्रीमती	श्रीमति	बीमार	बिमार
बातचीत	बातचित	बेईमान	बेइमान
केन्द्रीय	केन्द्रिय	कीमत	किमत
कीजिए	किजिए	उत्तीर्ण	उत्तिर्ण
टीचर	टिचर	तारीख	तारिख
दीवार	दिवार	नही	नहि
पत्नी	पत्नि	यही	यहि
राजनीति	राजनीती	विनीत	विनित
शताब्दी	शताब्दि	सूची	सूचि
क्षत्रीय	क्षत्रिय	रवीन्द्र	रविन्द्र

दीवाली	दिवाली	ईंधन	इंधन
अधीक्षक	अधिक्षक	निरीक्षक	निरिक्षक
महाबली	महाबलि	महीना	महिना
नीरोग	निरोग	नीरस	निरस
दीया (दीपक)	दिया		

'उ' के स्थान पर 'ऊ' की अशुद्धियाँ :-

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
हेतु	हेतू	किन्तु	किन्तू
प्रभु	प्रभू	परतु	परतू
रुपये	रूपये	रूप	रुप
हाउस	हाऊस	साधु	साधू
करुणा	करूणा	अनुमृचित	अनूमृचित
उच्चारण	ऊच्चारण	तली-भुनी	तली-भूनी
तुम्ही	तूम्हो	दुकान	दूकान
धुआं	धूआ	अनुगृहीत	अनूगृहीत
दुबारा	दूबारा	रुक	रूक
भुन गया	भून गया	कुआं	कूआँ
बहुवचन	बहूवचन	उषा	ऊषा
रुग्ण	रूग्ण	रुचि	रूचि
इन्दु	इन्दू	दयालु	दयालू
बिन्दु	बिन्दू		

नोट :- (1) 'रु' एवं 'रू' में वही अन्तर है जो 'उ' एव 'ऊ' मे है।

(2) भूनी व भुनी दो अलग-अलग शब्द हैं। इनका अर्थ भी अलग अलग होता है। जैसे :- "मैंने सब्जी भूनी" तथा "सब्जी भुन गई।"

'ऊ' के स्थान पर 'उ' की अशुद्धियाँ

अनूदित	अनुदित	तूफान	तुफान
मालूम	मालुम	लघु	लघू
नूपुर	नुपुर	सूरज	सुरज

भूमि	भुमि	दूरी	दुरि
स्कूल	स्कुल	फूल	फुल
बहू	बहु	पूज्य	पुज्य
ऊपर	उपर	बूढ़ा	बुढ़ा
शुरू	शुरु	सरलतापूर्वक	सरलतापुर्वक
हिन्दू	हिन्दु	(मैंने) लूटे	(मैंने) लुटे
खून	खुन	बापू	बापु
मूल्य	मुल्य	महसूस	महसुस
सूई	सुई	ऊधम	उधम
जरूरत	जरुरत	रूढ	रुढ़
नीबू	निबु	झाडू	झाडु
लहू	लहु		

ऋकार संबंधी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ऋग्वेद	रिगवेद	ऋषि	रिषि
ऋण	रिण	ऋतु	रितु
ऋद्धि	रिद्धि	उऋण	उरिण

'ए' के स्थान पर 'ऐ' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
वेश्या	वैश्या	फेकना	फैंकना
फेल	फैल	चाहिए	चाहिऐ
सेना	सैना	योग्यताए	योग्यताऐं

'ऐ' के स्थान पर 'ए' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
दैविक	देविक	ऐतिहासिक	एतिहासिक
दैहिक	देहिक	धैर्य	धेर्य
ऐच्छिक	एच्छिक	वैदेशिक	वेदेशिक
वैदिक	वेदिक	पैतृक	पेतृक

वैवाहिक	वेवाहिक	नैतिक	नेतिक या नीतिक
सैनिक	सेनिक	वैमनस्य	वेमनस्य
वैधानिक	वेधानिक	पैसा	पेसा
मैसूर	मेसूर	जैसा	जेसा
मैनेजर	मेनेजर	शनैः शनैः	शने-शने.
हैण्ड	हेण्ड	मटमैला	मटमेला
टैक्स	टेक्स	कैबिनेट	केबिनेट
कैंटीन	केंटीन	ऐक्शन	एक्शन
ऐक्ट	एक्ट	ऐक्य	एक्य
ऐश्वर्य	एश्वर्य		

'ओ' के स्थान पर 'औ' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
कोना	कौना	त्योहार	त्यौहार
पड़ोसी	पड़ौसी	झोंपड़ी	झौंपडी
दोना	दौना	लोहार	लौहार
हिन्दुओं	हिन्दुऔं	न्योछावर	न्यौछावर
शोचनीय	शौचनीय		

'औ' के स्थान 'ओ' पर की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
प्रौढ़	प्रोढ़	नौकरी	नोकरी
गौतम	गोतम	पारलौकिक	पारलोकिक
औद्योगिक	ओद्योगिक	पौरुष	पोरुष
गौरव	गोरव	इन्दौर	इन्दोर
औदार्य	ओदार्य	कौरव	कोरव
डील-डौल	डील-डोल	अक्षौहणी	अक्षोहणी
खिलौने	खिलोने	तौल	तोल
पकौड़ी	पकोडी	गौण	गोण
सौम्य	सोम्य	पौरव	पोरव

दौवारिक	दोवारिक	औपन्यासिक	ओपन्यासिक
भौतिक	भोतिक	कौतूहल	कोतूहल

अनुस्वार के स्थान पर चन्द्रबिन्दु की अशुद्धियॉ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अंक	अॅक	अग	अॅग
एव	एवॅ	गुजन	गुॅजन
अहं	अहॅ	स्वयं	स्वयँ
दिनाक	दिनॉक	गूंगा	गूँगा
अंकुर	अॅकुर	अंधा	अॅधा
आदोलन	ऑदोलन	आतरिक	ऑतरिक
मांस	मॉस	सस्कृत	सॅस्कृत

चन्द्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार लगाने की अशुद्धियॉ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
ऑख	आंख	कॉख	कांख
पॉख	पांख	कॉच	कांच
पाँच	पाच	ऑच	आंच
सॉप	सांप	जॉच	जाच
छॅटाई	छंटाई	सॅवारना	सवारना
अॅगना	अंगना	ऑगन	आगन
आँसू	आंसू	ऑत	आंत
ऊॅचा	ऊचा	गॉजा	गांजा
गूँगा	गूगा	कॅटीला	कटीला
गूँथना	गूथना	हूँ	हू
ऊँघना	ऊघना	झॉसी	झासी
डॉट	डाट	बाँझ	बांझ
बाँह	बांह	गूॅज	गूंज
काँपना	कांपना	जहाँ	जहां
बाँस	बांस		

उर्दू से आई ध्वनियों का सही प्रयोग

हिन्दी भाषा ने अपनी शक्ति को बढाने के लिए अग्रेजी, उर्दू, पुर्तगाली, फ्रैंच आदि भाषाओ से अनेक शब्द लिए हैं। चूकि हिन्दी भाषा एक वैज्ञानिक भाषा है, इसलिए इन विदेशी शब्दों के सही उच्चारण के लिए हिन्दी भाषा ने कुछ विदेशी ध्वनियो को भी स्वीकार किया। ये ध्वनियां स्वर भी हैं और व्यंजन भी हैं। सास्कृतिक आदान-प्रदान का ही यह परिणाम रहा है कि हिंदी भाषा ने उर्दू की पांच व्यजन-ध्वनियों को ज्यों का त्यो स्वीकार किया। ये पाच ध्वनियां हैं– क़, ख़, ग़, ज और फ़।

हिन्दी ने उर्दू की जो पाच व्यंजन-ध्वनियां ली हैं, वे सभी थोडे से बदले हुए रूप मे हिन्दी मे पहले से ही विद्यमान थी। हिन्दी और उर्दू की इन ध्वनियों के लेखन में जो एकमात्र अतर है, वह यह कि जहा हिन्दी की इन पाचो व्यजन-ध्वनियों के नीचे बिदी नही लगती, वही उर्दू की इन पाचों ध्वनियों मे सबके नीचे बिंदी का प्रयोग किया जाता है, जैसे– क़, ख़, ग, ज और फ। चूकि लेखन का यह अंतर सूक्ष्म है, इसलिए लेखन की दृष्टि से इन ध्वनियो में गलतियां पाई जाती हैं।

इन गलतियों का एक व्यावहारिक कारण यह भी है कि उर्दू के अनेक ऐसे शब्द, जिनमे इन व्यजन-ध्वनियो का प्रयोग होता है, हिन्दी के इतने जाने-माने शब्द बन गए हैं कि यह पहचानना ही कठिन हो गया है कि अमुक शब्द हिन्दी का है अथवा उर्दू का। पहचान के इस संकट के कारण भी इन पाचो व्यंजन-ध्वनियो के लिखने मे गलतिया होती है। यहा यह बात ध्यान रखने की है कि यह आवश्यक नही कि उर्दू के शब्दो मे जहा भी क़, ख़, ग़, ज़, और फ ध्वनियां आएगी, उन सभी मे बिदी लगेगी ही। इसलिए इसके अतर को पहचान पाना अतिरिक्त सतर्कता की मांग करता है।

यहा यह बता देना भी उपयुक्त होगा कि इन पांचो व्यंजन-ध्वनियो के नीचे बिन्दी मात्र लगा देने से शब्द के अर्थ में काफी परिवर्तन आ जाता है। हालांकि हिन्दी का सामान्य पाठक वाक्य के अर्थ-संदर्भ से उस शब्द के अर्थ को समझ लेता है, लेकिन अतत. गलती तो गलती ही होती है। जैसे एक शब्द है 'गरज,। इसका अर्थ होगा, 'बादलों की गर्जना'। लेकिन जब इसी शब्द को 'गरज' लिखा जाएगा, तो इसका अर्थ होगा 'मतलब'।

जहा तक हिन्दी और उर्दू की इन व्यंजन-ध्वनियो के उच्चारण का प्रश्न है, इनमे इतना ही अतर है कि हिन्दी की ध्वनि के उच्चारण मे वायु बिना किसी घर्षण के सीधे-सीधे मुख से बाहर निकलती है, जबकि इन उर्दू ध्वनियो के उच्चारण मे वायु थोड़ी-सी दब कर गूज पैदा करती हुई निकलती है। हिन्दी की इन व्यंजन-ध्वनियो के उच्चारण मे स्वरयत्र एक-दूसरे का स्पर्श करते हैं, जबकि कई उर्दू ध्वनियो के उच्चारण मे उनका स्पर्श बहुत हल्का होता है। इसे आप इस तरह प्रयोग करके देख सकते है, जैसे कि हिन्दी के 'फ' के उच्चारण मे दोनो होंठ बद हो जाते हैं, जबकि उर्दू की ध्वनि 'फ' के उच्चारण में होंठो के बद होने से पहले ही वायु गूंज पैदा करती हुई मुख से बाहर निकल जाती है। इसी प्रकार 'ज' के उच्चारण मे जीभ का अग्र भाग मसूढे को पूरी

तरह स्पर्श करता है, जबकि 'ज़' के उच्चारण मे पूरी तरह स्पर्श नही करता बल्कि जीभ अपने दोनो किनारो पर थोडी झुक जाती है और वायु उन झुके हुए किनारो से घर्षण करती हुई बाहर निकल जाती है। इसमें कोई सदेह नहीं कि हिन्दी की ध्वनियों का उच्चारण करना उर्दू की ध्वनियो के उच्चारण की अपेक्षा उसी तरह थोडा सरल है, जैसे कि 'स' का उच्चारण करना 'श' की तुलना में आसान होता है। लेकिन जिस प्रकार 'श' का सही उच्चारण आवश्यक है, उसी प्रकार क़, ख़, ग़, ज, फ़ का भी सही उच्चारण आवश्यक है। जिस प्रकार 'श' का सही उच्चारण शब्द को एक गरिमा प्रदान करता है, ठीक उसी प्रकार क़, ख़, ग़, ज़, फ़ के सही उच्चारण शब्द को गरिमा प्रदान करते है। अब यहा इन व्यंजन-ध्वनियों के सही लेखन की चर्चा की जाएगी।

'क' के स्थान पर 'क़' : जैसा कि पहले बताया जा चुका है 'क' और 'क़' के अंतर की पहचान कर उन्हे सही रूप में लिखना और उनका सही रूप में उच्चारण करना आवश्यक है। ऐसा इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि इन दोनो शब्दों के लेखन से अर्थ में बहुत अतर आ जाता है। इस दृष्टि से नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं

हलका (कम वजनी)	हलक़ा (परिधि)
ताक (टोह लेना)	ताक़ (आला, ताक़ पर रखना)
कौल (जाति सूचक उपनाम)	क़ौल (प्रतिज्ञा)
कै (कितने)	कै (वमन)
कदम (कदम्ब का वृक्ष)	कदम (पग)

इस प्रकार आप देखते हैं कि शब्द के नीचे बिन्दी लगाने से उसके अर्थ में कितना अतर आ जाता है। हिन्दी में हजारों ऐसे शब्द हैं, जो उर्दू से आए हुए हैं, जिनके लिखने और बोलने में काफी गलतिया होती हैं। ऐसे शब्दों की संख्या इतनी अधिक है कि उनकी पूरी सूची दे पाना यहां सम्भव नहीं है। फिर भी कुछ ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है जिनका बोलचाल में अधिक प्रयोग किया जाता है –

अकल	इलाक़ा	इश्क	औकात
क़द	कत्ल	कबूल	क़ब्जा
क़ब्र	कमीज़	क़रीब	क़र्ज़
कलम	कसम	कस्बा	क़ानून
काबिल	क़ाबू	किस्त	क़िस्म
क़िस्मत	किस्सा	कीमत	कुर्बान
क़ैद	चाक़ू	तकलीफ़	तकदीर
तरीका	दिक्क़त	नकद	नक़ल

नुकसान	फकीर	हक	बक़ाया
बाक़ायदा	बाक़ी	फ़र्क	मुक़दमा
मुताबिक	मौका	मज़ाक	लायक
वक़्त	शौक़	रक़म—आदि।	

'ख' के स्थान पर 'ख़' : जिस प्रकार 'क़' के स्थान पर 'क' लिखने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ जाता है, ठीक उसी प्रकार 'ख़' के स्थान पर 'ख' लिखने से भी शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण हैं .

खसरा (एक बीमारी)	ख़सरा (जमीन का बहीखाता)
खान (खदान)	ख़ान (खां)
खैर (कत्था)	ख़ैर (कुशल)
खुदा (खुदा हुआ)	खुदा (ईश्वर)

'ख' और 'ख़' दोनों हिन्दी की कठ्य व्यजन-ध्वनिया हैं अर्थात दोनों का उच्चारण कठ से होता है लेकिन दोनों में अतर यह है कि 'ख' के उच्चारण में जहां वायु कठ में एक बार पूरी तरह से रुक कर बाहर निकलती है, वहीं 'ख़' के उच्चारण में वायु बिना रुके हुए लगातार थोड़ी देर तक घर्षण के साथ निकलती रहती है। यहा कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं जो बोलचाल में अधिकांशतः प्रयोग में लाए जाते हैं .

अख़बार	आख़िर	कारख़ाना	ख़तरा
ख़त	ख़त्म	ख़फा	ख़बर
ख़राब	ख़रीफ़	ख़र्च	ख़ाकी
ख़ामोशी	ख़ारिज	ख़ास	ख़िदमत
ख़ूब	ख़ैर	ख़्याल	ख़्वाब
चीख़ना	तनख़्वाह	तारीख़	दस्तख़त
दाख़िल	नाख़ून	बुख़ार	मख़मल
मुख़ातिब	रुख़	शख़्स	सख़्त — आदि।

'ग' के स्थान पर 'ग़' . ये दोनों ध्वनियां कठ्य ध्वनियां हैं। 'ग' का उच्चारण 'ख' के समान तथा 'ग़' का उच्चारण 'ख़' के समान होता है। इसके बावजूद 'ग़' का उच्चारण किया जाना 'ख़' की अपेक्षा थोडा कठिन होता है। हिन्दी में उर्दू की जो-जो ध्वनिया ली गई है, उनमे 'ग़' ध्वनि की सख्या सबसे कम है। शायद इसका कारण यही रहा हो कि इसका उच्चारण अपेक्षाकृत कठिन होता है। वैसे भी 'ग़' ध्वनि का सही उच्चारण न कर पाना कानो को उतना ही खटकता है, जितना कि शेष चार ध्वनियों का उच्चारण न कर पाना।

अन्य ध्वनियो की तरह ही 'ग' और 'ग' के उच्चारण से भी शब्दों के अर्थ में अंतर आ जाता है, जैसे–

गोरी (गोरे रग वाली)	ग़ौरी (गोर का रहने वाला, जैसे-मोहम्मद ग़ौरी)
गौर (गोरा)	ग़ौर (विचार)
वाग (लगाम)	बाग़ (बगीचा)

यहा कुछ महत्वपूर्ण शब्द दिए जा रहे हैं, जिनका उच्चारण करते समय ध्यान रखा जाना चाहिए .

काग़ज	ग़ज़ब	गज़ल	ग़नीमत
ग़बन	ग़म	गरीब	ग़लत
ग़लीचा	ग़ायब	गुलाम	गुस्सा
गैर	दग़ा	दाग़	दरोग़ा
दिमाग	नगमा	पैग़म्बर	बग़ल
बगावत	बगैर	बालिग़	मशग़ूल
वगैरा	सुराग़		सौग़ात__आदि।

'ज' के स्थान पर 'ज़' : 'ज' ध्वनि वाले उर्दू के शब्दों की सख्या हिन्दी में पर्याप्त हैं। ये दोनों ध्वनियां मूर्धन्य ध्वनिया हैं। 'ज' के उच्चारण मे जीभ का अग्र भाग अचानक मसूढ़े को स्पर्श करके झटके के साथ पीछे हट जाता है, जबकि 'ज' ध्वनि के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग मसूढ़े को हल्का सा स्पर्श करता है और वायु धीरे-धीरे हल्का-सा घर्षण करती हुई बाहर निकलती है।

अन्य ध्वनियों की तरह ही 'ज' और 'ज' के प्रयोग के कारण शब्द के अर्थ मे परिवर्तन आ जाता है, जैसे·

जरा (वृद्धावस्था)	जरा (थोड़ा)
जग (युद्ध)	जंग (लोहे आदि मे मोरचा लगाना)
सजा (सजा हुआ)	सजा (दंड)
जीना (जीवित रहना)	जीना (सीढ़ी)

यहा 'ज़' ध्वनि से संबंधित कुछ प्रचलित शब्द दिए जा रहे हैं :–

अंदाज़	अर्ज़ी	आज़ादी	आवाज़
इंतजार	इंतज़ाम	इजाजत	इज्ज़त
औज़ार	क़मीज़	ख़जाना	चीज़

जबरन   जवान   ज़ब्त   जहाज

जमाना   जमीन   जरूर   ज़िद

जाहिर   जिदगी   ज़िक्र   तक़ाज़ा

जेवर   जुल्म   डिज़ाइन   प्याज

तमीज   तराजू   नमाज   रोज़

नाराज   फर्ज   मजदूर   वज़न

उर्दू के जिन शब्दों मे 'ज' ध्वनि दो बार आती है, उनमें भ्रमवश दोनों को 'ज' बोलने की गलतिया देखी गई हैं, ऐसे शब्दों के प्रति विशेष रूप से सतर्क रहने की जरूरत है, जैसे

ज़ंजीर   इजाजत   जज्बात   जहाज

जायज़   जालसाज़ी—आदि।

'फ' के स्थान पर 'फ़' 'फ और 'फ़' दोनों ओष्ठ्य ध्वनिया हैं। जैसा कि आरम्भ मे ही बताया गया था, 'फ' ध्वनि के उच्चारण में दोनो होंठ एक दूसरे से मिलते हैं और झटके के साथ अलग हो जाते हैं; जबकि 'फ़' ध्वनि के उच्चारण मे होंठ एक दूसरे को पूरी तरह स्पर्श नही करते, बल्कि कुछ इस तरह से हल्का-सा स्पर्श करते हैं, ताकि वायु घर्षण करती हुई निकले।

अन्य ध्वनियों की तरह 'फ' और 'फ़' ध्वनि के प्रयोग से शब्द के अर्थ मे अंतर आ जाता है। इस तरह के कुछ उदाहरण हैं –

दफा (कितनी बार)   दफ़ा (कानून की धारा)

फन (सांप की जीभ)   फ़न (कला)

फलक (तख्ता)   फ़लक (आसमान)

चूंकि 'फ' और 'फ़' के प्रयोग से शब्द के अर्थ मे अंतर आ जाता है। इसलिए लिखते समय इस बारे में सावधानी रखनी आवश्यक है। इस दृष्टि से यहा कुछ शब्द दिए जा रहे हैं

अफ़वाह   अफ़सर   आफ़त   कफ़न

काफ़ी   ख़फ़ा   सफ़ेद   गिरफ़्तार

तक्लीफ़   तारीफ़   तूफ़ान   दफ्तर

नफ़रत   फ़रमान   फ़ायदा   फ़िक्र

फ़िदा   फ़ौरन   बर्फ़   शरीफ़

कुछ ऐसे शब्द भी हैं, जिनमें गलती से 'फ' के स्थान पर 'फ' बोला जाता है। इस

बारे मे ध्यान रखना आवश्यक है। ऐसे कुछ शब्द है

गुफा	फुर्ती	सफल	फल-फूल

संधि के अज्ञान के कारण वर्तनी की अशुद्धियाँ :-

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अभ्यर्थी	अभ्यार्थी	अत्यधिक	अत्याधिक
अभ्यन्तर	अभ्यान्तर	हस्तक्षेप	हस्ताक्षेप
जात्यमिभान	जात्यामिभान	रीत्यनुसार	रीत्यानुसार
मत्यनुकूल	मत्यानुकूल	प्रीत्यर्थ	प्रीत्यार्थ
गत्यर्थ	गत्यार्थ	अध्यवसाय	अध्यावसाय
हेत्वर्थक	हेत्वार्थक	सर्जन	स्रजन
जागृति	जाग्रति	अत्युक्ति	अत्योक्ति
अनधिकार	अनाधिकार	तदुपरान्त	तदोपरान्त
पर्यन्त	परयन्त	सदुपदेश	सदोपदेश
आच्छादन	आछादन	उच्छवास	उछूवास
उज्ज्वल	उज्वल	महत्त्व	महत्व
महत्ता	महता	ससत्सदस्य	संसद्सदस्य
संसद	सन्सद	अध पतन	अधोपतन
संहार	सम्हार	अन्तःकालेजीय	अन्तकोलेजीय
तेजोमय	तेजमय	अन्तर्राष्ट्रीय	अन्तराष्ट्रिय
अतएव	अतेव	अधोलिखित	अध लिखित
अधोगति	अधागति	निस्सृत	निसृत
दुस्साध्य	दुसाध्य	नभोमण्डल	नभमण्डल
निःश्वास	निश्वास	पुरस्कार	पुरष्कार
नीरोग	निरोग	षड्दर्शन	सट्दर्शन
दुरवस्था	दुरावस्था	मनःकामना	मनोकामना
उद्दीप्त	उदीप्त	भास्कर	भाष्कर
मनोयोग	मनःयोग	वागाडम्बर	वाकाडम्बर
सन्यासी	सन्यासी	पीताम्बर	पीतम्बर

अधस्तल	अधोतल	अध्ययन	अध्यन
उपर्युक्त	उपरोक्त	किंवदन्ती	किबदन्ती
जगन्नाथ	जगरनाथ	इत्यादि	इतियादि
ज्योतिरीश्वर	ज्योतीश्वर	तिरस्कार	तिरिस्कार
हास्यास्पद	हास्यस्पद	दुष्कर	दुस्कर
मनोहर	मनहर	यशोलाभ	यशलाभ
विच्छेद	विछेद	सम्मान	सन्मान
देवेन्द्र	देविन्द्र	देवोत्थान	देवुत्थान
प्रौढ	प्रोढ	उत्पात	उतपात
जगद्गुरु	जगतगुरू	भगवद् भक्ति	भगवत भक्ति
सद्गुण	सतगुण	सम्मुख	सन्मुख
महार	सम्हार	अन्त कथा	अन्तकथा
निरपेक्ष	निर्पेक्ष	स्वयवर	स्वयम्बर
नीरस	निरस	निष्पक्ष	निश्पक्ष
सवाद	सम्वाद		

समास के अज्ञान से उत्पन्न वर्तनी की अशुद्धियाँ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अमचूर	आमचूर	इकट्ठा	एकठा
आजकल	आजकाल	उन्नतिशील	उन्नतशील
खेतिहर	खेतीहर	घुड़साल	घोड़ासाल
कृतघ्न	कृतघ्नी	यथाविधि	यथाविध
जिठानी	जेठानी	दुबारा	दोबारा
निरपराध	निरपराधी	निर्दोष	निर्दोषी
प्रहर	पहर	योगिराज	योगीराज
निर्लज्ज	निर्लज्जा	हथकड़ी	हाथकडी
मन्त्रिमण्डल	मन्त्रीमण्डल	विद्यार्थिगण	विद्यार्थीगण
प्राणिशास्त्र	प्राणीशास्त्र	कनकटा	कानकटा
मिठबोला	मीठबोला	घुडदौड़	घोड़दौड

कलजीम	कालीजीमा	भ्रष्टप्रतिज्ञ	भ्रष्टप्रतिज्ञा
भूचाल	भोचाल	स्थायित्व	स्थायीत्व
हथगोला	हाथगोला	बटमार	बाटमार
दायित्व	दायीत्व	यथाशक्ति	यथाशक्त
अहोरात्र	अहोरात्रि	अधिकारिवर्ग	अधिकारीवर्ग
निर्दय	निर्दयी	निर्गुण	निर्गुणी
सत्वगुण	सतोगुण	सशक	सशंकित
स्वामिभक्त	स्वामीभक्त	मन्त्रिगण	मन्त्रीगण
अष्टावक्र	अष्टवक्र	इकतारा	एकतारा
राजपथ	राजापथ	सानन्द	सानन्दित
सकुशल	सकुशलपूर्वक	महाराज	महाराजा
मातृहीन	माताहीन	दुगुना	दोगुना
सौभाग्यशाली	सौभाग्यशील	दुपहर	दोपहर
दृढ़व्रत	दृढवती	तिराहा	तीनराहा
महत्ता	महानता	मूसलाधर	मूसलधार
निस्वार्थ	निस्वार्थी	मद्यपायी	मद्यपानी
अहिन्दी भाषी	हिन्दी अभाषी		

शब्द स्वरूप के अज्ञान से होने वाली वर्तनी की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आगामी	अगामी	अधीन	आधीन
आजमाइश	अजमाइश	आशीर्वाद	अशीर्वाद
आवश्यकता	अवश्यकता	आहार	अहार
चाहिए	चहिए	बादाम	बदाम
नादान	नदान	नाराज	नराज
भागीरथी	भगीरथी	मालूम	मलूम
बरात	बारात	लगान	लागान
हस्तक्षेप	हस्ताक्षेप	अतिथि	अतिथी
अभिनेता	अभीनेता	कोटि	कोटी

कालिदास	कालीदास	क्योंकि	क्योंकी
क्षत्रिय	क्षत्रीय	क्षैत्रीय	क्षैत्रिय
नीति	नीती	परिचय	परीचय
बलिदान	बलीदान	मति	मती
पुष्टि	पुष्टी	वाल्मीकि	वाल्मीकी
पूर्ति	पूर्ती	शनि	शनी
पाणिनि	पाणिनी	रवीन्द्र	रविन्द्र
कौषीनकि	कौषीतकी	आध्यात्मिक	आध्यात्मक
आजीत्रिका	आजीवका	कुमुदिनी	कुमुदनी
जीभ	जीब	खीझना	खीजना
धोखा	धोका	झूठ	झूट
धधा	धंदा	खम्भा	खम्बा
चाभी	चाबी	धुरधर	धुरदर
द्वन्द्व	द्वन्द	तत्वावधान	तत्वाधान
स्वावलम्बन	स्वालम्बन	अनुगृहीत	अनुग्रहीत
आर्द्र	आर्द	उपलक्ष्य	उपलक्ष
कलश	कलस	कैलास पर्वत	कैलाश पर्वत
कार्यक्रम	कार्यकर्म	ककण	ककन
कौतूहल या कुतूहल	कोतूहल	छत्र	क्षत्र
तिलांजलि	तिलाजली	दधीचि	दधिची
अन्त्याक्षरी	अन्ताक्षरी	चहारदीवारी	चारदीवारी
तत्त्व	तत्व	यथेष्ट	यथेष्ठ
प्रज्वलित	प्रज्ज्वलित	श्मशान	शमसान
शुश्रूषा	सुश्रूषा	सिक्त	सिंचित
सर्जन	सृजन	सौहार्द	सौहार्द्र
स्रोत	स्त्रोत	शूर्पणखा	सूपर्णखा
शृगार	शृंगार	शुद्धीकरण	शुद्धिकरण
सरोवर	सरवर	शाप	श्राप

इष्ट	इष्ठ	मुट्ठी	मुट्ठी
षष्टि	षष्ठि	विशिष्ट	विशिष्ठ
इकट्ठा	इकट्ठा		

(i) 'इकट्ठा' और मुट्ठी' शब्द इसलिए गलत हैं, क्योकि 'ठ' महाप्राण व्यजन है, और जैसा कि पहले बताया जा चुका है, महाप्राण व्यजन कभी भी द्वित्व रूप मे नहीं आते। बल्कि उसके द्वित्व के रूप में उस महाप्राण व्यंजन के ठीक पहले वाला अल्पप्राण व्यंजन अर्द्ध रूप में आता है। इसलिए 'ठ' के द्वित्व के रूप में 'ट्' आएगा।

(ii) 'षष्टि' और 'षष्ठि' दोनों शब्दों के अलग-अलग अर्थ होते हैं। 'षष्टि' का अर्थ होता है, 'साठ' नथा 'षष्ठी' का अर्थ होता है, 'छठी'।

'ब' के स्थान पर 'व' · 'ब' और 'व' ध्वनि के सबध मे दोनों प्रकार की गलतिया मिलती हैं, अर्थात् 'ब' के स्थान पर 'व' की गलतिया तथा ठीक इसके विपरीत 'व' के स्थान पर 'ब' की गलतिया। लेकिन ध्यान देने पर यह पाया गया है कि 'ब' के स्थान पर 'व' की गलतियां उतनी नही मिलती, जितनी कि 'व' के स्थान पर 'ब' बोले जाने की गलतियां मिलती हैं। इसका कारण भी स्पष्ट है। 'व' ध्वनि मूलतः तत्सम् ध्वनि है अर्थात् इस ध्वनि का प्रयोग मुख्यत तत्सम् शब्दों के साथ किया जाता है। जबकि व्यवहार मे शब्दों के तद्भव रूप अधिक प्रचलित हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों में 'व' ध्वनि का अभाव है। इसके कारण हिन्दी भाषी तक इस भेद के प्रति पूरी तरह सतर्क नही रह पाते। तीसरे यह कि 'ब' की अपेक्षा 'व' का उच्चारण अतिरिक्त सतर्कता की माग करता है। इसलिए बोलने की सुविधा तथा जल्दी बोलने की प्रवृत्ति के कारण 'व' का 'ब' हो जाता है। इस प्रकार गलत बोलने का प्रभाव गलत लिखने पर होता है। एक अन्य कारण यह भी है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र 'रामचरितमानस' जैसे ग्रथों का वाचन करने तथा उनके दोहो को याद रखने का अभ्यस्त भी है। उस समय के साहित्य में 'व' के स्थान पर 'ब' का प्रयोग होता था।

हालाकि कान 'व' के स्थान पर 'ब' सुनने के अभ्यस्त हो गए हैं, किन्तु सही हिन्दी की दृष्टि से इनके भेद के प्रति सतर्क रहना आवश्यक है। सुविधा की दृष्टि से यहां कुछ ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है, जिनमे इस तरह की गलतिया पाए जाने की सबसे अधिक प्रवृत्ति देखी गई है

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
नवाब	नबाब	वनस्पति	बनस्पति
वातावरण	बाताबरण	विकट	बिकट
विख्यात	बिख्यात	विधि	बिधि
विमल	बिमल	वीरेंद्र	बीरेंद्र

व्याकरण	ब्याकरण	व्यय	ब्यय
व्यवस्था	ब्यवस्था	व्यापार	ब्यापार
व्रत	ब्रत	बीवी	बीबी
विद्वान	बिद्वान	व्यथा	ब्यथा— आदि।

(i) जैसा कि बताया गया, हिन्दी के मध्यकालीन साहित्य में 'व' के स्थान पर 'ब' का ही प्रयोग मिलता है; जैसे – वन = बन, व्रज = ब्रज।

यहा यह स्पष्ट करना उपयुक्त होगा कि ये दोनों रूप सही है और इनमे किसी प्रकार का अर्थ भेद भी नही है। इन दोनों शब्दों को इस रूप में सही माना जा सकता है कि 'बन' और 'ब्रज' तद्भव है, जबकि 'वन' तथा 'व्रज' तत्सम् शब्द हैं।

(ii) 'ब' और 'व' की गलती की प्रवृत्ति वहा अधिकाशत देखी गई है, जहा 'व' ध्वनि एक ही शब्द मे दो बार आई है। ऐसे शब्दो में किसी एक 'व' को 'ब' करने की स्थितिया अधिक पाई जाती है। इसलिए ऐसे शब्दों के प्रति विशेष सतर्कता रखने पर अनेक गलतियो से बचा जा सकता है, जैसे– बीबी (बीवी)।

(iii) जिस प्रकार 'व' के स्थान पर 'ब' की गलतिया होती है, ठीक उसी प्रकार 'ब' के स्थान पर 'व' का प्रयोग किए जाने की भी गलतिया होती है, हालाकि ऐसी गलतियां अपेक्षाकृत कम होती है। इस तरह के कुछ शब्द हैं–

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
बल्ब	बल्व	कामयाबी	कामयावी
दबदबा	दबदवा	धोबी	धोवी— आदि।

'य' सबधी गलतियां जिस तरह की गलतिया 'ब' और 'व' के सबध मे होती है, कुछ उसी तरह की गलतिया 'य' के बारे मे देखी गई है। वस्तुत 'य' की ध्वनि उच्चारण की दृष्टि से 'अ' के काफी करीब होती है। जब 'य' ध्वनि शब्द के आरम्भ मे आती है, तब उसमे गलती होने की सम्भावना अत्यन्त न्यून होती है। शब्द के मध्य मे आने पर 'य' ध्वनि की गलतिया अधिकाशत देखी गई है। कही-कही उच्चारण-दोष के कारण अनावश्यक रूप से 'य' लिखा जाता है, तो कही-कही आवश्यकता होने पर भी 'य' नही लिखा जाता। ऐसी गलतियो के प्रति सतर्क रहना शुद्ध एव अच्छी हिन्दी के लिए उपयुक्त होगा।

'य' न लिखे स्वाभाविक रूप से किसी भी भाषा मे एक मूल शब्द होता है, जिससे अनेक शब्द बनते हैं। ऐसा हिन्दी मे भी है। 'य' सबधी पाई जाने वाली

गलतियों का मुख्य कारण इन शब्दो के मादृश्य का आभास ही है। इस बात को निम्नलिखित गलत एव सही शब्दो को देखने के बाद जानना सरल होगा

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
केन्द्रीयकरण	केन्द्रीकरण	मूलत	मूलतय:
गृहस्थ	गृहस्थ्य	अतर्धान	अंतर्ध्यान
सदृश	सदृश्य	कृतकृत्य	कृत्यकृत्य_आदि।

ऊपर जितने भी गलत शब्द दिए गए हैं, उनमें अनावश्यक ही 'य' का प्रयोग किया गया है। ऐसी सभी गलतियों का कारण शब्दों के सादृश्य का आभास ही है। जैसे– केन्द्रीयकरण में 'य' की गलती इसलिए है, क्योंकि 'केन्द्रीय' शब्द सही है। अत· उसके साथ 'करण' जोड़ दिया गया है। इसी प्रकार 'गृहस्थ' का 'य' स्वास्थ्य' के सादृश्य के कारण, 'अतर्ध्यान' का 'य' 'ध्यान' के सादृश्य के कारण तथा 'सदृश्य' का 'य" दृश्य' शब्द की समरूपता के कारण गलत हुआ है। थोड़ा-सा अतिरिक्त ध्यान रखकर ऐसी गलतियो से बचा जा सकता है।

(ii) **'य' लिखे** : हिन्दी में 'य' शब्द अधिकांशतः तत्सम् शब्दों में आता है। चूकि यह ध्वनि 'अ' के काफी निकट होती है, इसलिए बोलचाल की भाषा में अक्सर 'य' का लोप होते देखा गया है। उच्चारण में 'य' ध्वनि 'अ' तथा 'आ' के साथ मिलकर गायब हो जाती है। जब ऐसा होता है, तब उस शब्द का लालित्य समाप्त हो जाता है। इमलिए शुद्ध एव लालित्यपूर्ण हिन्दी बोलने और लिखने की दृष्टि से इम 'य' को बनाए रखना जरूरी है। केवल इतना ही नही, बल्कि कही-कहीं तो 'य' के प्रयोग करने और न करने से अर्थ में भी परिवर्तन आ जाता है। इन दोनों प्रवृत्तियों से जुड़े शव्द यहा टिए जा रहे हैं·

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
मान्यवर	मानवर	कवयित्री	कवित्री
स्वास्थ्य	स्वास्थ	अत्याक्षरी	अताक्षरी
सामर्थ्य	सामर्थ		

ऊपर कुछ उन शब्दो का उल्लेख किया गया है, जिनमें यद्यपि 'य' के प्रयोग किए जाने, अथवा न किए जाने से शब्द के अर्थ मे कोई अतर नही आता, फिर भी 'य' लिखा जाना चाहिए। अब नीचे कुछ ऐसे शब्द तथा उनके अर्थ भी दिए जा रहे है, जिनमे 'य' की उपस्थिति-अनुपस्थिति शब्द के अर्थ परिवर्तित कर देती है। ऐसे कुछ शब्द हैं . –

अर्ध (भेंट) अर्ध्य (जलदान)

ओष्ठ (ओंठ) ओष्ठ्य (ओंठ-संबधी)

मान (सम्मान)	मान्य (मानना, स्वीकार करना)

लक्ष (एक लाख)	लक्ष्य (उद्देश्य)

ड, ड़, ढ़ सम्बन्धी गलतियाँ . 'ट' वर्ग की इन तीन ध्वनियो के उच्चारण और लेखन-सम्बधी गलतिया भी अक्सर देखने में आई है। इसमें सबसे अधिक गलतियां 'ड' और 'ड' को लेकर होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि देखने में इन दोनों ध्वनियों में थोडा सा अनर है। 'ड' ध्वनि के नीचे बिन्दी नहीं लगती, जबकि 'ड़' ध्वनि के नीचे बिंदी लगती है। इन दोनों ध्वनियों के उच्चारण मे मुख्य भेद यह है कि 'ड' ध्वनि का उच्चारण बिल्कुल उसी तरह होता है, जिस प्रकार ट, ठ और ढ ध्वनियो का उच्चारण होता है। जबकि इसके विपरीत 'ड' ध्वनि का उच्चारण थोडे हल्के रूप में होता है। इस वर्ग का शेष ध्वनियो के उच्चारण में जीभ का अग्र-भाग तालू को पूरी तरह स्पर्श करके पीछे आ जाता है। जबकि 'ड' ध्वनि के उच्चारण में जीभ का अग्र-भाग तालु से हल्की-सी रगड खाकर झटके के साथ नीचे की ओर जाता है। इस रगड़ के कारण इस ध्वनि मे हल्की-सी छटपटाहट पैदा होती है। हालांकि 'ड' और 'ड़' के लेखन में केवल बिंदु का ही फर्क है, लेकिन बोलने मे दोनों ध्वनियों के उच्चारण में पर्याप्त भेद स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है कि इन दोनो व्यजनों के प्रयोग पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए।

(i) 'ड' के स्थान पर 'ड़'

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
रोड	रोड़	षड्यत्र	षडयंत्र
सोडा	सोडा		

(ii) 'ड़' के स्थान पर 'ड'

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
पेड़	पेड	लडका	लडका
कन्नड	कन्नड	घोड़ा	घोडा

(iii) 'ढ' के स्थान 'ढ़'

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
पढना	पढना	बढिया	बढिया
बूढा	बूढा	सीढिया	सीढिया

'न' के स्थान पर 'ण' · 'न' और 'ण' दोनो अनुनासिक व्यंजन हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, जब इन दोनों ध्वनियो का अर्द्ध व्यंजन के रूप मे प्रयोग किया जाता है, तब टंकण की सुविधा की दृष्टि से इनको अर्द्ध रूप में न लिखकर पहले वाले व्यजन के ऊपर एक बिंदी लगा दी जाती है। इस प्रयोग के कारण कुछ लोगो के मन मे यह गलत

धारणा बन गई है कि यदि ये व्यजन पूर्ण रूप मे प्रयोग हो, तो भी उनके स्थान पर एक-दूसरे को प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

20वी शताब्दी के प्रारम्भ मे पहले, जब तक खडी 'बोली का स्वरूप निर्धारित नही हुआ था, निश्चित रूप मे यह प्रवृत्ति हिंदी-साहित्य मे प्रचुरता के साथ देखने को मिलती है। अवधी और ब्रजभाषा मे तो आज भी यह प्रवृत्ति उसी प्रकार विद्यमान है। किन्तु वर्तमान हिन्दी मे यह प्रवृत्ति समाप्त हो गई है और 'ण' का प्रयोग काफी मात्रा में किया जाने लगा है। यहां कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे है, जिनमे इस प्रकार के भ्रम की सबसे अधिक सम्भावना होती है.

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
गुण	गुन	कल्याण	कल्यान
कारण	कारन	गणेश	गनेश
चरण	चरन	कृष्ण	कृष्न
पुण्य	पुन्य	प्रणाम	प्रनाम
प्राण	प्रान	रामायण	रामायन

ऊपर के शब्दो को पढते समय आपने अनुभव किया होगा कि 'न' और 'ण' का प्रयोग केवल लेखन मे ही नही, बल्कि उच्चारण में भी भेद कर देता है। हालाकि 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग करने से शब्द के अर्थ मे कोई अनर नही आता, लेकिन उसका उच्चारण लोक भाषा के करीब हो जाता है। साहित्यिक और सही हिंदी की दृष्टि से 'ण' का प्रयोग किया जाना वांछनीय है।

'ये' के स्थान पर 'ए' : हिन्दी मे कई शब्द ऐसे हैं, जिनका बहुवचन बनाते समय 'ए' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, जैसे-कला=कलाए। लिखने मे इसे 'कलाये' के रूप मे भी देखा गया है। यहा इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि वस्तुत. ए, एं, ओं, प्रत्यय है, न कि ये, ये, यो। जब बहुवचन के रूप मे इन प्रत्ययो का प्रयोग किया जाता है, तब ऐसे शब्दो में 'य' व्यजन मे मात्रा लगाने से बचना चाहिए। ऐसे कुछ शब्द है

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
बहुएं	बहुयें	समस्याएं	समस्याये
वस्तुएं	वस्तुयें	हत्याए	हत्याये
गए	गये	हुए	हुये—आदि।

'यी' तथा 'ई' के तत्सम्-तद्भव रूप : हिन्दी में बहुत से ऐसे शब्द हैं, जिनमे 'यी' के स्थान 'ई' की मात्रा लगती है। ऐसे शब्दो को दो रूपो मे लिखा जाता है, जैसे–'स्थायी' तथा 'स्थाई। आजकल इस तरह के शब्दो के दोनो रूप प्रचलित है। कुछ शब्दों का प्रचलन तो बहुत अधिक हो गया है, लेकिन कुछ शब्दों का प्रचलन उतना

अधिक न होने के कारण देखने मे अटपटा-मा लगता है, जैसे–'उत्तरदायी' को 'उत्तरदाई' लिखना। कुछ भाषाविदो का मानना है कि यदि 'ई' स्वर, व्यजन के साथ सयुक्त होकर आता है, तो लेखन मे उस स्वर का प्रयोग स्वतंत्र रूप से न करके व्यजन की मात्रा के रूप मे करना चाहिए अर्थात् 'स्थाई' न लिखकर 'स्थायी' लिखा जाना चाहिए। जबकि कुछ भाषाविद् यह मानते हैं कि चूकि लेखन में इन स्वरो का प्रयोग स्वतत्र रूप से किया ही जाता है, इसलिए यदि बोलने मे ऐसी ध्वनि आ रही है, जो स्वर के नजदीक है, तो उसे स्वर के रूप में ही स्वतंत्र रूप से लिखा जाना चाहिए। केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण करते हुए कहा है कि जहा 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो, वहा उसे स्वर में बदलने की आवश्यकता नही है, जैसे –स्थायी, दायित्व आदि। कुछ अन्य शब्द हैं –

शुद्ध	**अशुद्ध**
अव्ययीभाव	अव्यईभाव
अनुयायी	अनुयाई
भाषायी	भाषाई___आदि।

अभी तक ऐसे शब्दो के लेखन मे जो बात सामान्य रूप से देखने में आई है, वह यह है कि 'यी' के स्थान पर 'ई' लिखने का प्रचलन शब्द के अत मे तो है, किन्तु मध्य मे उतना नही है। इसे इस रूप में समझा जा सकता है 'राजनयिक' तो लिखा जाता है, लेकिन 'राजनइक' नही लिखा जाता है।

'यी' के स्थान पर 'ई' . प्रचलन की दृष्टि से हिन्दी में ऐसे बहुत से शब्द है, जिनमे शब्द के अत मे 'यी' न लिखकर 'ई' लिखा जाता है। हिन्दी के जानकार जब इन्हे गलत रूप मे देखते है, तो उन्हे ये रूप थोडे- से अटपटे दिखाई पडते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि अभी ऐसे शब्दों का प्रचलन अधिक नही हुआ है। हिन्दी का मानक रूप निर्धारित किए जाने के लिए आवश्यक है कि इस संबध मे विशेष ध्यान दिया जाए, ताकि उनका एक जैसा प्रचलित रूप स्थापित हो सके। 'यी' के स्थान पर 'ई' लिखे जाने वाले कुछ शब्द इस प्रकार है –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
दवाई	दवायी	पुरवाई	पुरवायी
कसाई	कसायी	सच्चाई	सच्चायी
सुनवाई	सुनवायी___आदि।		

'य' के स्थान पर 'इ' · हिन्दी मे अग्रेजी और उर्दू से आए हुए अनेक ऐसे शब्द है, जिनके उच्चारण मे 'य' और 'इ' को लेकर भ्रम की स्थिति बनी रहती है। लेकिन अब प्रयोग के कारण धीरे-धीरे भ्रम की यह स्थिति कम होती जा रही है और उनके लेखन का एक रूप बनता जा रहा है। यहा कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं, जहां 'य' के स्थान पर 'इ' लिखा जाना चाहिए .

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
साइस	सायस	साइकिल	सायकिल
फाइनल	फायनल	आइंदा	आयदा
आईना	आयना	लाइसेंस	लायसेंस
राइटर	रायटर ___आदि।		

श, ष तथा स संबंधी जानकारी

हिन्दी मे 'स' के तीन रूप प्रचलित हैं– श, ष तथा स। लेखन में 'ष' का प्रचलन धीरे-धीरे कम होता जा रहा है, और उसका स्थान 'श' लेता जा रहा है।

जहा तक उच्चारण का प्रश्न है, इन तीनों के लिए 'स' बोलने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। इसका कारण यह है कि 'श' की अपेक्षा 'स' का उच्चारण करना अधिक सरल है। 'श' के उच्चारण के लिए ऐसी अतिरिक्त सावधानी रखनी पडती है कि मुख से निकलने वाली वायु हल्की-सी गूज करती हुई निकले, जबकि 'स' के उच्चारण के लिए किसी भी तरह की अतिरिक्त सतर्कता की आवश्यकता नहीं होती। इसमे मुख से वायु अपने स्वाभाविक रूप में बाहर आ जाती है। दूसरा कारण यह है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों की अन्य बोलियों मे 'स' के ये तीनों रूप नही मिलते। बल्कि वहा केवल 'स' ही प्रचलित है। इसलिए ऐसे लोगों के लिए 'स' और 'श' का अलग-अलग उच्चारण कर पाना कठिन हो जाता है।

जहा तक 'ष' के उच्चारण का प्रश्न है, इसका उच्चारण 'श' ही किया जाता है। इसलिए सामान्य रूप से यह बताना कठिन है कि किस स्थान पर 'श' लिखा जाएगा तथा किस स्थान पर 'ष'। फिर भी परम्परागत रूप से बहुत से ऐसे शब्द आ गए हैं जिनके अधार पर इसके बारे में कुछ बताया जा सकता है।

यह एक सुखद स्थिति है कि 'श' संबंधी गलतिया जितनी अधिक बोलने में पाई जाती हैं, उतनी लेखन मे नहीं। बल्कि यह कहना अधिक सही होगा कि उच्चारण की गलतियां करने वाले बहुत अधिक संख्या मे है। रोचक बात यह है कि ऐसे लोगों की संख्या अधिक है, जो उच्चारण मे तो गलतिया करते हैं, लेकिन लेखन मे गलतिया नहीं करते।

ऐसी गलतियों से बचने का एक तरीका यह है कि 'स' और 'श' के उच्चारण का अभ्यास बचपन से ही कराया जाए। दूसरा यह कि यदि थोड़ी सी सावधानी रखी जाए तो ऐसी गलतियों से बचा जा मकता है। ऐसे शब्दों के साथ तो यह सावधानी विशेष रूप से रखी जानी चाहिए, जहां एक ही शब्द में 'स' और 'श' दोनों का प्रयोग हुआ हो; जैसे- 'विश्वास'। जहां ऐसी स्थिति होती है, वहा उच्चारणकर्ता सामान्य रूप से या तो 'विस्वास' बोलता है या फिर अतिरिक्त सतर्कता के कारण 'विश्वास' बोल जाता है।

हिन्दी भाषी क्षेत्रो के लोग 'श' को 'स' के रूप में बोलने और सुनने के अभ्यस्त से हो गए हैं। लेकिन जिन्हें संस्कृत का ज्ञान है तथा जिनमे भाषा के प्रति जरा भी सतर्कता है, उन्हें 'श' के स्थान पर 'स' सुनना बहुत अटपटा लगता है। हालाकि कुछ शब्दो को छोड़कर अधिकाश शब्दो का उच्चारण यदि 'स' के स्थान पर 'श' अथवा 'श' के स्थान पर 'स' किया जाए, तो उनके अर्थ मे कोई अतर नही आता, फिर भी भाषा की शुद्धता और उसके सस्कार को बनाए रखने के लिए 'स' और 'श' के उच्चारण भेद तथा लेखन भेद को समझना और प्रयोग में लाना अत्यंत आवश्यक है।

'श' के स्थान पर 'ष' : जैसा कि बताया गया, 'श' और 'ष' ध्वनि का उच्चारण करीव-करीब एक जैसा होता है। इसलिए ऐसे शब्दों को लिखने में गलतियां होने की सम्भावना सबसे अधिक होती है। जो व्यक्ति शुरू से हिन्दी भाषा के सम्पर्क में रहे हैं, उन्हे ऐसे शब्दों की जानकारी स्वाभाविक रूप से हो गई है। किंतु नए लोगो के लिए इसे समझ पाना थोडा कठिन है। लेकिन इतना अवश्य है कि यदि एक-दो सामान्य से नियमों को ध्यान मे रखा जाए, और थोडी-सी सावधानी बरती जाए, तो इसे आसानी से समझा जा सकता है, यहां कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं, जिनमे 'श' के स्थान पर 'ष' का प्रयोग किया जाना चाहिए।

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
परिभाश	परिभाषा	विशेश	विशेष
मनुश्य	मनुष्य	निश्काम	निष्काम
संतोश	संतोष	भश्ट	भ्रष्ट
दुश्कर्म	दुष्कर्म	पुश्प	पुष्प
वहिश्कार	बहिष्कार	राश्ट्रीय	राष्ट्रीय
शिश्टाचार	शिष्टाचार	उत्कर्श	उत्कर्ष
हर्श	हर्ष		
विशाद	विषाद___आदि।		

(i) अक्सर देखा गया है कि 'ट' के पहले जब 'श' ध्वनि अर्द्धरूप मे आती है, तो वह अर्द्ध 'ष' होती है; जैसे–शिष्ट, दुष्ट, पुष्ट, तुष्ट, क्लिष्ट आदि।

(ii) यह भी देखा गया है कि जब 'क' वर्ग और 'प' वर्ग की ध्वनियो से पहले 'निष' तथा 'दुष' उपसर्ग मिलते है, तो उसमे अर्द्ध 'ष' आता है, न कि अर्द्ध 'श', जैसे– निष्पाप, दुष्कर्म आदि।

'ष' के स्थान पर 'श' · हिन्दी मे 'ष' लिखने की प्रवृत्ति उतनी नही है, जितनी कि 'श' लिखने की। फिर भी यहा कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे है, जिनमें 'श' के स्थान पर 'ष' लिखने की गलतियां देखी गई हैं।, ऐसे कुछ शब्द है :

अशुद्ध	शुद्ध
आदर्ष	आदर्श
दृष्य	दृश्य
वेषभूषा	वेशभूषा

ठीक इसी प्रकार 'ष' के स्थान पर 'स' लिखने की गलतियां भी पाई जाती है जैसे - दुष्कर = दुस्कर, सुषुप्ति = सुसुप्ति।

हिन्दी मे जो शब्द उर्दू और अंग्रेजी से आए हुए हैं, उनमें ऐसी गलतिया अधिक देखी गई है। इस प्रकार की गलतिया हैं –

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कष्टम	कस्टम	पोष्टमास्टर	पोस्टमास्टर
रजिष्टर	रजिस्टर_आदि।		

'स' के स्थान पर 'श' : जैसा कि पहले बताया जा चुका है, हिन्दी भाषी क्षेत्रें मे 'श' के स्थान पर 'स' बोलने की गलतिया अधिक मात्रा में पाई जाती हैं। हालाकि व्यावहारिक रूप में लिखने में उतनी गलतिया नहीं पाई जाती, लेकिन इस सम्भावना मे इनकार भी नही किया जा सकना है कि भविष्य में लेखन में भी ऐसी गलतिया वडी मख्या में होने लगे। इसलिए ऐसी गलतियो के बारे मे सतर्क रहना अत्यंत आवश्यक है। यहा कुछ ऐमे शब्द दिए जा रहे है, जिनमे इस तरह की गलतियॉ देखी गई है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कुसलता	कुशलता	विवस	विवश
माबाश	शाबाम	ससोधित	संशेधित
प्रससा	प्रशसा	विस्वास	विश्वास
टेस	देश	सूर्पणखा	शूर्पणखा_आदि।

(i) 'सोचनीय' का 'सोच' शब्द 'सोचना' से साम्य रखने के कारण गलत हो गया है। सही शब्द है 'शोचनीय'।

(ii) 'शूर्पणखा' शब्द 'रामचरितमानस' में 'सूर्पणखा' रूप में मिलता है, जो 'सूर्प' से साम्य रखता है लेकिन हिदी का शुद्ध शब्द है– 'शूर्पणखा'।

(iii) जब एक ही शब्द मे 'स' ध्वनि एक से अधिक बार आ जाती है तो उसमें एक ध्वनि के गलत होने की प्रवृत्ति सबसे अधिक देखी गई हैं, जैसे– प्रशंसा, विश्वास, शाबाश, सशोधित आदि।

(iv) कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिनमें 'श' के स्थान पर 'स' लिखने से वर्तनी–दोष तो होता ही है, साथ ही उसका अर्थ भी बदल जाता है, जैसे–साला = पत्नी का भाई, शाला = स्कूल।

'श्' (श) के स्थान पर 'स्' (स) : व्यवहार में देखा गया है कि जव लोग अपनी श् (श) और स् (स) सवंधी गलतियों को सुधारने का प्रयास करते है, तो वे इस प्रयास मे जहा पहले को सुधार लेते है, वही दूसरे को गलत कर देते हैं। जैसे कि पहले बताया जा चुका है, 'श' के स्थान पर 'स' बोलने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। ऐसी स्थिति मे बोलने वाले जव अपने को सुधारने की प्रक्रिया से गुजरते हैं, तो इस प्रक्रिया मे वे 'स' को भी 'श' बोलने लगते हैं। इस प्रकार एक को सुधारने की स्थिति में दूसरे को गलत कर बैठते हैं। केवल इतना ही नही, बल्कि मनोवैज्ञानिक कारण से भी यह देखा गया है कि कुछ लोगो मे धारणा है कि 'स' की वजाय 'श' का बोला जाना अधिक सम्मानजनक तथा विद्वत्ता का द्योनक है। शायद उन्हें ऐसा इसलिए लगता है, क्योंकि 'श' ध्वनि अधिकांशत· तत्सम् का बोध कराती है, जबकि 'स' ध्वनि तद्‌भव का। ऐसी प्रवृत्ति के कारण 'स' के स्थान पर 'श' सम्बन्धी गलतिया देखने में आई हैं। इस बारे में सतर्क रहना अत्यंत आवश्यक है। यहा कुछ ऐसे शब्दो की सूची दी जा रही है·

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अमावस्या	अमावश्या	तपस्या	तपश्या
प्रसाद	प्रशाद	पुरस्कार	पुरश्कार
विकास	विकाश	समस्या	समश्या
नमस्कार	नमश्कार	सारांश	शाराश
कठिनाई	कठनाई	कामिनी	कामनी
गृहिणी	गृहणी	नायिका	नायक
जीवित	जीवत	रचयिता	रचियता
कवयित्री	कवियत्री	विरहिणी	विरहणी
प्रतिनिधि	प्रतिनिधी	शिविर	शिवर
युधिष्ठिर	युधिष्ठर	माचिस	माचस
उल्लिखित	उल्लेखित	सरोजिनी	सरोजनी
मालिन	मालन	फिजूल	फजूल
बीमार	बिमार	वापस	वापिस
अहल्या	अहिल्या	शिखर	शिखिर
द्वारका	द्वारिका		

'ट, ठ' की कतिपय अशुद्धियाँ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**

कनिष्ठ	कनिष्ट	यथेष्ट	यथेष्ठ
वरिष्ठ	वरिष्ट	श्लिष्ट	श्लिष्ठ
श्रेष्ठ	श्रेष्ट	सन्तुष्ट	सन्तुष्ठ
निष्ठा	निष्टा	अभीष्ट	अभीष्ठ
पृष्ठ	पृष्ट	कष्ट	कष्ठ
अनुष्ठान	अनुष्टान	चेष्टा	चेष्ठा
गोष्ठी	गोष्टी	तुष्टि	तुष्ठि
ज्येष्ठ	ज्येष्ट	नष्ट	नष्ठ
प्रतिष्ठा	प्रतिष्टा	परिशिष्ट	परिशिष्ठ
बलिष्ठ	बलिष्ट	पुष्टि	पुष्ठि
काष्ठ	काष्ट	भ्रष्ट	भ्रष्ठ
कुष्ठ	कुष्ट	मिष्ठान	मिठाम्रन
गविष्ठ	गविष्ट	रुष्ट	रुष्ठ
हष्टपुष्ट	हष्टपुष्ठ	सृष्टि	सृष्ठि
स्पष्ट	स्पष्ठ		

कुछ शब्द ऐसे है जिनमे लेखन मे 'ष्ट' भी आता है और 'ष्ठ' भी किन्तु अर्थ भेद हे। जाता है। यथा – पष्टी (साठ) षष्ठी (छठी), देवी षष्ट (साठ की सख्या) षष्ठ (छठा)।

कतिपय अन्य अशुद्धिया

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
एकता	ऐकता	बालाए	बालाऐ
सामग्री	सामिग्री	पत्नी	पत्नि
महाबली	महाबलि	उऋण	उरिण
दृश्य	द्रस्य	द्रष्टा	दृष्टा
स्रष्टा	सृष्टा	पृथक्	प्रथक
प्रथम	पृथम	पैतृक	पैत्रिक
मातृभूमि	मात्रभूमि	ब्रिटिश	वृटिश
शृगार	श्रृंगार	हृदय	ह्रदय
भ्रष्ट	भृष्ट	दृढ़	द्रढ़

अमृत	अम्रत	गृहस्थ	ग्रहस्थ
दृष्टि	द्रष्टि	नयन	नैन
वेश्या	वैश्या	मिठाई	मिठायी
सेना	सैना	स्थायी	स्थाई
विजयी	विजई	क्यों	क्यूं
गौतम	गोतम	यों	यूं
हौले	होले	प्रौढ़	प्रोढ़
खोज	खौज	व्रज	वृज
गौर	गोर		
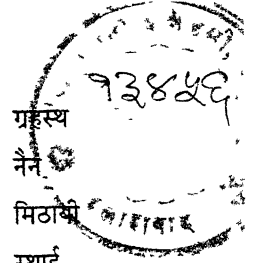
'श, ष, स' की अन्य अशुद्धियाँ

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अवकाश	अवकास	अशोक	असोक
आत्मसात्	आत्मशात	शस्त्र	शष्त्र
कलश	कलस	शास्त्र	शाष्त्र
कष्ट	कस्ट	शीर्षक	शीर्शक
मिश्र	मिस्र (देश का नाम शुद्ध है)		
दुष्कर	दुस्कर	स्रोत	श्रोत
श्रवण	स्रवण	द्रष्टा	द्रस्टा
परवश	परवस	शाखा	साखा
बस	बश	शोचनीय	सोचनीय
हमेशा	हमेसा	शासन	शाषन
शोषक	शोसक	शनै शनै	सनैःसनैः
पारितोषिक	पारितोसिक	भाषा	भाशा
निष्फल	निस्फल	शकटी	सकटी
वशिष्ठ	बशिष्ठ	शरद्	सरद्
श्वसुर	स्वसुर	पुष्कर	पुस्कर
महेश	महेस	गिलास	गिलाश
कपास	कपाश	लाश	लास

कैलास	कैलाश	सुशोभित	सुसोभित
श्वास	श्वाश	प्यास	प्याष/प्याश
श्लाधनीय	स्लाधनीय	शव	सव
अभिषेक	अभिसेक	प्रसिद्ध	प्रशिद्ध
हितैषी	हितैशी	सॉस	शॉस
शलभ	सलभ	अनुप्रास	अनुप्राश
द्वेष	द्वेश	होश्	होस
दस दश (सस्कृत मे शुद्ध है)		सख्या	शंख्या
तिरस्कार	तिरष्कार	श्मश्रु	श्मस्रु
शङ्ख	सङ्ख	षोडशी	षोडसी

अनुस्वार और अनुनासिक की अशुद्धियॉ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
जातिपॉति	जॉतिपॉति	डाका	डांका
क्यों	क्यो	महॅगाई	मॅहगाई
उन्हें	उन्हे	होगे	होगें
हँस (ना)	हस (ना)	फॉस	फास
चॉद	चाद/चान्द	गॉधी	गान्धी
अँधेरा	अन्धेरा	सस्कृत	सँस्कृत
कुँअर	कुअर	रॅगाई	रगाई
रंग	रॅग	गॅवार	गवार
कस	कॅस	कॉसा	कांसा
सॉस	सास	सॉसी	सांसी

टिप्पणी–बीकानेर एवं जोधपुर के निवासी 'आ' का सदैव अनुनासिक उच्चारण करते हैं, जो राजस्थानी के तो अनुरूप है किन्तु हिन्दी की प्रकृति के विपरीत है। अत राजस्थानवासियों को इसका ध्यान रखना चाहिए, यथा –

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
साठ	सांठ	हाथ	हॉथ
बरसात	बरसॉत	जाति	जॉति

काठ	कॉठ	पाठ	पॉठ
डाका	डॉका	खाद	खॉद

विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ
बिना मतलब के चिह्न लगाना

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
दुनिया	दुनिया	नारगी	नांरगी
नाव	नाव	नन्हा	नन्हा
गरिमा	गरिमा	नीबू	नींबू
मामा	मामा	मानो	मानो
चावल	चावल	पूछना	पूंछना
भूसा	भूंसा	महीने	महीनें
थूक	थूंक	पन्ने	पन्नें
जाति-पॉति	जॉति-पॉति	मुकदमे	मुकदमे
दुश्शील, दुःखील	दुशील	प्रातःकाल	प्रातकाल
मनस्थिति, मनःस्थिति	मनस्थिति	अतएव	अतःएव
प्रायः	प्राय	दुःख	दुख
हरिश्चन्द्र	हरिचन्द्र	छह	छ.

दो समान अक्षरो के साथ-साथ आने पर की जाने वाली अशुद्धियॉ
बिना मतलब के चिह्न लगाना

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अध्ययन	अध्यन	राजसुययज्ञ	राजसुयज्ञ
प्रत्यय	प्रत्य	विपर्यय	विपर्य
द्वन्द्व	द्वन्द	स्वतन्त्रता	स्वतन्त्रा
तत्त्वावधान	तत्त्वाधान	स्वावलम्बन	स्वालम्बन
गमनानन्तर	गमनान्तर	अध्यवसाय	अध्यसाय
अंतर्यामी	अतरयामी	महात्मा	महातमा
इस्लाम	इसलाम	शत्रुघ्न	शत्रुघन
जयचन्द	जयचन्द्र	क्यारी	कियारी

दृष्टि	द्रष्टि	कृपया	कृप्या
ब्रह्मपुत्र	ब्रम्हपुत्र	तैयार	त्यार
ब्राह्मण	ब्राम्हण	राधेश्याम	राधेशाम

संयुक्ताक्षरों के कारण वर्तनी की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
उद्देश्य	उद्देश	सामर्थ्य	सामर्थ
स्वास्थ्य	स्वास्थ	अमावस्या	अमावस
अन्तर्धान	अन्तर्ध्यान	उपलक्ष्य	उपलक्ष
राज्याभिषेक	राजाभिषेक	सदृश	सदृश्य
व्यतीत	वितीत	आदर्श	आर्दश
आशीर्वाद	आशीरवाद	चरमोत्कर्ष	चर्मोत्कर्ष
करणकारक	कर्णकारक	कर्ण (कान)	करण
परीक्षा	पिरिक्षा	करण (साधन)	कर्ण (कान)
महस्र	सहस्त्र	स्रोत	स्त्रोत
कार्यक्रम	कार्यकर्म	परमात्मा	प्रमात्मा
प्रकृति	प्रिकृति	पाठ्यक्रम	पाठक्रम
चरम (अन्तिम)	चर्म (चमड़ा)	स्मरण	स्मर्ण
जगदम्बा	जगतम्मा	विश्वम्भर	विसम्भर
रखा	रक्खा	अच्छा	अछा
दुःख	दुक्ख	मिष्ट	मिष्ठ
आह्वान	आव्हान	आत्मा	आतमा
उद्घाटन	उदघाटन	आह्लाद	आल्हाद
श्मशान	शमशान	भर्त्सना	भर्तर्सना
शब्द	शव्द	वयस्क	व्यस्क
दुष्ट	दुष्ठ	षष्ठ	षष्ठम्

ह्रस्व-दीर्घ की अशुद्धियों से अर्थ भेद

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
कम	काम	गिरि	गिरी

अग	आग	चिता	चीता
अज	आज	जुआ	जूआ
अपि	आप	दारु	दारू
अनू	आन	दिया	दीया
अधि	आधि	द्विप	द्वीप
उत्	ऊत	नहर	नाहर
किल	कील	प्रसाद	प्रासाद
मिल	मील	बलि	बली
सिल	शील/सील	बुरा	बूरा
हिल	हील	मणि	मणी
खिल (ना)	खेल	मैला	मेला
कुल	कूल	मौर	मोर
धुल (ना)	धूल	रिस	रीस
बहु	बहू	लोटना	लौटना
जुत (ना)	जूत	शोक	शौक
सुत	सूत	समान	सामान
सुर	सूर	सुखी	सूखी
खुब (ना)	खूब	सुधि	सुधी
गौर	गोर (फा कब्र)	हरि	हरी
कौण (न)	कोण	दिन	दीन
धन्य	धान्य	पर	पार
पुरी	पूरी	सर	सार
खोलना	खौलना	डर	डार
अगम	आगम	नल	नाल
अकार	आकार	निर्	नीर
आदि	आदी	दुर्	दूर
आधि	आधी	भर	भार
उन	ऊन	तर	तार

ओर	और	पिन	पीन
कृति	कृती	दस	दास
कोर	कौर	खट	खाट
कोशल	कौशल	चिर	चीर
नल	नाल	पुरा	पूरा
कुट	कूट	रुप (ना)	रूप
प्रकार	प्रकार	दुखी	दूखी
कि	की	भजन	भाजन
सत	सात	जिन	जीन
पता	पात	पत	पात
खर	खार	दर	दार
पवन	पावन	पिता	पीता
घट	घाट	पट	पाट
सम	साम	दम	दाम
अधर	आधार	उदर	उदार
सकार	साकार	शोच	शौच
जो	जौ	तोक (शिशु)	तौक (पट्टा)
तोर (तेरा)	तौर (यज्ञ, चाल-ढाल)		

हलंत शब्दों की समस्या

हिन्दी में अनेक ऐसे शब्द हैं, जिनके अतिम व्यजन का उच्चारण पूर्ण न होकर अर्द्ध व्यंजन के रूप में होता है। चूंकि अंतिम व्यंजन को अर्द्ध रूप मे नही लिखा जा सकता, इसलिए उस व्यजन ध्वनि के नीचे हलत लगा दिया जाता है। यहां इस संदर्भ मे दो बातें विशेष रूप से ध्यान रखने को है। पहली तो यह कि यद्यपि हलंत लगाने से उस व्यंजन का मूल्य आधा हो जाता है, किन्तु उच्चारण में भेद इसलिए नही हो पाता, क्योकि अतिम व्यंजन का अर्द्ध रूप मे उच्चारण करना सम्भव नहीं है। दूसरी यह कि हलत लगाने से शब्द के अर्थ में भी परिवर्तन आ जाता है, अर्थात् एक ही शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ देने लगता है। इसे आप निम्नलिखित उदाहरणों के समझ सकेंगे।

अंतर् =	अंदर	अतर =	फर्क, दूरी
अहम् =	अहंकार	अहम =	खास

जगत् =	संसार	जगत =	कुए का चबूतरा
वम् =	शिव की आराधना का शब्द	बम =	विस्फोटक गोला
सन् =	वर्ष	सन =	जूट
कीर्तिमान् =	यशस्वी	कीर्तिमान =	रिकॉर्ड

(i) 'अंतर्' का अर्थ 'अंदर' है। इसी से बने हुए शब्द हैं– अंतर्दशा, अतर्देशीय आदि। यहा ध्यान रखने योग्य बात यह है कि 'अन्तर्राष्ट्रीय' मे जो 'र्' है, वह हलतयुक्त है, अर्थात् आधा है। हलतयुक्त 'अन्तर्' का अर्थ होता है 'अंदर'। इसलिए 'अतर्राष्ट्रीय' शब्द का अर्थ हुआ, 'राष्ट्र शब्द के अदर है', दूसरा शब्द है, 'अंतरराष्ट्रीय' इसमें 'अंतर' शब्द दूरी के अर्थ'को व्यक्त करता है। इस प्रकार 'अतरराष्ट्रीय' शब्द का अर्थ हुआ-दूर दूर के राष्ट्र अर्थात् एक से अधिक राष्ट्रों से संबंधित।

(ii) 'जगत्' शब्द का अर्थ होता है 'संसार'। इसलिए जब इस शब्द के साथ 'जननी शब्द जोड़ा जाता है, तो यह शब्द बनता है-जगज्जननी।

(iii) इन्द्र को जीतने वाले के अर्थ मे 'इन्द्रजीत्' सही है, न कि 'इन्द्रजीत'।

हलत न लगाएं सही ज्ञान न होने के कारण अनेक ऐसे शब्द प्रचलित है, जिनमे हलत नही लगाया जाना चाहिए। ऐसा मान कर कि वे शब्द सस्कृत के निकट है, उनमे हलंत लगाए जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है। हालाकि उनमे हलंत लगाए जाने से उनके अर्थ मे उस तरह का कोई परिवर्तन नहीं होता, जैसा कि इसके पूर्व बताया गया है, फिर भी लेखन की शुद्धता की दृष्टि मे हलंत न लगाया जाना ही उपयुक्त है। यहां कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं जिनमें हलत लगाए जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है, जबकि हलत नही लगाया जाना चाहिए। ये शब्द हैं -

अधिकतम	अष्टम	उचित	कार्यरत
च्युत	दशम	नवम	पचम
परम	पतित्व	प्रत्युत	भागवत
विराजमान	शतशत	श्रीयुत	सतत

(i) पचम, सप्तम आदि मे हलत नही लगता। इसे इस रूप मे समझा जा सकता है कि यदि इन शब्दो के अतिम व्यजन मे हलत लगाया जाता तो इन्हें पचं, सप्त भी लिखा जा सकता था, जो कि नही लिखा जाता। यहा ध्यान रखने की बात यह है कि इन शब्दो का अतिम व्यजन पूर्ण है, हलत नही। लेकिन यह भी ध्यान रखने की बात है कि 'शतम्' शब्द सही है।

(ii) हलत चिह्न मूलत· सस्कृत शब्दों के साथ ही लगता है। अंग्रेजी और उर्दू से संबधित शब्दों के साथ यह नहीं लगाया जाता। हालांकि अब संस्कृत से आए हिन्दी शब्दो के साथ भी इसका प्रयोग घटता जा रहा है। 'भगवत्' में 'त्' हलंत है। इसीलिए जब इसके साथ 'कृपा' शब्द का प्रयोग किया जाता है, तब वह शब्द बनता है–भगवत्कृपा'।

(iii) पंचम और 'सप्तम' शब्द के सादृश्य पर कुछ लोग 'षष्ठम' लिखते हैं। वस्तुत यह शब्द 'षष्ठ' है, जिससे हिन्दी का 'छठा' शब्द बना है। यह ध्यान रखने की बात है कि हिन्दी में 'छठा' शब्द है, न कि 'छठवा' जैसे कि पांचवां, सातवां, आठवां होता है।

मध्य में हलंत : हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनके मध्य में हलंत लगाया जाना चाहिए। हलंत लगाए जाने की यह सावधानी धीरे-धीरे समाप्त हो रही है, लेकिन व्याकरणिक शुद्धता की दृष्टि से इनमे हलंत लगाना आवश्यक होता है। ऐसे कुछ शब्द हैं :

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
उद्घाटन	उदघाटन	सद्बुद्धि	सदबुद्धि
वाङ्मय	वाडमय	जिह्वा	जिहव
भाग्यवान्	भाग्यवान	विधिवत्	विधिवत
बुद्धिमान्	बुद्धिमान	प्रस्तरवत्	प्रस्तरवत
साक्षात्	साक्षात	तडित्	तडित
भविष्यत्	भविष्यत	जगत्	जगत
श्रीमान्	श्रीमान	अर्थात्	अर्थात आदि......

हिन्दी मे अब अनेक ऐसे शब्द प्रचलित हो गए हैं, जिनमें हलंत लगाया जाना चाहिए, किंतु इसके प्रयोग की प्रथा समाप्त-सी होती जा रही है। लेकिन हलंत न लगाने की छूट उन्ही शब्दो के साथ ली जानी चाहिए, जिनमे हलत के प्रयोग करने या न करने से उनके अर्थ मे कोई अतर नहीं आता। यहा ध्यान रखने की बात यह है कि हलत तत्सम् शब्दो के साथ लगता है और जब उनमें हलंत लगाना छोड दिया जाता है, तो ये शब्द तद्भव कहलाने लगते हैं । हिन्दी में ऐसे शब्दों के दोनों रूप प्रचलित हैं। सामान्य जानकारी के लिए ऐसे कुछ शब्द यहां दिए जा रहे हैं·

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अकस्मात्	अकस्मात	अर्थात्	अर्थात
पश्चात्	पश्चात	परिषद्	परिषद
पृथक्	पृथक	भगवान्	भगवान

महान्	महान	मूल्यवान्	मूल्यवान
विद्युत्	विद्युत	विराट्	विराट
सम्वत्	सम्वत	सम्राट्	सम्राट
सम्यक्	सम्यक	विधिवत्	विधिवत

■ ■ ■

2

शब्द रचना

शब्द

ध्वनियो के मेल से बने सार्थक वर्ण समुदाय को 'शब्द कहते है। शब्द अकेले और कभी दूसरे शब्दो के साथ मिलकर अपना अर्थ प्रकट करते हैं। इन्हे हम दो रूपो में पाते है–एक तो इनका अपना बिना मिलावट का रूप है, जिसे सस्कृत मे प्रकृति या प्रातिपदिक कहते हैं और दूसरा वह, जो कारक, लिंग, वचन, पुरुष और काल बताने वाले अश को आगे-पीछे लगाकर बनाया जाता है, जिसे पद कहते हैं। यह वाक्य में दूसरे शब्दो से मिलकर अपना रूप झट सवार लेता है। शब्दो की रचना (1) ध्वनि और (2) अर्थ के मेल से होती है। एक या अधिक वर्णो मे बनी स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं; जैसे–लड़की, आ, मै, धीरे, परन्तु इत्यादि। अत· शब्द मूलत ध्वन्यात्मक होगे या वर्णात्मक। किन्तु, व्याकरण मे ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दो का अधिक महत्व है। वर्णात्मक शब्दों मे भी उन्ही शब्दों का महत्व है, जो सार्थक है, जिनका अर्थ स्पष्ट और सुनिश्चित है। व्याकरण मे निरर्थक शब्दो पर विचार नही होता।

सामान्यत· शब्द दो प्रकार के होते हैं–सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्दों के अर्थ होते हैं और निरर्थक शब्दों के अर्थ नही होते। जैसे–पानी सार्थक शब्द है और 'नीपा' निरर्थक शब्द, क्योंकि इसका कोई अर्थ नहीं।

भाषा की परिवर्तनशीलता उसकी स्वाभाविक क्रिया है। समय के साथ ससार की सभी भाषाओ के रूप बदलते हैं। हिन्दी इस नियम का अपवाद नही है। सस्कृत के अनेक शब्द पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी मे आये है। इनमे कुछ शब्द तो ज्यों-के-त्यों अपने मूल रूप मे है और कुछ देश-काल के प्रभाव के कारण विकृत हो गए हैं।

उद्गम की दृष्टि से शब्दों का वर्गीकरण

उद्गम की दृष्टि से शब्दों के चार भेद हैं –

(1) तत्सम, (2) तद्‌भव (3) देशज एव (4) विदेशी शब्द।

तत्सम

किसी भाषा के मूल शब्द को 'तत्सम' कहते है। 'तत्सम' का अर्थ ही है–'उसके

समान' या 'ज्यों का त्यों =(तत्, तस्य = उसके–संस्कृत के, सम = समान) यहा संस्कृत के उन तत्समो की मूची है, जो अपभ्रश से होते हुए हिन्दी मे आए है।

तत्सम	हिंदी	तत्सम	हिंदी
आम्र	आम	गोमल, गोमय	गोबर
उष्ट्र	ऊँट	घोटक	घोडा
चुल्लि:	चूल्हा	शत	सौ
चतुष्पादिका	चौकी	सपत्नी	सौत
शलाका	सलाई	हरिद्रा	हल्दी, हरदी
चचु	चोंच	पर्यंक	पलंग
त्वरित	तुरत, तुरंत	भक्त	भात
उद्वर्तन	उबटन	सूचि	सुई
खर्पर	खपरा, खप्पर	सक्तु	सत्तू
तिक्त	तीखा	क्षीर	खीर

तद्भव

ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी मे आए है, 'तद्भव' कहलाते है। तत् + भव का अर्थ है–उससे (सस्कृत से) उत्पन्न। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आए हैं। इसके लिए इन्हें एक लम्बी यात्रा तय करनी पडी है। सभी तद्भव शब्द संस्कृत से आए हैं, परन्तु कुछ शब्द देश काल के प्रभाव से ऐसे विकृत हो गए हैं कि उनके मूल रूप का पता नहीं चलता। फलत: तद्भव शब्द दो प्रकार के हैं –(1) संस्कृत से आने वाले और (2) सीधे प्राकृत से आने वाले। हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वहुसख्य शब्द ऐसे तद्भव हैं, जो सस्कृत-प्राकृत से होते हुए हिन्दी में आए हैं। हिन्दी में शब्दों के सरलतम रूप बनाये रखने का पुराना अभ्यास है। निम्नलिखित उदाहरणों से तद्भव शब्दों के रूप स्पष्ट हो जाएगे।—

संस्कृत	प्राकृत	तद्भव हिन्दी
अग्नि	अग्गि	आग
मया	मइं	मैं
वत्स	वच्छ	बच्चा, बाछा
चतुर्दश	चोद्दस, चउद्दह	चौदह
पुष्प	पुप्फ	फूल
चतुर्थ	चउट्ठ, चउत्थ	चौथा

प्रिय	प्रिय	पिय, पिया
कृत	कओ	किया
मध्य	मज्झ	में
मयूर	मऊर	मोर
वचन	वअण	बैन
नव	नअ	नौ
चत्वारि	चत्तारि	चार
अर्द्धतृतीय	अड्ढतइअ	अढाई, ढाई

देशज

'देशज वे शब्द है, जिनकी उत्पत्ति का पता नही चलता। ये अपने ही देश मे बोलचाल से बने हैं, इसलिए इन्हें देशज कहते हैं। हेमचन्द्र ने उन शब्दो को देशी कहा है, जिनकी उत्पत्ति किसी सस्कृत धातु या व्याकरण के नियमो से अनुसार न हो। लोकभाषाओं मे ऐसे शब्दों की अधिकता है। जैसे तेंदुआ, चिडिया, कटरा, अण्टा, ठेठ, कटोरा, खिड़की, ठुमरी, खखरा, चसक, जूता, कलाई, फुनगी, खिचडी, पकडी, बियाना, लोटा, डिबिया, डोंगा, डाब इत्यादि। विदेशी विद्वान जॉन बीम्स ने देशज शब्दो को मुख्य रूप से अनार्यस्रोत से सम्बद्ध माना है।

विदेशी शब्द

विदेशी भाषाओं से हिन्दी-भाषा मे आए शब्दो को 'विदेशी शब्द' कहते है। इनमें फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली और फ्रांसीसी भाषाएं मुख्य हैं। अरबी, फारसी और तुर्की के शब्दों को हिन्दी ने अपने उच्चारण के अनुरूप या अपभ्रंश रूप में ढाल लिया है। हिन्दी में उनके कुछ हेर-फेर इस प्रकार हुए हैं·

1 क, ख़, ग़, फ़ जैसे नुक्तेदार उच्चारण और लिखावट को हिन्दी में साधारणतया बेनुक्तेदार उच्चरित किया और लिखा जाता है। जैसे—क़ीमत (अरबी)—कीमत (हिन्दी) ख़ूब (फारसी)—खूब (हिन्दी), आग़ा (तुर्की)— आगा (हिन्दी), फ़ैसला (अरबी)— फैसला (हिन्दी)

2 शब्दों के अन्तिम विसर्ग की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा लागाकर लिखा या बोला जाता है। जैसे— आईन· और कमीन. (फारसी)= आईना और कमीना (हिन्दी), हैज. (अरबी = हैजा (हिन्दी), चम्च : (तुर्की)= चमचा (हिन्दी)।

3 शब्दों के अतिम हकार की जगह हिन्दी में आकार की मात्रा कर दी जाती है। जैसे— अल्लाह (अरब)= अल्ला (हिन्दी)।

4. शब्दों के अतिम आकार की मात्रा को हिन्दी में हकार कर दिया जाता है। जैसे परवा (फारसी) = परवाह (हिन्दी)।

5 शब्दो के अन्तिम अनुनासिक आकार को 'आन' कर दिया जाता है। जैसे–दुकाँ (फारसी) = दुकान (हिन्दी), ईमा (अरबी) = ईमान (हिन्दी)।

6 बीच के 'इ' को 'य' कर दिया जाता है। जैसे–काइद (अरबी)= कायदा (हिन्दी)।

7 बीच के आधे अक्षर को लुप्त कर दिया जाता है। जैसे नश्श (अरबी)= नशा (हिन्दी)।

8 बीच के आधे अक्षर को पूरा कर दिया जाता हैं जैसे–अफ्सोस, गर्म, जह्र, किश्मिश, बेर्हम, (फारसी)= अफसोस, गरम, जहर, किशमिश, बेरहम, (हिन्दी)। तर्फ, नह्र, कस्रत (अरबी)= तरफ, नहर, कसरत (हिन्दी)। चम्च :, तम्गा (तुर्की)= चमचा, तमगा (हिन्दी)।

9 बीच की मात्रा लुप्त कर दी जाती है। जैसे–आबोदान (फारसी) = आबदाना (हिन्दी), जवाहिर, मौसमि, वापिस (अरबी) = जवाहर, मौसम, वापस (हिन्दी), चुगुल (तुर्की) चुगल (हिन्दी)।

10 बीच में कोई ह्रस्व मात्रा (खासकर 'इ' की मात्रा) दे दी जाती है। जैसे आतशबाजी (फारसी) आतिशबाजी (हिन्दी)। दुन्या, तक्य: (अरबी)= दुनिया, तकिया (हिन्दी)।

11 बीच की ह्रस्व मात्रा को दीर्घ में, दीर्घ मात्रा को ह्रस्व में या गुण में, गुण मात्रा को ह्रस्व में और ह्रस्व मात्रा को गुण मे बदल देने की परम्परा है। जैसे–खुराक (फारसी) = खूराक (हिन्दी) (ह्रस्व के स्थान मे दीर्घ), आईन (फारसी = आईना (हिन्दी) दीर्घ के स्थान में ह्रस्व); उम्मीद (फारसी) उम्मेद (हिंदी) (दीर्घ 'ई' के स्थान में गुण 'ए'); देहात (फारसी)= दिहात (हिन्दी)गुण 'ए' के स्थान में 'इ'); मुग़ल (तुर्की) = मोगल (हिन्दी) ('उ' के स्थान में गुण 'ओ')।

12 अक्षर मे सवर्गी परिवर्तन भी कर दिया जाता है। जैसे–बालाई (फारसी) = मलाई (हिदी) ('ब' के स्थान मे उसी वर्ग का वर्ण 'म')।

हिन्दी के उच्चारण और लेखन के अनुसार हिन्दी भाषा मे घुले-मिले कुछ विदेशज शब्द आगे दिए जाते हैं।

(अ) फारसी शब्द

अफसोस, आबदार, आबरू, आतिशबाजी, अदा, आराम, आमदनी, आवारा, आफत, आवाज, आईना, उम्मीद, कद्द, कबूतर, कमीना, कुश्ती, कुश्ता, किशमिश, कमरबन्द, किनारा, कूचा, खाल, खुद, खामोश, खरगोश, खुश, खुराक, खूब, गर्द, गज, गुम, गल्ला, गोला, गवाह, गिरफ्तार, गरम, गिरह, गुलूबन्द, गुलाब, गुल, गोश्त, चाबुक, चादर, चिराग, चश्मा, चरखा, चूँकि, चेहरा, चाशनी, जग, जहर, जीन, जोर, जबर, जिन्दगी, जादू, जागीर, जान, जुरमाना, जिगर, जोश़, तरकश, तमाशा, तेज, तीर, ताक, तबाह, तनख्वाह, ताजा, दीवार, देहात, दस्तूर, दुकान, दरवार, दगल, दिलेर, दिल, दवा, नामर्द, नाव, नापसन्द, पलंग, पैदावार, पलक, पुल, पारा, पेशा, पैमाना, बेवा, बहरा, बेहूदा, बीमार, बेरहम, मादा, माशा, मलाई, मुर्दा, मजा, मलीदा, मुफ्त, मोर्चा, मीन, मुर्गा, मरहम, याद, यार, रग, रोगन, राह,

लश्कर, लगाम, लेकिन, वर्ना, वापिस, शादी, शोर, सितारा, सितार, सरासर, सुर्ख, सरदार, सरकार, सूद, सौदागर, हफ्ता, हजार इत्यादि।

(आ) अरबी शब्द

अदा, अजब, अमीर, अजीब, अजायब, अदावत, अक्ल, असर, अहमक, अल्ला, आसार, आखिर, आदमी, आदत, इनाम, इजलास, इज्जत, इमारत, इस्तीफा, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, औसत, औरत, औलाद, कसूर, कदम, कब्र, कसर, कमाल, कर्ज, किस्त, किस्मत, किस्सा, किला, कसम, कीमत, कसरत, कुर्सी, किताब, कायदा, कातिल, खबर, खत्म, खत, खिदमत, खराब, खयाल, गरीब, गैर, जाहिल, जिस्म, जलसा, जनाब, जवाब, जालिम, जिक्र, जिहन, तमाम, तकाजा, तकदीर, तारीख, तकिया, तमाशा, तरफ, तै, तादाद, तरक्की, तजुरवा, दाखिल, दिमाग, दवा, दाबा, दावत, दफ्तर, दगा, दुआ, दफा, दल्लाल, दुकान, दिक, दुनिया, दौलत, दान दीन, नतीजा, नशा, नाल, नकद, नकल, नहर, फकीर, फायदा, फैसला, बाज, बहस, बाकी, मुहावरा, मदद, मुद्दई, मरजी, माल, मिसाल, मजबूर, मुंसिफ, मालूम, मामूली, मुकदमा मुल्क, मल्लाह मवाद, मौसम, मौका, मौलवी, मुसाफिर, मशहूर, मजमून, मतलब, मानी मात, यतीम, राय, लिहाज, लफ्ज, लहजा, लिफाफा, लियाकत, लायक, वारिस, वहम, वकील, शराब, हिम्मत, हैजा, हिसाब, हरामी, हद, हज्जाम, हक, हुक्म, हाजिर, हाल, हाशिया, हाकिम, हमला, हवालात, हौसला इत्यादि।

(इ) तुर्की शब्द

आगा, आका, उजबक, उर्दू, कालीन, काबू, कज्जाक, कैंची, कुली, कुर्की, चिक, चेचक, चमना, चुगुल, चकमक, जाजिम, तमगा, तोप तलाश, बेगम, बहादुर, मुगल, लफंगा, लाश, सौगात, सुराग इत्यादि।

(ई) अंग्रेजी शब्द

(अंग्रेजी) तत्सम	**तद्भव**	**(अंग्रेजी) तत्सम**	**तद्भव**
ऑफीसर	अफसर	थियेटर	थेटर, ठेठर
एंजिन	इजन	टरपेण्टाइन	तारपीन
डॉक्टर	डाक्टर	माइल	मील
लैनटर्न	लालटेन	बॉटल	बोतल
स्लेट	सिलेट	कैप्टेन	कप्तान
हॉस्पिटल	अस्पताल	टिकट	टिकस

इनके अतिरिक्त, हिन्दी में अंग्रेजी के कुछ तत्सम शब्द ज्यों-के-त्यों प्रयुक्त होते हैं। इनके उच्चारण में प्राय: कोई भेद नहीं रह गया है। जैसे– अपील, आर्डर, इंच, इण्टर, इयरिंग, एजेन्सी, कम्पनी, कमीशन, कमिश्नर, कम्प, क्लास, क्वार्टर, क्रिकेट, काउन्सिल, गार्ड, गजट, जेल, चेयरमैन, ट्यूशन, डायरी, डिप्टी, डिस्ट्रिक्ट, बोर्ड, ड्राइवर, पेन्सिल, फाउण्टेन पैन, नम्बर,

नोटिस, नर्स, थर्मामीटर, दिसम्बर, पार्टी, प्लेट, पार्सल, पेट्रोल, पाउडर, प्रेस, फ्रेम, मीटिंग, कोर्ट, होल्डर, कॉलर इत्यादि।

(उ) पुर्तगाली शब्द

हिंदी	पुर्तगाली
अलकतरा	Alcatrao
अनन्नास	Annanas
आलपीन	Alfinete
आलमारी	Almario
बाल्टी	Balde
किरानी	Carrane
चाबी	Chave
फीता	Fita
तम्बाकू	Tobacco

इसी तरह आया, इस्पात, इस्तरी, कमीज, कनस्टर, कमरा, काजू, क्रिस्तान, गमला, गोदाम, गोभी, तौलिया, नीलाम, परात, पादरी, पिस्तौल, फर्मा, बुताम, मस्तूल, मेज, लबादा, साया, सागू आदि पुर्तगाली तत्सम के तद्भव रूप भी हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

ऊपर जिन शब्दों की सूची दी गयी है, उनसे यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा मे विदेशी शब्दों की कमी नहीं है। ये शब्द हमारी भाषा में दूध-पानी की तरह मिले हैं। निःसन्देह इनसे हमारी भाषा समृद्ध हुई है।

उत्पत्ति अथवा बनावट के अनुसार शब्दों का वर्गीकरण

श्ब्दों अथवा वर्णों के मेल से नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'उत्पत्ति' कहते हैं। कई वर्णों को मिलाने से शब्द बनता है और शब्द के खण्ड को 'शब्दांश' कहते हैं। जैसे–'राम' मे शब्द के दो खण्ड हैं–'रा' और 'म'। इन अलग-अलग शब्दांशो का कोई अर्थ नही है। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनके दोनों खण्ड सार्थक होते है। जैसे–विद्यालय, इस शब्द के दो अश हैं–'विद्या' और 'आलय'। दोनो के अलग-अलग अर्थ हैं। इस प्रकार उत्पत्ति अथवा बनावट के विचार से शब्द के तीन प्रकार हैं– (1) रूढ, (2) यौगिक और (3) योगरूढ़।

रूढ़ शब्द

जिन शब्दों के खण्ड सार्थक न हों, उन्हे रूढ़ कहते है; जैसे नाक, कान, पीला, झट, पर। यहा प्रत्येक शब्द के खण्ड जैसे–'ना' और 'क', 'का' और 'न' अर्थहीन हैं।

यौगिक शब्द

ऐसे शब्द, जो दो शब्दो के मेल से बनते है और जिनके खण्ड सार्थक होते है, यौगिक कहलाते है। दो या दो से अधिक रूढ शब्दों के योग से यौगिक शब्द बनते हैं, जैसे– आग-बबूला, पीला-पन, दूध-वाला, छल-छन्द, घुड-सवार इत्यादि। यहा प्रत्येक शब्द के दो खण्ड हैं और दोनो खण्ड सार्थक हैं।

योगरूढ़ शब्द

ऐसे शब्द, जो यौगिक तो होते है, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक है, योगरूढ़ कहलाते है। मतलब यह कि यौगिक शब्द जब अपने सामान्य अर्थ को छोड विशेष अर्थ बताने लगें, तब वे 'योगरूढ़' कहलाते हैं; जैसे–लम्बोदर, पकज, चक्रपाणि, जलज इत्यादि। 'पंक + ज' का अर्थ है 'कीचड से (में) उत्पन्न, पर इससे केवल 'कमल' का अर्थ लिया जायेगा, अत 'पंकज' योगरूढ है। इसी तरह, अन्य शव्दो को भी समझना चाहिए।

अर्थ के आधार पर

शब्द को अर्थ के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। इस दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं

(1) वाचक (2) लक्षक और (3) व्यञ्जक

(1) वाचक शब्द – जो शब्द केवल अपने साकेतिक अर्थ ही प्रदान करे, उन्हे वाचक कहा जाता है। प्रत्येक भापा भाषी समाज द्वारा किसी न किसी भाव, विचार, वस्तु, स्थान अथवा व्यक्ति का सकेत निहित कर दिया जाता है। जब कोई शब्द केवल उस संकेत का ही बोध करता है तब उसे वाचक कहा जाता है यथा–राय, पुस्तक आदि। जब उक्त शब्दों का वाक्य में वही अर्थ होता है जो संकेतित है तब इनकी वाचक संज्ञा होगी। यदि कोई भिन्न अर्थ प्रदान करेगा तो सज्ञा परिवर्तित हो जाएगी। वाचक शब्द से व्यक्त अर्थ को वाच्यार्थ, मुख्यार्थ या सकेतार्थ कहा जाता है।

(2) लक्षक : वाच्यार्थ के बाध हो जाने पर जब किसी शब्द का मुख्यार्थ से सम्बद्ध कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है तब उस शब्द को लक्षक और अर्थ को लक्ष्यार्थ कहा जाता है उदाहरणार्थ–राम गधा है। इस वाक्य में 'गधा' शब्द का प्रयोग पशु विशेष के अर्थ में नही किया गया है। फलत मुख्यार्थ बोध हो जाने से 'गधा' शब्द का अर्थ 'मूर्खता' से लिया गया है। जो मुख्यार्थ के साथ गुण गुणी भाव से सम्बद्ध है। अत यहा पर 'गधा' शब्द लक्षक एवं 'मूर्ख' लक्ष्यार्थ है।

(3) व्यञ्जक :– जब किसी शब्द के मुख्यार्थ बाध होने पर लक्ष्यार्थ अथवा मुख्यार्थ के पश्चात् किसी चमत्कारपूर्ण अर्थ को ग्रहण किया जाता है तब उस शब्द की व्यञ्जक सज्ञा होती है। इस प्रकार व्यञ्जक शब्द दो प्रकार से व्यंगार्थ का बोध करता है। (1) लक्ष्यार्थ के पश्चात् और (2) मुख्यार्थ के पश्चात् । प्रथम का उदाहरण :–"गंगा मे घर

है"। वाक्य मे 'गगा' शब्द लक्षक और व्यञ्जक दोनों प्रकार का है। पहले गगा का वाच्यार्थ होगा। विशिष्ट स्थानों से होकर प्रवाहमान जल प्रवाह-मुख्यार्थ बाध के कारण 'गगा' शब्द का सदृश्येतर समीप-सामीप्य भाव सम्बन्ध से 'गंगा का तट' अर्थ लक्ष्यार्थ हुआ। तत्पश्चात् 'शीतल एवं स्वास्थ्यवर्द्धक स्थल, चमत्कारपूर्ण व्यंगार्थ होने से 'गंगा' शब्द व्यञ्जन हो गया। द्वितीय वर्ग का उदाहरण-'सूर्यास्त हो गया।' वाक्य का मुख्यार्थ के साथ-साथ भोजन पकाने का समय हो गया, खेलने जाने का समय हो गया, भ्रमण का समय हो गया– आदि अनेक अर्थो की प्राप्ति होती है। यहां पर ये अर्थ बिना मुख्यार्थ बाधा के ही प्राप्त हो रहे हैं। अत यहॉ पर सूर्यास्त शब्द दूसरे प्रकार का व्यञ्जक शब्द है।

(घ) रूप विकार के आधार पर

(1) विकारी और (2) अविकारी

(1) विकारी शब्द विकारी शब्द वे कहलाते हैं **जो कारक, लिग वचन, पुरुष, ओर काल के अनुसार रूपान्तरित हो जाते है।** यथा– लडकी, अच्छा-अच्छे, तुम-तुम्है, जाना-जाए-जाओ, गया-गई-गए आदि।

(2) अविकारी शब्द . अविकारी शब्द कहलाते है जो सदैव एक रूप रहते है और कारक, लिग, वचन, पुरुष व काल के कारण रूपान्तरित नही होते। यथा– तक, और, किन्तु, परंतु, एव बहुत, कल, परसो, कैसा, जैसा, तैसा आदि।

(3) प्रयोग के आधार पर– वाक्य मे शब्द का प्रयोग किस रूप मे हुआ है, इस आधार पर भी शब्दो का वर्गीकरण किया जाता है। हिन्दी मे कुछ विद्वान तीन-संज्ञा, क्रिया और अव्यय वर्गो मे, कुछ पाच-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय भागों में, कुछ 6 सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण और अव्यय वर्गों में और कुछ अंग्रेजी भाषा के अनुकरण पर आठ वर्गो मे विभाजित करते हैं। ये विद्वान अव्यय को सम्बन्ध बोधक अव्यय, समुच्चय बोधक अव्यय और विस्मयादि बोधक अव्यय जैसे तीन पृथक वर्गों मे विभाजित करते हैं। वास्तव मे शब्दों को कुल 6 भागों में ही विभाजित किया जाना चाहिए। अन्य भेद तो उपभेद हैं जो किसी भेद में अन्तर्निहित हो जाते हैं।

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) विशेषण
(4) क्रिया (5) क्रिया विशेषण और (6) अव्यय

इन आधारो के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकारो से भी शब्दो को वर्गीकृत किया जाता है यथा

(1) युग्म (2) पर्यायवाची (3) अपूर्ण पर्यायवाची
(4) विलोम (5) वाक्य स्थानापन्न शब्द और (6) अनेकार्थक शब्द

1. युग्म शब्द–प्रत्येक भाषा में कितने ही ऐसे शब्द होते हैं जिनके उच्चारण मे या ध्वनियों में अत्यधिक कम अन्तर होता है किन्तु वह अन्तर उनके अर्थो को परिवर्तित कर देता है। यह अन्तर कही स्वर का और कहीं व्यजन का होता है और कहीं दोनों का। ऐसे

शब्दों को युग्म शब्द कहते हैं। अत उच्चारण एव लेखन में हमें इस ओर से सतर्क रहना चाहिए। ऐसे कुछ शब्दों की सूची अर्थों सहित प्रस्तुत की जा रही है·

युग्म शब्द

अनु (पीछे)	अणु (कण)
अनुप्रास (एक शब्दालकार)	अनुप्राश (भोजन)
अन्न (अनाज)	अन्य (दूसरा)
अकथ (न कहने योग्य)	अथक (अविराम)
अपर (दूसरा)	अपार (जिसका पार नही है)
अब (इस समय)	अव (एक उपसर्ग)
अमित (अत्यधिक)	अमीत (शत्रु)
अरि (शत्रु)	अरी (सम्बोधन-स्त्री के लिए)
अवधि (समय)	अवधी (अवध की भाषा)
अस्र (ऑसू)	अस्त्र (हथियार)
अलि (भौरा)	अली (सुखी)
अभय (निर्भय)	उभय (दोनों)
असन (भोजन)	आसन (बैठने की वस्तु)
अभिज्ञ (जानने वाला)	अनभिज्ञ (अनजान)
अंगना (स्त्री)	ॲगना (घर का ऑगन)
अंत (समाप्त)	अंत्य (नीच, अंतिम)
अंश (भाग, खण्ड)	अस (कधा)
अंब (आम, पिता-माता)	अबु (जल)
अवेद्य (निन्दनीय)	अवध्य (वध नही करने योग्य)
आकर (खान)	आकार (रूप करने योग्य)
आयत (लम्बा-चौड़ा)	आयात (बाहर से आना)
आरति (विरक्ति, दु:ख)	आरती (धूप-दीप दिखाना)
आर्त (दु:खी)	आर्द्र (गीला)
इत्र (सुगंन्ध)	इतर (दूसरा)
उद्धत (उद्दण्ड)	उद्यत (तैयार)

उपकार (भलाई)	अपकार (बुराई)
ऋत (सत्य)	ऋतु (मौसम)
कुल (वंश)	कूल (किनारा)
कर्म (कार्य)	क्रम (सिलसिला)
कृति (रचना)	कृती (निपुण, पुण्यात्मा)
कृत (किया हुआ)	क्रीत (खरीदा हुआ)
कलि (कलियुग)	कली (अधखिला फूल)
कृपण (कंजूस)	कृपाण (कटार)
कर्ण (कान, एक नाम)	करण (एक कारण, इन्द्रियाँ)
कपी (घिरनी)	कपि (बन्दर)
किला (गढ)	कीला (गाड़ा या बाधा)
कूट (पहाड की चोटी या दफ्ती)	कुट (किला या घर)
कर्कट (केंकडा)	करकट (कूडा)
कटीली (तीखी या धारदार)	कंटीली (काँटेदार)
छत्र (छाता)	क्षत्र (क्षत्रिय)
छात्र (विद्यार्थी)	क्षात्र (क्षत्रिय सबधी)
कोष (खजाना)	(कोश) शब्द संग्रह
खोआ (मावा)	खोया (खो गया)
ग्रह (नक्षत्र)	गृह (घर)
गुड (शक्कर)	गूढ़ (गम्भीर)
चिर (पुराना)	चीर (कपड़ा)
चूत (आम या आम का पेड)	च्युत (गिरा हुआ)
जगत (कुंए का चबूतरा)	जगत् (संसार)
जघन (नितम्ब)	जघन्य (शूद्र)
तडाक (जल्दी)	तड़ाग (तालाब)
तक्र (मट्ठा)	तर्क (बहस)
तरी (गीलापन)	तरि (नाव)
द्विप (हाथी)	द्वीप (टापू)

दमन (दबाना)	दामन (आंचल या छोर)
दिवा (दिन)	दीवा (दीया, दीपक)
देव (देवता)	दैव (भाग्य)
दश (डंक या काट)	दश (दस अक)
नागर (शहरी या चतुर व्यक्ति)	नगर (शहर)
प्रदीप (दीपक)	प्रतीप (उलटा, विशेष)
पीक (पान का थूक)	पिक (कोयल)
परीक्षा (इम्तिहान)	परिक्षा (कीचड)
भगि (लहर या टेढापन)	भगी (मेहतर या भग करने वाला)
भारतीय (भारत का)	भारती (सरस्वती, वाणी)
मद (अहकार, नाश)	मद्य (शराब)
मणि (रत्न)	मणी (सर्प)
रत (लीन)	रति (कामदेव की पत्नी, प्रेम)
लक्ष्य (निशाना)	लक्ष (लाख)
वस्तु (चीज)	वास्तु (मकान, इमारत)
व्यग (विकलाग)	व्यग्य (ताना, उपालम्भ)
सुधी (विद्वान, बुद्धिमान)	सुधि (स्मरण)
शप्त (शाप पाया हुआ)	सप्त (सात)
शहर (नगर)	सहर (सवेरा)
सिता (शक्कर)	सीता (जानकी)
शती (सैंकडा)	सती (पतिव्रता स्त्री)
श्वजन (कुत्ते)	स्वजन (अपना आदमी)
हरि (विष्णु, बदर)	हरी (हरे रग की)
आगम (पहुच से बाहर)	आगम (उत्पत्ति, शास्त्र)
अतल (तल रहित)	अतुल (अनुपम)
अनल (अग्नि)	अनिल (वायु)
अपमान (निरादर)	उपमान (जिससे समानता बताई जाए)
अपेक्षा (तुलना में, आशा)	उपेक्षा (तिरस्कार)

अवलम्ब (आश्रय)	अविलम्ब (शीघ्र)
आहूत (बुलाया गया)	आहूति (बलि, यज्ञो में सामग्री आदि का डालना)
गुटका (छोटी पुस्तक)	गुटिका (गोली)
गुर (गणित के परिक्षित नियम)	गुरु (अध्यापक)
जलाना (ज्वलित करना)	जिलाना (जीवनदान देना)
जामन (दूध जमाने का दही)	जामुन (एक फल)
ढलाई (ढालने की प्रक्रिया)	ढिलाई (शिथिलता)
तरग (लहर)	तुरग (घोडा)
तरणी (नौका)	तरुणी (युवती)
दशा (अवस्था)	दिशा (ओर)
नकल (अनुकरण)	नकुल (नेवला)
नावक (तीर)	नाविक (केवट)
निहत (मरा हुआ)	निहित (छिपा हुआ)
नियत (निश्चित)	नियति (भाग्य)
परिमित (सीमा)	परिमिति (मान)
परिच्छद (वेशभूषा)	परिच्छेद (अध्याय, विभाग)
पुरुष (मनुष्य)	परुष (कठोर)
प्रेषित (भेजा हुआ)	प्रोषित (प्रवासी)
भुवन (लोक)	भवन (घर)
मत (राय)	मति (बुद्धि)
रक्त (खून लाल)	रिक्त (खाली)
सवर्ण (समान जाति का)	सुवर्ण, स्वर्ण (सोना)
सुगन्ध (अच्छी गन्ध)	सौगन्ध (शपथ, महल)
हरण (चुराना)	हरिण (मृग)
अनिष्ट (बुरा)	अनिष्ठ (निष्ठा रहित)
अभिनय (अनुकरण)	अविनय (उद्दण्डता)
अभिमान (झूठा मान)	अभियान (आक्रमण, चढाई)

अभिराम (सुन्दर)	अविराम (निरन्तर)
अरबी (अरबों की भाषा)	अरवी (एक प्रकार का साग)
अभिहित (उक्त)	अविहित (अनुचित)
अवधान (योग)	अवदान (प्रशसित कार्य)
अशक्त (निर्बल, असमर्थ)	आसक्त (लिप्त)
आभरण (अलकार आभूषण)	आवरण (परदा)
आयास (प्रयत्न)	आवास (वास-स्थान)
आवृत्ति (दोहराना)	आवृत्त (घिरा हुआ)
उबारना (बचाना)	उभारना (ऊंचा उठाना)
कंकाल (अस्थि-पञ्जर)	कगाल (निर्धन)
कटौती (कम करने का भाव)	कठौती (काष्ठ पात्र)
कडाई (कठोरता)	कढ़ाई (काढने की क्रिया)
	कड़ाही (लोहे का पात्र)
कडी (कठोर)	कढ़ी (दही एव बेसन का साग)
कौडी (बीस की सख्या)	कोढी (एक प्रकार के रोग से ग्रस्त)
कोष (खजाना)	कोस (दूरी का माप)
गगरा (घड़ा)	घाघरा (लहंगा)
गट्टा (कलाई)	गड्डा (गट्ठर)
गडना (चुनना)	गढ़ना (बनाना)
गदहा (वैद्य)	गधा (गर्दभ, प्रभु)
गाड़ी (यान)	गाढ़ी (गहरी)
गूँदना, गूँधना (आटा सानना)	गूँथना (माला पिरोना)
चक्रवाक (चलाना)	चक्रवात (बवडर)
चीर (वस्त्र)	चीड (एक प्रकार का पेड)
छत (छाजन)	क्षत (घाव)
जरठ (बूढ़ा)	जठर (पेट)
जलना (बलना)	झलना (हवा करना)
जवान (युवक)	जबान (जिह्वा)

जोंक (एक कीड़ा)	झोक (झुकाव)
डीठ (दृष्टि)	ढीठ (जिद्दी)
डोल (बाल्टी)	ढोल (वाद्य-यन्त्र)
दाख (द्राक्षा)	धाक (दबदबा)
नाड़ी (शिराएँ)	नारी (स्त्री)
निर्जर (जिसे बुढापा न हो)	निर्झर (झरना)
निश्चल (अचल)	निश्छल (छल रहित)
नीम (एक पेड, कच्चा)	नींव (आधार)
पड़ना (गिरना)	पढ़ना (अध्ययन करना)
पाणि (हाथ)	पानी (जल)
पालतू (पाला हुआ)	फालतू (अतिरिक्त)
पाश (फन्दा)	पास (समीप)
पीडा (दर्द, वेदना)	पीढा (पीठ)
पुष्कर (जलाशय)	पुष्कल (बहुत)
प्रणय (प्रेम)	परिणय (विवाह)
बाड़ (सूखी झाड़ी)	बाढ़ (जल प्रवाह का बढ़ना)
बहन (बहिन)	वहन (ढोना)
बहाना (जल मे प्रवाहित करना)	भाना (अच्छा लगना)
मन्दी (धीमी)	मण्डी (हाट)
मिट्टी (धूल)	मिट्ठी (चुम्बन)
मुक्त (छोडा हुआ)	भुक्त (भोगा हुआ)
लोभ (लालच)	लोम (बाल)
वृन्त (डंठल)	वृन्द (समूह)
शंकर (शिव)	संकर (अन्तर्जातीय मिश्रण)
शकल (टुकड़ा)	सकल (समस्त)
शप्त (शापित)	सप्त (सात)
शकृद् (विष्ठा)	सकृद् (एक बार)
शर (बाण)	सर (सरोवर)

शाला (स्थान)	साला (पत्नी का भाई)
शिरा (नाड़ी)	सिरा (छोर)
शान्त (चुप)	सान्त (अन्त वाला या अन्त सहित)
शादी (विवाह)	सादि (आदि वाला, जिसका प्रारम्भ ज्ञात हो)
शूर (बहादुर)	सूर (सूर्य)
श्रवण (कान)	श्रमण (जैन भिक्षु)
षष्टि (सात)	षष्ठी (छठी)
हट (परे हो)	हठ (जिद)
ज्ञेय (जानने योग्य)	गेय (गाने योग्य)
परिणाम (फल)	परिमाण (माप-तौल)
मण्डित (सुशोभित)	मुण्डित (मुँडा हुआ)
विदुर (पण्डित)	विधुर (जिसकी पत्नी का देहान्त हो गया हो)
दारा (स्त्री)	द्वारा (माध्यम से)
शुक्ल (श्वेत)	शुल्क (फीस)
विष (जहर)	विश (मृणाल, कमल तन्तु)
शौर्य (वीरता)	सौर/सौर्य (सूर्य सम्बन्धी)

पर्यायवाची शब्द

प्रत्येक भाषा में शब्दों के पर्यायवाची शब्द भी होते हैं। यद्यपि उन शब्दो के भावों और प्रभावों में यत्किञ्चित् अन्तर अवश्य रहता है, फिर भी उनका पारस्परिक प्रयोग किया जाता है। पर्यायवाची शब्द दो प्रकार के होते हैं–

(1) पूर्ण पर्यायवाची और (2) अपूर्ण पर्यायवाची।

(1) पूर्ण पर्यायवाची –पूर्ण पर्यायवाची शब्द वे होते हैं जो अर्थ की दृष्टि से अपने पर्यायवाची शब्द से चाहे कुछ भिन्नता रखते हो, किन्तु उनका फल अन्तत. किसी एक व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव को ही प्राप्त होता है, यथा–शिव, शंकर, रुद्र, त्रिनेत्र, त्र्यम्बक आदि शब्दों के भावों में यद्यपि कुछ अन्तर है, फिर भी ये शब्द एक ही व्यक्ति के विभिन्न लक्षणों एवं भावों को प्रकट करने के कारण अन्तत. 'महेश' का ही बोध कराते हैं। अत· इन शब्दों को पूर्ण पर्यायवाची शब्द कहा जाएगा।

(2) अपूर्ण पर्यायवाची – अपूर्ण पर्यायवाची शब्द वे होते हैं जो स्थूल रूप में तो पर्यायवाची हैं, किन्तु उनके भावों में इतना अंतर होता है कि उनका प्रयोग विशुद्ध पर्याय के रूप में करना उचित नही होता। अतः हमें ऐसे पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते समय

सावधानी बरतनी चाहिए। 'दुःख', 'खेद', 'शोक' तीनों पर्यायवाची से लगते हैं और कुछ लोग इनका पर्यायवाची की तरह प्रयोग भी करते हैं, परंतु इनके भावों में एक निश्चित अन्तर है, *यथा–*

(1) मुझे **दुःख** है कि मैं आपके पत्र का उत्तर नहीं दे पाया।

(2) निवारक नजरबन्दी कानून पर विरोधी नेताओ ने **शोक** प्रकट किया।

(3) आपकी पत्नी की मृत्यु से मुझे बहुत **खेद** है।

इन तीनों ही वाक्यों में इन शब्दो के अशुद्ध प्रयोग किए गए है और इन अशुद्धियो का कारण इन शब्दों को पर्यायवाची मान लेना ही है। इन शब्दों के स्थान पर क्रमशः 'खेद', 'रोष' और 'शोक' शब्दो का प्रयोग किया जाना चाहिए था।

पूर्ण पर्यायवाची शब्द–

1	**अंधकार**	तम, तिमिर, ध्वांत तमिस्रा।
2.	**अभिमान**	अहं, अहंकार, गर्व, घमंड, दर्प, दंभ, मद, मान, अवलेप, अस्मिता, अहम्मन्यता, आत्मश्लाघा, मिथ्याभिमान।
3	**अन्वेषण**	अनुसंधान, खोज, गवेषण, जॉच, छानबीन, पूछताछ, शोध।
4.	**आनन्द**	आमोद, आह्लाद, उल्लास, खुशी, परितोष, प्रमोद, प्रसन्नता, प्रीति, मोद, सुख, हर्ष।
5.	**कोयल**	कोकिल, परभृत, पिक, वनप्रिय, काकलीक
6	**गधा**	गदहा, खर, गर्दभ, चक्रीवान, धूसर, वेशर, रासभ, वैशाखनन्दन।
7.	**गाय**	गौ, गौरी, दोग्ध्री, धेनु, भद्रा, सुरभी।
8	**चोर**	कुंभिल, खनक, चौर, तस्कर, दस्यु, पटच्चर, मोषक, रजनीचर, साहसिक
9	**दया**	अनुकंपा, अनुग्रह, करुणा, कृपा, प्रसाद, मार्दव, संवेदना, सहानुभूति, सांत्वना, क्षमा, क्षमाशीलता।
10	**दुःख**	उत्पीड़न, कष्ट, क्लेश, खेद, पीड़ा, यंत्रणा, यातना, विषाद, वेदना, व्यथा, संकट, संताप, क्षोभ।
11	**मृत्यु**	इंतकाल, देहावसान, निधन, मरण, निर्वाण, मौत, स्वर्गवास
12	**अंग**	भाग, अवयव, कलेवर, अंश, हिस्सा।
13	**आश्रम**	मठ, विहार, कुटि, संघ, स्तर, अखाड़ा
14	**क्रोध**	रोष, कोप, अमर्ष।
15	**नरक**	यमपुर, यमालय, यमलोक, कुम्भीपाक, रौरव।

16.	**पत्थर**	प्रस्तर, पाषाण, पाहन, उपल, अश्म।
17.	**यम**	सूर्यपुत्र, दडधर, कीनाश, कृतांत, श्राद्धदेव, जीवीतेश, अतक, धर्मराज, जीवनपति, यमुनाभ्राता, वैवस्वत, प्रेतराज।
18	**सब**	पूरा, सम्पूर्ण, समस्त, निखिल, पूर्ण, अखिल, सकल, समग्र।
19	**सुन्दर**	सुहावना, मनोहर, अच्छा, खूबसूरत, रुचिर, चारू, लालम, रम्य, रमणीक, चित्ताकर्षक, कमनीय, मनभावन, मजुल, कलित, सुरम्य, उत्कृष्ट, उत्तम।
20	**निन्दा**	घुडकी, झिड़की, डांट, ताड़ना, दोषारोपण, फटकार, बुराई, भर्त्सना।
21	**वसंत**	कुसुमाकर, ऋतुराज, पिकानंद, पुष्पसमय, बहार, मधु, मधुकाल, मधऋतु, माधव।
22	**मित्र**	अभिन्न हृदय, तात, प्रिय, मीत, युद्ध, स्नेही, हितू।
23	**हृदय**	उर, छाती, वक्ष, हिम, वक्षस्थल, हिया।
24.	**अग्नि**	अनल, पावक, कृशानु, दहन, हुताशन, सप्तजिह्व, वह्नि, वैश्वानर, जातवेद।
25	**अन्न**	अनाज, नाज, गल्ला, धान्य, शालि, शस्य, खाद्य।
26	**अमृत**	सुधा, पियूष, अमी, अमिय, शशिरस, सोम।
27.	**असुर**	दैत्य, दानव, दनुज, राक्षस, निशाचर, निशिचर, रजनीचर, तमीचर, खल, यातुधान।
28.	**आकाश**	गगन, आसमान, अम्बर, व्योम, नभ, अनख, रव, भून्य, अन्तरिक्ष।
29.	**इन्द्र**	मघवा, पुरंदर, सुरपति, सुरेश, शचीपति, सहस्राक्ष, सुधन्वा, पर्वतारि, वज्रपाणि।
30.	**ईश्वर**	प्रभु, ईश, परमात्मा, परमेश्वर, अनन्त, अनादि, अलख, अगोचर, स्वामी, ब्रह्म, सच्चिदानन्द।
32.	**कमल**	कंज, पंकज, जलज, तोपज, वारिज, सरोरुह, सरसिज, सरोज, अब्ज, नीरज, राजीव, पारिजात, तामरस, अरविन्द, पद्म, शतदल।
33.	**कामदेव**	मदन, मनोज, मार, मन्मथ, मनसिज, मनोभव, मकर, केतु, मकरध्वज, अनङ्ग, पंचसर, कुसुमायुध, एमर।
34.	**कृष्ण**	: श्याम, केशव, माधव, गोपाल, गिरधारी, गोविन्द, मुरलीधर, ब्रजेश, वासुदेव, हरि, मुरारी, राधारमण, देवकीनन्दन।

35	**गंगा**	भागीरथी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, सुरसरि, त्रिपथगा, देवापगा, नखजा, सुरसरिता।
36	**घर**	गृह, आवास, निवास, आगार, आकर, गेह, निकेतन, सदन, मन्दिर, धाम, भवन, निवेश, आलय, नीड।
37.	**सूर्य**	रवि, दिनकर, प्रभाकर, मित्र, दिनेश सूर, भानु, भास्कर, अर्क, मार्तण्ड, आदित्य, अशुमाली, मरीचिमाली, रश्मिपति, आफताब।
38	**चन्द्रमा**	शशि, चन्द्र, इन्दु, सुधाकर सुधाधर, हिमांशु, नक्षत्रेश, निशाकर, निशापति, रजनीपति, कलानिधि, मयंक, मृगांक, शशांक, द्विजराज, शीतकर।
39	**जल**	नीर, सलिल, वारि, तोय, पय, अम्बु, उदक, जीवन, पानी, आष् विष, अष्।
40	**समुद्र**	सिन्धु, सागर, जलधि, पयोधि, तोयधि, जलनिधि, रत्नाकर, वारिधि, उदधि, अर्णव, वारीश, नदीश, कधि, अम्बुधि, पारावार, अब्धि।
41.	**सिंह**	केसरी, हरि, मृगेन्द्र, पंचानन, मृगराज, वनपति, केहरी, नाहर, गजारि, शार्दूल, पुण्डरीक, शेर, हिंस्र।
42	**हाथी**	हस्ति, गज, द्विप, कुञ्जर, करी, मातग, गयन्द्र, द्विरद, वारण, दन्ती, कुम्भी, नाग, सिन्धुर।
43.	**पवन**	वायु, मरुद्, वातास, अनिल, हवा, बयार, समीर।
44	**पृथ्वी**	. पृथिवी, धरित्री, वसुधा, धरती, धरणी, रसा, भूमि, धात्री, जमीन, क्षिति, अचला।
45.	**पुष्प**	फूल, सुमन, कुसुम, गुल, पाटल, प्रसून।
46	**विष्णु**	लक्ष्मीपति, कमलापति, शान्ताकार, चक्रधर, वज्रधर, चतुर्भुज, पद्मनाम, असुरनिकन्दन, पाञ्चजन्य।
47	**शिव**	पञ्चमुख, रुद्र, शंकर, पशुपति, पीनाकी, भोलानाथ, त्रिशूलपाणी, त्रिपुरारी, त्र्यम्बक, कैलाशी।
48	**बादल**	मेघ, घन, तोयद, जलद, पयोद, वारिद, कन्द, नीरद।
49.	**राम**	. रामचन्द्र, रघुवशमणि, रघुनाथ, सीतापति, मर्यादा पुरुषोत्तम, तुलसीश।
50.	**नदी**	सरिता, प्रवाहिनी, तटिनी, तरंगिनी, दरिया, स्रोतस्विनी. प्रवाहिनी।
51.	**नौका**	तरिणी, नौ, नाव नैया, जलयान, तरी, डोगी।
52.	**बाण**	: इषु, शर, तीर, अनी, विशिख, आभ्रग, शिलीमुख, नाराच।
53.	**तालाब**	. ताल, सर, पुष्कर, सरसि, जलाशय, तडाग, कासार।

54. **रश्मि** · कर, किरण, प्रभा, मरीचि, मयूख, अशु।

55 **तरंग** ऊर्मि, लहर, वीचि।

56 **पति** स्वामी, ईश, नाथ, सौभाग्य, धनी, गृह्यति, वर, भर्त्ता, बलम, भर्तार।

57. **स्त्री** . कलत्र, नारी, महिला, तिय, दारा, अबला, औरत, माननी, मनुजा, कामिनी, वनिता, ललाना, कान्ता, नितम्बिनी, रमणी, प्रमदा, तन्वी, श्यामा।

58. **रात्रि** रजनी, दोषा, तमिस्रा, निशा, निशि, कुहु, शर्वरी, कादम्बरी, यामिनी, निशीथ, विभावरी, क्षणदा, क्षया, तमी।

59 **सेना** अनी, वाहिनी, दल, फौज, आर्मी, कटक, चमु।

60. **दिन** दिवस, वार, अह्न, वासर, दिवा।

61. **अश्व** घोड़ा, तुरग, तुरग, हय, वाजी, तीव्रगामी।

62. **सर्प** सॉप, नाग, वासुकी, द्विजिह्व, विषधर, मणी, मणिधर, अहिभुजंग, व्याल, फणी, उरग, पन्नग।

63. **पर्वत** पहाड़, धरणीधर, अचल, अद्री, गिरि, भूधर, महीधर, नग, शैल।

64. **पक्षी** पॉखी, विहग, विहंग, खग, अण्डज, पतंग, द्विज, शकुनि।

65. **भ्रमर** भौंरा, मिलिन्द, षटपद, मधुकर, मधुय, अलि, द्विरेक, भॅवरा भृग।

66. **गुरु** उपाधाय, अध्यापक, आचार्य, उस्ताद, टीचर, मास्टर।

67 **पत्नी** वधू, बहू, अर्धांगिनी, सुभगा, धन्या, पाणिगृहीता, शयनांगिनी, पार्श्वशायिनी, सौभाग्यवती, वामांगी, कान्ता, वामा, वल्लभा, भार्या।

68. **दन्त** दांत, द्विज. मुखक्षुर।

69 **लक्ष्मी** कमला, पद्मा, चञ्चला, विष्णुप्रिया, सागरिका, इन्दिरा, उलूकवाहिनी, श्री, समुद्रतनया, विष्ण नखा।

70. **सरस्वती** विद्या, पद्मासना, ब्रह्माणी, वाणी, ब्राह्मी, भारती, गिरा, शारदा, इला, वीणापाणि, विद्यात्री, वागेश्वरी।

71. **पार्वती** उमा, गिरिजा, अपर्णा, दक्षा, गौरी, सिंहवाहिनी, चन्द्रघण्टा, कुष्माण्डा, कात्यायनी, कालरात्री, कालिका, जयन्ती, मगला, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, भैरवी, भवानी, सती।

72. **गणेश** : लम्बोदर, विनायक, एकदन्ती, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गजानन, कपिल, गजकर्ण, वक्रतुण्ड।

73 **वानर** . कपि, ऋक्ष, वानर, शाखामृग, मर्कट, लंगूर, नांगल, नीश।

74	**हाथ**		हस्त, पाणी, कर।
75	**स्वर्ण**		सोना, हाटक, कञ्चन, कनक, हिरण्य, हेम, जातरूप, चामीकर, सुवर्ण।
76.	**समूह**	:	समुदाय, निकर, वृन्द, गण, सघ पुञ्ज, समुच्चय, कलाप, यूथ, दल, झुण्ड, टोली, जत्था, राशि।
77	**यम**	·	सूर्यपुत्र, अन्तक, धर्मराज, कृतान्त, दण्डदेव, महिषिवाहन, नरकाधिकारी, नरान्तक।
78	**राजा**		नृप, भूप, भूपति, नरेश, नरेन्द्र, महिपति।
79	**ब्राह्मण**	·	भूदेव, विप्र, बामण, शर्मन्।
80.	**बिजली**		विद्युत, चञ्चला, चपला, सौदामिनी, दामिनी, तडित्, क्षणप्रभा, सम्पा, घनवल्ली।
81	**बाल**		कच, केश, चिकुर, शिरोरुह, अलक।
82	**देह**		कलेवर, तन, वपु, शरीर, विग्रह, गात्र, गात, वदन, काय, तनु।
83.	**अद्भुत**		अद्वितीय, अनुपम, अनूठा, अनोखा, अतुल, अपूर्व, अभूतपूर्व।
84	**अरण्य**	·	जगल, कानन, वन, विपिन।
85	**नयन**	.	ऑख अक्षि, नैन, चक्षु, चख, नेत्र, लोचन, दृग।
86	**आकाश**		व्योम, द्यौ, गगन, नभ, अभ्र, अम्बर, अन्तरिक्ष, अनन्त, शून्य।
87	**आम**		सहकार, रसाल, आम्र, प्रियम्बु, अमृतफल।
88	**इच्छा**		आकाक्षा, इप्सा, चाह, वाञ्छा, लिप्सा, ईहा।
89	**इन्द्र**	.	सुरपति, सुरेन्द्र, माधव, शक्र, पुरंदर, पुरहूत, जिष्णु, देवराज, शचीपति।
90	**कपडा**		वस्त्र, कार्पट, चीर, अम्बर, वसन, दुकूल, पट।
91	**चतुर**		कुशल, निपुण, प्रवीण, पटु, नागर, सयाना, होशियार।
92	**चादनी**		चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना।
93	**चादी**		रजत, कलधौत, जातरूप, रूपा।
94.	**यमुना,**		जमुना, अर्कजा, सर्यतनया, कालिन्दी, तरणितनुजा, कृष्णा, रविनन्दिनी।
95	**तलवार**		असि, खड्ग, कृपाण, करवाल, चन्द्रहास।
96.	**दास**		सेवक, किंकर, नौकर, चाकर, भृत्य, अनुचर।

97	**देवता**	अमर, सुर, देव, निर्जर, विवुध, गीर्वाण।
98	**द्रव्य**	धन, दौलत, सम्पत्ति, विभूति, सम्पदा, ऐश्वर्य, भग।
99.	**पुत्र**	सुत, पूत, तनय, बेटा, आत्मज, नन्द, सूनु।
100	**पुत्री**	सुता, तनया, बेटी, आत्मजा, नन्दिनी, सूनू, दुहिता, तनुजा।
101	**बह्मा**	स्वयम्भू, चतुरानन, कर्तार, विधि, विधाता, सृष्टा, प्रजापति, अब्जयोनि, अज, विरञ्चि।
102	**हनुमान**	पवनसुत, आञ्जनेय, केसरीनन्दन, मारुति, कपीश्वर, बजरगबली।

अपूर्ण पर्यायवाची शब्द

निर्धन	धन के अभाव से ग्रस्त व्यक्ति निर्धन होता है।
दीन	आश्रयहीन व्यक्ति दीन होता है।
दरिद्र	यथेष्ट धन के अभाव से ग्रस्त व्यक्ति दरिद्र होता है।
करुणा	किसी की पीड़ा को देखकर द्रवित होकर उसे दूर करने की इच्छा।
दया	किसी के दुःख को देखकर उसकी सहायता करने के लिए प्रेरित होना।
कृपा	किसी के दुःख को का निवारण करने की उदार मनोवृत्ति।
अनुकम्पा	किसी के दुःख को देखकर सवेदनशील हो जाना अनुकम्पा है।
अनुग्रह	दूसरो के इष्ट का सम्पादन अनुग्रह कहलाता है।
सहानुभूति	किसी के दुःखों को उसी की तरह अनुभव करना।
कर्त्तव्य	अपेक्षित एव निष्ठायुक्त कार्य कर्त्तव्य कहलाता है।
कर्म	नैतिक एवं धार्मिक कृत्यों को कर्म कहते हैं।
कार्य	जो करने योग्य हो, वह कार्य होता है।
कष्ट	मन और शरीर की समान असुविधा।
दुःख	मानसिक आकुलता या अस्थिरता दुःख होता है।
क्लेश	शारीरिक असुविधा।
खेद	चित्त की शिथिलता अथवा ग्लानि की अनुभूति।
वेदना	मन एवं शरीर की असुविधाओं की तीव्र अनुभूति।
पीड़ा	चुभन की अनुभूति।
व्यथा	आघात से उत्पन्न चुभन या दर्द।

काल	समय का अखण्ड रूप।
समय	काल की विद्यमान अवधि।
अवधि	निश्चित सीमा मे बँधा हुआ काल।
युग	काल का एक भाग।
किराया	अरबी शब्द, जो धन किसी वस्तु के काम में लेने के बदले मे दिया जाता है।
भाड़ा	हिन्दी तद्‌भव शब्द। इसी अर्थ में प्रयुक्त।
खटपट	अनबन या झगडा।
गड़बड़	कुछ अवरोध उत्पन्न होना।
खाल	किसी मनुष्य या पशु का बाहरी आवरण।
चमड़ा	मरे हुए पशु की खाल जो काम मे लेने योग्य कर ली गयी हो।
चमड़ी	'खाल' के अर्थ मे ही प्रयुक्त ।
खोज	अलक्षित वस्तु को लक्षित कर लेना खोज होती है।
शोध	ज्ञान के क्षेत्र मे नवीन तथ्यो या सिद्धातो का प्रतिपादन।
अनुसधान	अस्तित्व वाली वस्तु को निश्चित अस्तित्व प्रदान करने का कार्य।
आविष्कार	जिस वस्तु का अस्तित्व ही न हो उसे अस्तित्व मे लाना।
गीत	जिसे गाया जा सके, वह गीत होता है।
सगीत	गाने के साथ वाद्य यत्रो का सहयोग संगीत कहलाता है।
चिंता	अभाव के कारण उत्पन्न आकुलता एव चांचल्य।
परवाह	किसी की ओर ध्यान देना या किसी की आवश्यकता का अनुभव करना।
चिन्तन	किसी विषय पर गंभीरता से विचार करना।
चिह्न	मूर्त आसार या दिखाई देने वाले गुण।
लक्षण	अमूर्त आसार या दिखाई न देने वाले गुण।
परिभाषा	किसी के स्वरूप को संक्षिप्त किन्तु पूर्ण रूप में प्रकट करना।
विशेषता	वे गुण या लक्षण जो भेदक का कार्य करते हैं या किसी को सामान्य से पृथक करते हैं।

छाया	किसी आकृति का प्रकाश में दिखाई देने वाला प्रकाशहीन रूप।
परछाई	किसी आकृति का पारदर्शी वस्तु के माध्यम से दिखाई देने वाला रूप।
बिम्ब	किसी आकृति या विषय का पूर्ण दृश्य।
प्रतिबिम्ब	बिम्ब का पारदर्शी वस्तुओं के माध्यम से दिखाई देने वाला रूप।
परीक्षा	किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के गुणों का निश्चित शैली से अंकन करने का कार्य।
जॉच	किसी घटना की तह तक पहुंचना जॉच कहलाता है।
ज्ञान	किसी वस्तु या विषय की जानकारी।
बोध	ज्ञान का निश्चय बोध कहलाता है।
विवेक	भले-बुरे की पहचान का माध्यम।
बुद्धि	कर्त्तव्यादि का तर्क-वितर्क के आधार पर निर्णय करने की शक्ति।
मति	चितन का स्थल।
प्रतिभा	सर्जन और अनुभव की दात्री जन्म-जात शक्ति।
पण्ड्या	सदसद् विवेक का ज्ञान कराने वाली शक्ति।
टीका	किसी अश का उसी भाषा या अन्य भाषा मे शब्दार्थ बता देना टीका कहलाती है।
भाष्य	किसी ग्रंथ की सूक्ष्म विश्लेषण एव विवेचन सहित की गई व्याख्या।
व्याख्या	किसी विषय का स्पष्ट अंकन।
लगाएँ	. अर्थ शब्द का केवल भाव प्रकट कर देना।
तंद्रा	साधारण नीद/ झपकी।
निद्रा	पूरी तरह से सो जाना।
तट	समुद्र, नदी, तालाब आदि के पास की भूमि को तट कहते हैं।
किनारा	पृथ्वी का वह भाग जो जल से जुडा रहता है, उसे किनारा कहते हैं।
पुलिन	पृथ्वी का वह भाग जो नदी, तालाब आदि के कारण नम रहता है।
तीर	पृथ्वी के उस भाग को कहते हैं जो सागर, नदी, तालाब आदि के पानी से भरता रहता है।

सैकत	सागर, नदी के पास की बालू भूमि को सैकत कहते हैं।
तर्क	सिद्धातों की स्थापना के लिए तर्क दिए जाते है।
युक्ति	कार्य की निष्पन्नता के लिए युक्ति बतायी जाती है।
तालिका	सामान की तालिका बनाई जाती है।
सूची	एक ही कार्य में लीन वस्तुओं, व्यक्तियो, स्थानो आदि की सूची बनाई जाती है।
तुलना	समान और असमान दोनों प्रकार की वस्तुओं, व्यक्तियों आदि की तुलना की जाती है।
मिलान	समान वस्तुओं का मिलान किया जाता है।
समानता	एक जैसी वस्तुओं की समानता बताई जाती है।
तृप्ति	जब इच्छा की पूर्णतः पूर्ति हो जाती है, तब वह तृप्ति कहलाती है।
सतोष	जो मिल जाए उसी में सुख का अनुभव करना संतोष होता है।
त्रुटि	किसी कार्य में न्यूनता रह जाना त्रुटि होती है।
अशुद्धि	लेखन आदि में रही न्यूनता को अशुद्धि कहा जाता है।
दोष	किसी बुराई को दोष कहा जाता है।
द्वंद्व	दो व्यक्तियों या भावों का द्वंद्व होता है।
संघर्ष	आपस में टकराना घर्षण या संघर्ष कहलाता है।
धारणा	विचारों की निश्चित छाप धारणा होती है अर्थात् जिन्हें धारण कर लिया गया है।
विचार	किसी विषय के प्रति निश्चित कर लिया गया चितन।
नमस्कार	बराबर वालों को और कभी-कभी बडो को भी।
प्रणाम	सदैव बड़े व्यक्तियों को।
नमस्ते	सामान्य रूप में प्रयुक्त अभिवादन शब्द।
नाप	गजों, लीटरों आदि से माप।
माप	सेर, मीटरो आदि के नाप।
निवेदन	बड़ों के प्रति विनीत भाव से व्यक्त हार्दिक इच्छा।
आवेदन	किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए की गई विनती।

प्रार्थना	किसी विशेष इच्छा या आकाक्षा मे प्रेरित होकर की गई विनती।
नेता	जिसके अनेक अनुयायी हो, वह नेता कहलाता है।
नायक	जिसके अधीनस्थ अनेक व्यक्ति हो वह नायक कहलाता है।
परम्परा	लम्बे समय से चली आ रही जीवन की निश्चित रीतियाँ।
मर्यादा	जीवन की निश्चित नैतिक सीमा।
अभिसमय	कुछ समय से प्रचलित, किंतु स्वीकार कर ली गई जीवन की निश्चित रीतियाँ।
सीमा	अवधि, स्थान या कार्य का निश्चित अकन।
परामर्श	किसी विषय पर परिणाम को दृष्टि मे रखते हुए लिया या दिया गया मत।
मत्रणा	गुप्त रीति से विश्वस्त व्यक्ति से किया जाने वाला विचार-विमर्श।
षड्यत्र	किसी को भी हानि पहुंचाने के लिए बनाई गई योजना।
पारितोषिक	प्रतियोगिता में विजयी होने के उपलक्ष्य में दी जाने वाली वस्तु।
पुरस्कार	अच्छे कार्यों या सेवा के उपलक्ष्य में दी जाने वाली वस्तु।
वृत्ति	गरीबी या किसी अन्य कारण से दिया जाने वाला भत्ता।
बल	बल शारीरिक होता है।
शक्ति	शक्ति मानसिक होती है।
पराक्रम	शक्ति का विभिन्न रूपों मे प्रदर्शन।
शौर्य	बल में जब तेजस्विता का भाव भी आ जाता है तो शौर्य होता है।
वीरता	उत्साहयुक्त कार्य-सम्पादन का भाव वीरता होती है।
बाधा	मूर्त और भौतिक होती है।
अवरोध	मानसिक और अमूर्त होता है।
मंत्री	राजकाज में नीति विषय पर गुप्त परामर्श देने वाला मत्री होता है।
सचिव	राज्य या संस्था की नीतियों को कार्यान्वित करने वाला सचिव कहलाता है।
स्त्री	सम्पूर्ण स्त्री जाति के लिए प्रयुक्त शब्द।
पत्नी	विवाहित स्त्री को पत्नी कहते हैं।

महिला	सम्भ्रांत परिवार की नारी के लिए प्रयुक्त होता है।
योग्यता	कार्य के यथाविधि सम्पादित करने की विशेषता।
क्षमता	काम कर मकने की शक्ति।
लज्जा	पुरुष दर्शन से नारियो में और बुरे कामो के प्रति नर-नारी दोनो में सकुचित हो जाने की चित्त-वृत्ति लज्जा कहलातो है।
संकोच	किसी कार्यादि के करने मे मन का सिकुडना सकोच कहलाता है।
ग्लानि	मानसिक कष्ट, शारीरिक रोग, भूख-प्यास आदि से उत्पन्न निर्बलता जन्य एक प्रकार का दुख।
ब्रीडा	पराजय, प्रतिष्ठा भंग आदि से उत्पन्न चित्तवृत्ति ब्रीडा कहलाती है।
विकास	किसी व्यक्ति या देश का प्रगति पर अग्रसर होना विकास होता है।
विस्तार	किसी वस्तु या देश का फैलाव विस्तार कहलाता है।
पूजा	मत्र-विधि एव पूज्य भाव से देवता आदि की प्रार्थना पूजा कहलाती है।
उपासना	देवताओ या पूज्य जनो की सेवा मे समर्पित होना उपासना है।
अर्चना	पत्र- पुष्पादि के समर्पण के साथ प्रार्थना करना अर्चना है।
विद्या	जानने के भाव को विद्या कहते हैं। ज्ञान का विशेष विभाग।
शिक्षा	सीखने के भाव को शिक्षा कहते हैं। विद्या पढ़ने और कला सीखने का भाव।
वैर	वीर के भाव को वैर कहते है, जिसमें विरोध और प्रतिशोध की भावना निहित होती है।
शत्रुता	अपने विषय के (क्षेत्र के) अनन्तर किसी एक विषय पर दो के दावों से उत्पन्न विरोध का भाव।
शंका	साधारणत की गई अमगल की कल्पना।
सदेह	किसी वस्तु या भाव के रूप का पूर्ण निश्चय न होना।
भ्रम	किसी वस्तु या भाव का मिथ्या निश्चय।
आशंका	किसी अमंगल की कल्पना से मन मे उठने वाला भाव।
शील	विनम्रता और शिष्टता से युक्त स्वभाव एवं उच्च चरित्र।

स्वभाव	व्यक्ति या वस्तु मे सदा एक-सा बना रहने वाला मुख्य या मूल गुण।
प्रकृति	वस्तु अथवा व्यक्ति का मूल गुण।
प्रवृत्ति	मन का किसी ओर होने वाला लगाव या झुकाव।
सभ्यता	भौतिक उन्नति सभ्यता कहलाती है।
संस्कृति	मानसिक एव आध्यात्मिक उन्नति सस्कृति कहलाती है।
समाचार	वे सूचनाए जिनके साथ व्यक्ति का सीधा सम्बन्ध न हो वह उसके लिए समाचार होता है।
सूचना	किसी वस्तु, विषय या व्यक्ति से सम्बद्ध मिलने वाली निश्चित जानकारी।
संदेश	किसी के माध्यम से भेजी जाने वाली जानकारी सदेश कहलाता है।
सम्राट	जिसके अधिकार में अन्य राजा भी हो।
राजा	एक प्रदेश या देश का सप्रभुता सम्पन्न व्यक्ति।
साथ	साधारणतया किसी का सामीप्य या सान्निध्य मिलना।
सगति	जिनके साथ पूरी तरह सचरण करना।
आमंत्रण	विचार-विमर्श के लिए अथवा किसी उत्सव विशेष में सम्मिलित होने के लिए भेजा गया बुलावा।
निमंत्रण	भोजनादि के लिए भेजा गया बुलावा।
साधन	जिसके द्वारा या जिसकी सहायता से कार्य सिद्ध होता हो, वह उपकरण साधन कहलाता है।
माध्यम	दो वस्तुओं या व्यक्तियों को जोडने वाला आधार माध्यम कहलाता है।
सेवा	बड़े, पूज्य या स्वामी के लिए किया गया कार्य सेवा कहलाता है।
शुश्रूषा	जब दीन, दुखी, अस्वस्थ, असमर्थ आदि किसी की भी तद्नुसार देखभाल की जाती है, उसे शुश्रूषा कहते हैं।
परिचर्या	केवल रोगी की पूर्ण देखभाल को परिचर्या कहेंगे।
पुलकित	प्रेम और हर्ष में व्यक्ति पुलकित होता है।
रोमाचित	प्रेम और हर्ष के अतिरिक्त भय या आशंका से रोमों का खडा हो जाना रोमांचित होता है।

अधिकारी	जिसकी प्राप्ति अधिकार का अंग हो। यथा- पुरस्कार का अधिकारी।
भागी	किसी आधार पर किसी का भाग जिसमे बनता है। यथा - दण्ड का भागी।
संग्रह	अनियमित एवं सामान्य वस्तुओ का एकत्रीकरण।
सकलन	नियमित एवं विशिष्ट वस्तुओं का एकत्रीकरण।
आगामी	निश्चित रूप से आने वाली स्थिति।
भावी	भविष्य की अनिश्चित स्थिति।
कविता	यह पद्य या गीत की बोधक होती है।
काव्य	कविताओ का सग्रह या प्रबंध काव्य।
विलाप	रोते-रोते कुछ कथन भी करते जाना।
प्रलाप	अचेतनावस्था में अनर्गल बातें करना।
भाव	हृदयस्थ मनोवृत्तियाँ भाव होती है।
विचार	मस्तिष्क के चितन से निश्चित किए गए तथ्य विचार होते है।
घन	भयकरता का प्रतिपादन करने के लिए प्रयुक्त।
मेघ	शीतलता एव सुहावनेपन का प्रतीक।
जलद	विनय का प्रतीक।
समीर	मंद वायु समीर कहलाती है।
पवन	कभी धीरे और कभी तेज चलने वाली वायु पवन कहलाती है।
बयार	शीतल, मद एवं सुगंधित वायु को बयार कहते है।
ऑधी	जिस वायु के चलने पर मिट्टी भी उड़ने लगे और अंधेरा छा जाए, ऑधी कहलाती है।
प्रभजन	मिट्टी, तिनको से युक्त वायु का चक्राकार रूप में तीव्र गति से चलना प्रभजन कहलाता है। यथा –तूफान।

विलोम शब्द

शब्दों की दो क्रियाएं मुख्यत. घटित होती हैं। एक ओर भाव के सूचक शब्द होते हैं, तो दूसरी ओर अभाव के बोधक शब्द होते हैं। कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से भाव और अभाव के द्योतक होते हैं, तो कुछ भाव बोधक शब्दो के साथ 'अ', 'अन्' और 'वि' प्रत्यय लगाकर उनके अभाव को व्यक्त किया जाता है। कभी-कभी अच्छाई के बोधक परसर्ग से

युक्त शब्द का अभाव बोधन 'दुर' और 'दुस्' जैसे परसर्ग लगाकर भी करवाया जाता है। कही-कही 'अव' और 'अप' उपसर्ग लगाए जाते हैं। अत विलोम शब्दो का ज्ञान भाषा अध्येताओं के लिए परमावश्यक होता है। ऐसे महत्वपूर्ण शब्दो की सूची प्रस्तुत की जा रही है –

अधम	उत्तम	अगम	सुगम
अगीकार	इनकार	अचल	चल
अति	अल्प	अतरंग	बहिरग
अर्थ	अनर्थ	अधिकतम	न्यूनतम
अंधकार	प्रकाश	अनत	सांत
अनुकूल	प्रतिक्ल	अनुलोम	विलोम या प्रतिलोम
आदि	अत	अतर्मुखी	बहुर्मुखी
अपना	पराया	अमर	मर्त्य
अरुचि	रुचि	अस्वस्थ	स्वस्थ
अवनत	उन्नत	आकर्षण	विकर्षण
आचार	अनाचार	आर्द्र	शुष्क
आमिष	निरामिष	आय	व्यय
आयात	निर्यात	आवश्यक	अनावश्यक
आज्ञा	अवज्ञा	ईद	मुहर्रम
उचित	अनुचित	उच्च	निम्न
उत्तम	अधम	उत्साह	निरुत्साह
कपूत	सपूत	नकली	असली
पाप	पुण्य	यौवन	वार्धक्य
अथ	इति	उत्तरायन	दक्षिणायन
अवसर	अनवसर	उत्तर	दक्षिण
अनुग्रह	विग्रह	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
अज्ञ	विज्ञ	उग्र	सौम्य
अस्त	उदय	एकता	अनेकता
अभिज्ञ	अनभिज्ञ	क्रय	विक्रय
अनुराग	विराग	कपटी	निष्कपट

आदान	प्रदान	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
आस्तिक	नास्तिक	गृहस्थ	संन्यासी
आवृत्त	अनावृत्त	गरल	सुधा
आक्रात	अनाक्रात	करुणा	निष्ठुरता
आरोह	अवरोह	कृतज्ञ	कृतघ्न, अकृतज्ञ
आवरण	अनावरण	घात	प्रतिघात
आसक्त	अनासक्त	चर	अचर
आवाहन	विसर्जन	जड	चेतन
आविर्भाव	तिरोभाव	जीवन	मरण
इष्ट	अनिष्ट	नूतन	पुरातन
इहलोक	परलोक	दिन	रात
उत्थान	पतन	अह	निशा
उत्कृष्ट	निकृष्ट	दिवा	रात्रि
उन्नत	अवनत	निराकार	साकार
उन्नति	अवनति	तरुणी	वृद्धा
उपकार	अपकार	कुकर्म	सुकर्म
उदात्त	अनुदात्त	वाद	प्रतिवाद
भूत	अभूत	सुयश	अपयश
बद्ध	मुक्त	सवाद	विवाद
बधन	मुक्ति	शिष्ट	अशिष्ट
विमुख	सम्मुख	सरल	जटिल
भद्र	अभद्र	ऋजु	तिर्यक
मूक	वाचाल	ऊंचाई	नीचाई
योगी	अयोगी, भागी	भलाई	बुराई
लाभ	हानि	सबल	दुर्बल
विधि	निषेध	स्वस्थ	अस्वस्थ
स्तुति	निन्दा	स्थूल	सूक्ष्म
सयोग	वियोग	बलिष्ठ	निर्बल

सरस	नीरस	कुलीन	अकुलीन
साधु	असाधु	सत्य	असत्य
हित	अहित	शूर	कायर
सुमति	कुमति	सुकाल	अकाल
सुबोध	दुर्बोध	खुशबू	बदबू
सुगन्ध	दुर्गन्ध	काला	गोरा
शेष	अशेष	सुरूप	कुरूप
सम	विषम	विलम्ब	अविलम्ब
सधवा	विधवा	प्रचलित	अप्रचलित
संश्लेषण	विश्लेषण	मृत्युलोक	स्वर्गलोक
स्वप्न	जागरण	आकाश	पाताल
सार्थक	निरर्थक	सुन्दर	असुन्दर
व्यष्टि	समष्टि	सुरुचि	कुरुचि
शोषक	पोषक	प्रसाद	अवसाद
देर	सबेर	विश्वास	अविश्वास
कुलटा	कुलीना	सुरक्षा	अरक्षा
प्रात·	साय	आरम्भ	अन्त
ऊपर	नीचे	पालक	घातक
सुर	असुर	सुमुख	दुर्मुख
पक्का	कच्चा	अस्त्र	निरस्त्र
लघु	दीर्घ	लम्बाई	चौडाई
ज्ञानी	अज्ञानी	अनुकूल	प्रतिकूल
मान्य	अमान्य	समझ	नासमझ
स्वीकृत	अस्वीकृत	सुबुद्धि	दुर्बुद्धि
जन्म	मरण	सुपुत्र	कुपुत्र
सामान्य	असामान्य	सुपात्र	कुपात्र
योग	नियोग	सकलंक	निष्कलंक
योगात्मक	अयोगात्मक	भाव	अभाव

गम्भीर	अगम्भीर	सुफल	कुफल
सुवाच्य	दुर्वाच्य	सर्दी	गर्मी
वाच्य	अवाच्य	शत्रु	मित्र
कठिन	सरल	राग	द्वेष
अवरुद्ध	अनवरुद्ध	पाठ्य	अपाठ्य
वाद	विवाद	इच्छा	अनिच्छा
अनुरोध	प्रतिरोध	कमी	वृद्धि
आपत्ति	अनापत्ति	बाल	वृद्ध
विरोध	समर्थन	कर्त्तव्य	अकर्त्तव्य
नैतिक	अनैतिक		

सम्पूर्ण वाक्य के लिए एक शब्द

वाक्य खण्ड	एक शब्द
करने की इच्छा	चिकीर्षा,
दो वेदों को जानने वाला	द्विवेदी,
तीन वेदों को जानने वाला	त्रिवेदी,
चार वेदों की जानने वाला	चतुर्वेदी,
पर्वत की कन्या	पार्वती
जिसके पाणि (हाथ) में चक्र है	चक्रपाणि (विष्णु)
जिसके पाणि (हाथ) मे वज्र है	वज्रपाणि (इंद्र)
जिसके पाणि में वीणा है	वीणापाणि (सरस्वती)
जिसके चार भुजाएं हैं	चतुर्भुज
जिसके दस आनन (सिर) हैं	दशानन (रावण)
जिसके शेखर पर चंद्र हो	चद्रशेखर (शिव)
जिसके चार मुख हैं	चतुरानन
जिसके चार पैर है	चतुष्पद (चौपाया)
जिसमें तेज है	तेजस्वी
जिसमें तेज नहीं है	निस्तेज
जिसके नख सूप के समान हैं	शूर्पनखा
जिसकी गर्दन सुंदर हो	सुग्रीव

जो स्त्री कविता रचती हो	कवयित्री
जो पुरुष कविता रचता हो	कवि
जो शत्रु की हत्या करता है	शत्रुघ्न
जिसने माता की हत्या की हो	मातृहन्ता
जिसने पिता की हत्या की हो	पितृहन्ता
जो अपनी हत्या करता है	आत्मघाती
जो तीनो कालो को देखता है	त्रिक लदर्शी
जो तीनों कालों को जानता है	त्रिकालज्ञ
जो गिरा हुआ है	पतित
पडितो में भी पडित	पंडितराज
पाचाल देश की रहने वाली	पांचाली
पिता के श्वसुर की पत्नी	नानी
पाने की इच्छा	लिप्सा
पेट की आग	जठरानल (जठराग्नि)
जंगल की आग	दावानल (दावाग्नि)
समुद्र की आग	बड़वानल
मेघ की तरह नाद करने वाला	मेघनाद
भटकते रहने के चरित्र वाला	यायावर
जीतने की इच्छा	जिगीषा
तैरने की इच्छा	तितीर्षा
देखने की इच्छा	दिदृक्षा
जिसका पेट (उदर) लम्बा हो	लम्बोदर (गणेश)
जिसके तीन नेत्र हो	त्रिनेत्र (शिव)
सभी जातियों से सम्बन्ध रखने वाला	अंतर्जातीय
जिसको विषय की पूर्ण जानकारी हो या जिसके पास विद्या हो	विद्वान्
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
जो बहुत कम जानता हो	अल्पज्ञ

जिनकी मख्या का निश्चित ज्ञान न हो	असंख्य
जिनकी मख्या की गणना नही हो सके--	अगणित
जिसकी कल्पना भी न की जा सके—	कल्पनातीत
जो भविष्य के परिणामो को सोचने की क्षमता नही रखता हो—	अदूरदर्शी
जो भावी परिणामों को सोचने की क्षमता रखता हो—	दूरदर्शी
जो किसी के किए गए उपकार को याद रखता है—	कृतज्ञ
जो किसी के किए गए उपकार को भूल जाता है—	कृतघ्न
जिस वस्तु या बात का कोई आधार न हो—	निराधार
जो वेदो को प्रमाण मानता हो या ईश्वर में विश्वास रखता हो—	आस्तिक
जो वेदों को प्रमाण नहीं मानता हो या ईश्वर में विश्वास नहीं रखता हो—	नास्तिक
जो बहुत अधिक बोलता हो—	वाचाल, मुखर
जो कुछ भी नहीं बोल पाता हो—	मूक या गूंगा
जिस बच्चे के मां बाप न हों—	अनाथ
जिस स्त्री का पति मर गया हो—	विधवा
जिस पुरुष की पत्नी मर मई हो—	विधुर
जो सब कुछ करने की क्षमता रखता हो—	सर्वशक्तिमान
जिसकी सर्वत्र व्याप्ति हो—	सर्वव्यापी
जिसकी शादी न हुई हो—	कुंआरा (पु.) कुंआरी (स्त्री)
जिस स्त्री के सन्तान नही होती हो—	बॉझ, बन्ध्या
जिस पुरुष के कोई सन्तान न हो—	निस्सन्तान
जिससे आत्मा और परमात्मा पर चिन्तन किया जाता हो—	दर्शन
जो पहले कभी नही हुआ हो—	अभूतपूर्व
जो पहले कभी नहीं सुना गया हो—	अश्रुतपूर्व
जीवन की इच्छा रखना—	जिजीविषा
मोक्ष की इच्छा रखने वाला—	मुमुक्षु
कुछ जानने की इच्छा रखने वाला—	जिज्ञासु

जिसमें सहन करने की और क्षमा कर देने की क्षमता हो—	तितिक्षु
जिसमें सहन करने की क्षमता हो—	सहिष्णु
जो स्वय पढ़कर स्वय को पढ़ाता हो—	स्वयंपाठी
पीने योग्य पदार्थ–	पेय
जो जीवित होता हुआ भी मृत के समान हो —	जीवनन्मृत
जो अन्तिम घडियां गिन रहा हो—	म्रियमाण, मुमूर्षु
जो सदा सहायता के लिए दूसरों का मुख ताकता हो–	परामुखापेक्षी
जो देखते-देखते लुप्त हो जाए—	अन्तर्धान
जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों रहित हो—	निर्गुण
जो सत्व गुण से युक्त हो—	सगुण
जिसका कोई आकार नहीं हो—	निराकार
जिसका कोई आकार हो—	साकार
जिसकी भुजाएँ घुटनों का स्पर्श करती हों—	आजानुबाहु
जो स्त्री कुल को कलंक लगाए —	कुलटा
जहॉ पर पहुचना सम्भव न हो—	अगम्य
जहॉ पर कठिनाई से पहुंचा जा सके—	दुर्गम्य (दुर्गम स्थान)
जिसका जन्म माँ के गर्भ से न हुआ हो—	अयोनिज़
जिसका जन्म नही होता हो—	अज
जिसका जन्म अण्डे से होता हो—	अण्डज
जो बीज को फाड़कर जन्म लेता है—	उद्‌बिज
जो जरायु (जेर या नाल) से उत्पन्न होता है।	जरायुज
जो पसीने (स्वेद) से उत्पन्न होता है—	स्वेदज
जो युद्ध में स्थिर रहता है —	युधिष्ठर
जिस पद के लिए वेतन का प्रावधान न हो सके—	अवैतनिक
इन्द्रियों मे जिसका ज्ञान न हो सके —	अगोचर
जिस भूमि में उर्वरता की क्षमता हो—	उर्वरा-
जिसका निवारण सम्भव न हो सके—	अनिवार्य
जिसका परिहार सम्भव न हो सके–	अपरिहार्य

किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान रखने वाला—	विशेषज्ञ
जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली हो—	लब्धप्रतिष्ठ
जिसकी धारणा शक्ति प्रबल हो—	मेधावी
प्राचीन काल से सम्बद्ध शास्त्र या ज्ञान—	पुरातत्व
समस्त पृथ्वी से जिसका सम्बन्ध हो—	सार्वभौमिक
सारी जनता से जिसका सम्बन्ध हो—	सार्वजनिक
सभी कालों से जो सम्बद्ध हो—	सर्वकालिक
जिसे अत्यधिक कठिनाई से पार किया जा सके—	दुस्तर
जो जनसमुदाय का समान रूप से प्रिय हो—	लोकप्रिय
जिसका प्रचलन समाप्त हो गया हो—	अप्रचलित
जिसका केवल जनता में प्रचलन हो—	लोक प्रचलित
जिसका यशोगान पुण्यदाता हो—	पुण्यश्लोक
पैरों से लेकर मस्तक तक—	आयादमस्तक
बालकों से लेकर वृद्ध तक समस्त—	आबालवृद्ध
सम्पूर्ण जीवन तक—	आजन्म
जन्म के साथ ही जो प्राप्त हो गई हो—	जन्मजात
जिसका कोई शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ हो—	अजातशत्रु
जिसके मन में अस्थिरता हो—	अन्यमनस्क
जिसका मन किसी भी निर्णय पर स्थिर न रहता हो—	अस्थिरमस्तिष्क
जिसको काटा न जा सके—	अकाट्य
जिसका वर्णन नही किया जा सके—	अवर्णनीय
जिसको लोगों ने मान्यता प्रदान कर दी हो—	गणमान्य
जिसकी गणना प्रतिष्ठा प्राप्त लोगों में की जाती हो—	गणमान्य
जिसकी किसी से उपमा नही दी जा सके—	अनुपम, निरुपम
जिसकी किसी से तुलना नही की जा सके—	अतुलनीय, अतुल
जिसके समान कोई दूसरा न हो—	अद्वितीय
जो घटित न हो सके, अथवा जिसका अस्तित्व न हो—	असम्भव
आशा से अधिक प्राप्ति—	आशातीत

जिसकी आशा ही नहीं की गयी हो—	अप्रत्याशित
जिसके सम्बन्ध मे सोचा न जा सके—	अचिन्तनीय
जिसकी अभिव्यक्ति वाणी मे सम्भव न हो—	अनिर्वचनीय
आसपास बैठकर किसी विषय पर विचार-विमर्श करना—	उपनिषद्
अप्रत्याशित साहस के साथ मृत्यु का वरण करना —	जौहर
क्या करे और क्या न करे की स्थिति—	किंकर्त्तव्यविमूढ
वृक्षों एव लताओं के योग से आच्छादित सुरम्य स्थान—	कुञ्ज, निकुञ्ज
जो स्थान रमणीक हो अथवा जहां पर भली प्रकार रमण किया जा सके—	सुरम्य
जिसने मौन रहने की पूर्ण क्षमता प्राप्त कर ली हो—	मुनि
जिसने वेद के मन्त्रों को देखा है—	ऋषि
जो कठोर साधना में रत हो—	तपस्वी
जहा नाटक खेला जाता है—	रंगमंच
रंगमच के पीछे का भाग जहा पर पात्र वेशभूषा धारण करते हैं—	नैपथ्य
जिस समय कार्य-सम्पादन आवश्यक हो—	यथासमय
अपनी शक्ति के अनुसार—	यथाशक्ति
जिस स्त्री का कोई चरित्र न हो—	स्वैरिणी
जब नारी को मासिक धर्म प्रारम्भ हो जाता है—	रजस्वला
व्याकरण ग्रन्थ का प्रणेता—	वैयाकरण
जिस सेना में रथ, हाथी, घोडा और पैदल चार वर्ग होते हैं—	चतुरंगिणी
जो कठोर यातनाएं देता हो—	आततायी
जो एक स्थान पर स्थायी रूप से न रहता हो—	यायावर
जिसका वाणी पर पूर्ण अधिकार हो—	वाक्पति
दो पहाड़ों के बीच का खाली सम स्थान—	उपत्यका
पहाड के ऊपर की सम भूमि —	अधित्यका
जिस स्त्री के कोई पुत्र न हो —	निपूती
जो यन्त्र स्वयं द्वारा चालित हो—	स्वचालित

जिस घर मे कन्या की शादी नहीं की गई हो—	कुआरी देहली
जिसका मूल रूप स्वनिर्मित हो—	मौलिक
जिसका अनुकरण करना उपयोगी हो—	आदर्श
जिसकी कल्पना भी नही की जा सके—	अकल्पनीय
वह काव्य, वस्तु या विचार जो काल-कलवित नहीं होता—	कालजयी
जिस राष्ट्र का सर्वोपरि प्रतिनिधि चुनाव से आता हो—	गणराज्य
जो भोजन मे मासादि का सेवन नही करता—	निरामिषभोजी
वे प्राणी जो जल मे जीवित रहते हैं—	जलचर
जो अपने पैरों पर खडा होकर जीवन यापन मे सक्षम हो—	स्वावलम्बी
जिस कार्य को सम्पन्न करना कठिन हो—	दुष्कर

निश्चित संकेतात्मक शब्द

वे शब्द जो किसी एक निश्चित सकेत, भाव या नाम का ही वोध कराते हैं, निश्चित सकेतात्मक शब्द कहलाते हैं; यथा -

1.	**ऐरावत**	इद्र के हाथी का नाम।
2.	**अप्सरा**	इन्द्र की नर्तकियों के लिए प्रयुक्त होता है।
3.	**पिनाक**	शिवजी के धनुष का नाम।
4.	**सारग**	विष्णु के धनुष का नाम।
5.	**पाञ्चजन्य**	विष्णु के शख का नाम।
6.	**देवदत्त**	अर्जुन के शंख का नाम।
7.	**गाडीव**	अर्जुन के धनुष का नाम।
8.	**पुण्डरीक**	श्वेत कमल।
9.	**कोकनद**	लाल कमल।
10.	**चेतक**	महाराणा प्रताप के घोडे का नाम।
11.	**आश्रम**	ऋषियों के रहने एवं अध्यापन का स्थान।
12.	**मेनका**	एक अप्सरा जिसने विश्वामित्र का तप भग किया।
13.	**उर्वशी**	ययाति की एक अप्सरा प्रेमिका।
14.	**स्वर्ग**	जहा देवता निवास करते हैं।

15	**नरक**	जहा मनुष्य निवास करते हैं।
16.	**कलभ**	हाथी का बच्चा।
17	**पिल्ला**	कुत्ते का बच्चा।
18.	**बाच्छा**	गाय का बच्चा।
19.	**पाड़ा**	भैंस का बच्चा।
20.	**अलकापुरी**	कुबेर की नगरी।
21.	**पुष्पक विमान**	कुबेर के विमान का नाम।
22.	**मातली**	इद्र के रथ का सारथी।
23.	**मकरध्वज**	श्रीकृष्ण के रथ की ध्वजा।
24.	**कपिध्वज**	अर्जुन के रथ की ध्वजा।
25.	**अमरावती**	इद्र की नगरी का नाम।
26.	**वज्र**	इद्र के अस्त्र का नाम।
27.	**वैजयंतीमाला**	श्रीकृष्ण की माला का नाम।
28.	**वैतरणी**	नरक की नदी का नाम।
29.	**कुम्भ**	हाथी का सिर।
30.	**इदीवर**	नीलकमल।

■ ■ ■

3

विशेष्य और विशेषण की रचना

विशेष्य और विशेषण की परिभाषा · – विशेषण का काम है सज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाना। जिस सज्ञा या सर्वनाम की विशेषता यह बताता है, उसे व्याकरण में विशेष्य कहते हैं। विशेष्य या तो क्रिया-रूप में [illegible] रूप में। जैसे–

	विशेष्य	**विशेषण**
क्रिया	हसना	हंसोड
क्रिया	खेलना	खिलाडी
सज्ञा	दया	दयालु
सज्ञा	कृपा	कृपालु

विशेष्य से विशेषण या विशेषण से विशेष्य बनाने में कृदंत और तद्धित प्रत्ययों का सहारा लेना पडता है। यहां ध्यान देने की बात है कि विशेषण बनाते समय समस्त पदों का व्यवहार नहीं होना चाहिए। जैसे–"कर्तव्य" से 'कर्तव्यनिष्ठ', 'सूद' से 'सूदखोर'–ये सब समस्त पद हैं, विशेषण नही। प्रत्यय लगाकर ही विशेषण बनाना चाहिए, समास से नहीं। यहा हम विशेष्य से विशेषण बनाने के कुछ सामान्य नियमों का उल्लेख कर रहे हैं। इन नियमों से विशेषण बनाने में सुविधा होगी। ये इस प्रकार हैं–

विशेषण बनाने के कुछ नियम

1. विशेषण बनाने वाले संस्कृत के प्रत्यय दो प्रकार के हैं– (क) धातु के आदि स्वर को वृद्धि देने वाले अर्थात्, शब्द का पहला वर्ण अकारान्त है, तो ऐसे प्रत्ययो के लगने पर वह आकारान्त हो जायेगा, 'इ', या 'ई' मात्रा वाला है, तो 'ऐ' मात्रा वाला हो जाएगा, 'उ' या 'ऊ' मात्रावाला है, तो 'औ' मात्रावाला और 'ऋ' मात्रावाला है, तो 'आर्' मात्रा वाला हो जाएगा। धातु के आदि स्वर को ऐसी वृद्धि देने वाले संस्कृत के प्रत्यय हैं– एय, इक, अ इत्यादि। जैसे—

विशेष्य	**प्रत्यय**	**विशेषण**
अग्नि	एय	आग्नेय
पुरुष	एय	पौरुषेय

परिवार	इक	पारिवारिक
धर्म	इक	धार्मिक
पृथा	अ	पार्थ
इन्द्र	अ	ऐन्द्र

(ख) जिनके लगने पर कही-कही धातु के अन्त्य स्वर में ही विकार होता है, अर्थात् अन्त्य स्वर दीर्घ हुआ, तो वह ह्रस्व हो जाता है। जो धातु व्यजनान्त है, उनके व्यजन मे सन्धि नियम के अनुसार कही-कही विकार भी होता है। शेष में कुछ भी विकार नही होता। ऐसे प्रत्यय हैं– अक, आलु, इत, इल, ई, ईय, अनीय, ईन, उक, उ, क, क्त, ठ, म, मान्, य, र, ल, विनि, वान्, श इत्यादि। जैसे –

विशेष्य	प्रत्यय	विशेषण	विशेष्य	प्रत्यय	विशेषण
उपदेश	अक	उपदेशक	अभिषेक	क्त	अभिषिक्त
ईर्ष्या	आलु	ईर्ष्यालु	कर्म	ठ्	कर्मठ
अकुर	इत	अंकुरित	आदि	म	आदिम
तन्द्रा	इल	तन्द्रिल	बुद्धि	मान्	बुद्धिमान्
अनुभव	ई	अनुभवी	अन्त	य	अन्त्य
आदर	अनीय	आदरणीय	मधु	र	मधुर
आसन	ईन	आसीन	पासु	ल	पासुल
भाव	उक	भावुक	तेजस्	विनि	तेजस्विनी
स्वाद	उ	स्वादु	धन	वान्	धनवान्
कर्ता	क	कर्तृक	रोम	श	रोमश

2. 'वान्' और 'मान्' एक ही प्रत्यय हैं। इकारान्त सज्ञाओ के साथ लगने पर 'वान्' का 'मान' हो जाता है। जैसे बुद्धिमान, शक्तिमान्।

विशेषण बनाने में उर्दू के आना, आवर, ई, ईन, इंदा, दार, नाक, मंद, बाज, वार आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

हिन्दी के आ, आलू, आई, आऊ, आर, आड़ी, इयल, ई, ईला, ऊ, एरा, एलू, ऐलू, ऐल, ओड़, ओड़ा, था, ल इत्यादि प्रत्यय विशेषण बनाने में प्रयुक्त होते हैं।

इन सस्कृत, हिन्दी और उर्दू प्रत्ययों के आधार पर विशेष्य (संज्ञा) से बने विशेषणो के उदाहरण निम्नांकित हैं –

विशेष्य (संज्ञा) से विशेषण
(अ, आ)

विशेष्य	विशेषण	विशेष्य	विशेषण
अन्त	अन्तिम, अन्त्य	अन्तर	आन्तरिक
अकुर	अंकुरित	अंचल	आचलिक
अग	आंगिक	अंश	आंशिक
अकन	अकित	अग्नि	आग्नेय
अणु	आणविक	अर्थ	आर्थिक
अभिषेक	अभिषिक्त	अवयव	आवयविक
अवश्य	आवश्यक	अनुष्ठान	आनुष्ठानिक, अनुष्ठित
अनुभव	अनुभवी, आनुभाविक	अनुक्रम	आनुक्रमिक
अनुपात	आनुपातिक	अनुराग	अनुरागी
अन्याय	अन्यायी	अक्ल	अक्लमद
अपेक्षा	अपेक्षित	अधिकार	अधिकारी
अभ्यास	अभ्यासी	अलकार	आलकारिक अलकृत
अध्यात्म	आध्यात्मिक	अनादर	अनादृत
अपकार	अपकारी	अकर्म	अकर्मण्य, अकर्म
अज्ञान	अज्ञानी, अज्ञान	अजय	अजित
अतिरजन	अतिरजित	अध्यापन	अध्यापित
अध्ययन	अधीत	अनासक्ति	अनासक्त
अनुमोदन	अनुमोदित	अनुशसा	अनुशसित
अनुवाद	अनुवादित, अनुदित	अनुशासन	अनुशासित
अनीति	अनैतिक	अपमान	अपमानित
अपराध	अपराधी	आदर	आदरणीय, आदृत
आत्मा	आत्मीय, आत्मिक	आसमान	आसमानी
आराधना	आराध्य	आसक्ति	आसक्त
आकाश	आकाशीय	आक्रमण	आक्रान्त

आभूषण	आभूषित	आधार	आधारित, आधृत
आचरण	आचरित	आश्रय	आश्रित
आदि	आदिम, आद्य	आकर्षण	आकृष्ट
आयु	आयुष्मान्		

(इ. ई. उ. ऋ, ए, ओ)

विशेष्य	**विशेषण**	**विशेष्य**	**विशेषण**
इच्छा	ऐच्छिक	ईसा	ईस्वी
इतिहास	ऐतिहासिक	इहलोक	इहलौकिक, ऐहलौकिक
ईर्ष्या	ईर्ष्यालु, ईर्ष्य	ईश्वर	ईश्वरीय
उपेक्षा	उपेक्षित, उपेक्षणीय	उद्योग	औद्योगिक
उपनिवेश	औपनिवेशिक	उच्चारण	औच्चारणिक, उच्चरित, उच्चारणीय
उपार्जन	उपार्जित	उत्साह	उत्साहित
उत्पीडन	उत्पीडित	उन्नति	उन्नत
उदय	उदित	उत्कर्ष	उत्कृष्ट
उपज	उपजाऊ	उत्तेजना	उत्तेजित
उत्तर	उत्तरी	उपनिषद्	औपनिषदिक
उपकार	उपकारक, उपकृत	उपयोग	उपयुक्त, उपयोगी
ऋण	ऋणी	ऋषि	आर्ष

(क)

कृपा	कृपालु	क्रोध	क्रुद्ध
काम	कामी, कामुक	काल	कालिक, कालीन
कुल	कुलीन	केन्द्र	केन्द्रीय, केन्द्रित
क्रम	क्रमिक	कल्पना	कल्पित, काल्पनिक
कर्म	कर्मी, कर्मठ	कागज	कागजी
कुटुम्ब	कौटुम्बिक	किताब	किताबी
करुणा	कारुणिक, करुण	कॉटा	कॅटीला
कण्ठ	कण्ठ्य	कंकड	कॅकडीला
कत्था	कत्थई	कमाई	कमाऊ

कर्ज	कर्जदार, कर्जखोर	कर्म	कर्मण्य, कर्मठ
कलक	कलकित	कसरत	कसरती
क्रय	क्रीत	क्लेश	क्लिष्ट

(ख)

खपड़ा	खपड़ैल	खेल	खिलाडी
खण्ड	खण्डित	खजूर	खजूरी
खर्च	खर्चीला	खाना	खाऊ
खार	खारा	खानदान	खानदानी
खून	खूनी	ख्याति	ख्यात

(ग)

गलती	गलत	ग्राम	ग्रामीण, ग्राम्य
गृहस्थ	ग्रहस्थ्य	ग्रहण	ग्राह्य, गृहीत
गाव	गवार, गंवारू, गंवई	गर्व	गर्वीला
गर्मी	गर्म	गौरव	गौरवान्वित
गोत्र	गोत्रीय	ग्रास	ग्रस्त
गुण	गुणवान्, गुणी	गुलाब	गुलाबी
गेरू	गेरुआ		

(घ)

घर	घरेलू	घनिष्ठता	घनिष्ठ
घमण्ड	घमण्डी	घृणा	घृणित, घृण्य
घाव	घायल	घात	घातक

(च)

चर्चा	चर्चित	चन्द्र	चान्द्र
चिन्ता	चिन्तनीय,	चिन्त्या	चिन्तित
चित्र	चित्रित, चितेरा	चिह्न	चिह्नित
चरित्र	चारित्रिक	चार	चौथा
चक्र	चक्रित	चौमास	चौमासा
चाचा	चचेरा	चेष्टा	चेष्टित

(ज)

जल	जलीय	जटा	जटिल
जाति	जातीय	जागरण	जाग्रत, जागरित
जंगल	जंगली	जवाब	जवाबी
जहर	जहरीला	जनपद	जनपदीय

(त)

तेज	तेजस्वी	ताप	तप्त
त्याग	त्याज्य, त्यागी	तत्व	तात्त्विक
तिरस्कार	तिरस्कृत	तालु	तालव्य
तर्क	तार्किक	तन्त्र	तान्त्रिक

(द, ध)

देश	देशी, देशीय	दान	दानी
देव	दैवी, दैविक	दिन	दैनिक
दम्पत्ति	दाम्पत्य	दर्शन	दर्शनीय, दार्शनिक
दया	दयालु, दयामय	दर्द	दर्दनाक
दस्त	दस्तावर	दुनिया	दुनियावी
दन्त	दन्त्य	धन	धनी, धनवान्
दगा	दगाबाज	धर्म	धार्मिक

(न)

नरक	नारकीय	निन्दा	निन्द्य, निन्दनीय
नीति	नैतिक	नगर	नागरिक
नाटक	नाटकीय	निष्कासन	निष्कासित
नियम	नियमित	निश्चय	निश्चित
निज	निजी	न्याय	न्यायी, न्यायिक
नाव	नाविक	नमक	नमकीन
निर्माण	निर्मित	निषेध	निषिद्ध

(प)

पहाड	पहाडी	पशु	पाशविक, पाशव
पुम्नक	पुस्तकीय	पुराण	पौराणिक
पृथु	पृथुल	पृथ्वी	पार्थिव
परिवार	पारिवारिक	प्रथम	प्राथमिक
पर्वत	पर्वतीय	प्रमाण	प्रामाणिक
पुष्टि	पौष्टिक	प्रकृति	प्राकृतिक
परिभाषा	पारिभाषिक	परस्पर	पारस्परिक
पिता	पैतृक	प्रान्त	प्रान्तीय
परलोक	पारलौकिक	पाठ	पाठ्य
प्रसंग	प्रासगिक	परिचय	परिचित
प्रशसा	प्रशंसनीय, प्रशंसित	प्रतिष्ठा	प्रतिष्ठित
पूजा	पूज्य, पूजनीय	पीडा	पीडित
पत्थर	पथरीला	प्रदेश	प्रादेशिक
पश्चिम	पाश्चात्य, पश्चिमीय	पथ	पाथेय
पक्ष	पाक्षिक	पुरुष	पौरुषेय
प्रार्थना	प्रार्थित, प्रार्थनीय	प्रतीक्षा	प्रतीक्षित
पानी	पेय	पतन	पतित
पराजय	पराजित	पुष्प	पुष्पित
प्रस्ताव	प्रस्तावित, प्रस्तुत	पल्लव	पल्लवित
पूर्व	पूर्वी	परिवर्तन	परिवर्तित
प्यार	प्यारा	प्यास	प्यासा
प्रतिबिम्ब	प्रतिबिम्बित	पुरातत्त्व	पुरातात्त्विक
पाठक	पाठकीय	प्राची	प्राच्य
प्रातकाल	प्रातकालीन	प्रणाम	प्रणम्य

(फ, ब, भ)

फेन	फेनिल	फल	फलित

बाजार	बाजारू	बालक	बाल्य
बर्फ	बर्फीला	बल	बलिष्ठ
बुद्ध	बौद्ध	बुद्धि	बौद्धिक
भ्रम	भ्रामक	भूख	भूखा
भूमि	भौमिक	भय	भयानक
भगवत्	भागवत	भोजन	भोज्य
भूत	भौतिक	भूगोल	भौगोलिक
भूषण	भूषित	भाव	भावुक
भारत	भारतीय	भाषा	भाषाई, भाषिक

(म)

मल	मलिन	मास	मासिक
माह	माहवारी	मूल	मौलिक
मनु	मानव	माता	मातृक
मुख	मौखिक, मुखर	मगल	मागलिक, मगलमय
मास	मांसल	मोह	मुग्ध
माया	मायिक, मायावी	मूर्च्छा	मूर्च्छित
मामा	ममेरा	माल	मालदार
मिथिला	मैथिल	मैल	मैला
मेधा	मेधावी	मान	मान्य
मर्म	मार्मिक	मजहब	मजहबी
मृत्यु	मर्त्य	मध्यम	माध्यमिक
मथुरा	माथुर	माधुर्य	मधुर

(य, र, ल)

योग	योगी, यौगिक	रग	रंगीन, रगीला
यज्ञ	याज्ञिक	राजनीति	राजनीतिक
यदु	यादव	रोमाच	रोमांचित
यश	यशस्वी	लखनउ	लखनवी
रोग	रोगी	लघु	लाघव

रसीद	रसीदी	लज्जा	लज्जित, लज्जालु
रस	रसीला, रसिक	लक्षण	लाक्षणिक, लक्ष्य
राक्षस	राक्षसी	लाज	लज्जित
रसायन	रासायनिक	लाभ	लभ्य, लब्ध
रोज	रोजाना	लाठी	लठैत
रुद्र	रौद्र	लेख	लिखित
राज	राजकीय, राजसी	लोक	लौकिक
राष्ट्र	राष्ट्रीय	लोभ	लुब्ध, लोभी
राह	राही	लोहा	लौह

(व)

वेद	वैदिक	वर्ष	वार्षिक
वायु	वायवीय, वायव्य	वन	वन्य
विपत्ति, विपद	विपन्न	व्यवसाय	व्यावसायिक
व्यापार	व्यापारिक	वर्णन	वर्णनीय
विचार	वैचारिक, विचारणीय	वन्दना	वन्द्य, वन्दनीय
विस्मय	विस्मित	विनय	विनीत, विनयी
विजय	विजयी, विजेता	विवेक	विवेकी
विकार	विकृत, विकारी	विस्तार	विस्तृत, विस्तीर्ण
विद्या	विद्यावान्	विवाह	वैवाहिक
विरह	विरही	विधान	वैधानिक, विहित
विवाद	विवाद्य, विवादी	व्याख्या	व्याख्येय
वियोग	वियुक्त, वियोगी	वेतन	वैतनिक
विकास	विकसित	विज्ञान	वैज्ञानिक
विभाजन	विभाजित, विभक्त	व्यक्ति	वैयक्तिक
व्यवहार	व्यावहारिक	वास्तव	वास्तविक
विलास	विलासी	विष्णु	वैष्णव
विषाद	विषण्ण	विमान	वैमानिक
विषय	विषयी	विद्वान	वैदुष्य

(स)

ससार	सांसारिक	सन्देह	सन्दिग्ध
सन्ताप	सन्तप्त	संकल्प	संकल्पित
संयोग	संयुक्त	संकेत	सांकेतिक
सख्या	सख्येय, साख्यिक	संक्षेप	संक्षिप्त
सम्पादक	सम्पादकीय	समर	सामरिक
समाज	सामाजिक	सम्पत्ति	साम्पत्तिक, सम्पन्न
सोना	सुनहरा	सम्बन्ध	सम्बद्ध, सम्बन्धी
सम्मान	सम्मानित, सम्मान्य	स्मरण	स्मरणीय
स्मृति	स्मृत, स्मार्त	स्तुति	स्तुत्य
स्वभाव	स्वाभाविक	स्वर्ण	स्वर्णिम
स्वप्न	स्वप्निल	स्थान	स्थानीय, स्थानिक
सूर्य	सौर	सिद्धांत	सैद्धांतिक
सिन्धु	सैन्धव	स्वास्थ्य	स्वस्थ
स्वर्ग	स्वर्गीय, स्वर्गिक	सागर	सागरीय
सप्ताह	साप्ताहिक	समास	सामासिक
समय	सामयिक	सीमा	सीमित
सुख	सुखी	सुगन्ध	सुगन्धित
समुद्र	समुद्री, सामुद्र, सामुद्रिक,	साहस	साहसिक
साहित्य	साहित्यिक	सम्प्रदाय	साम्प्रदायिक
सभा	सभ्य	सुर	सुरीला
सोना	सुनहला, सुनहरा	स्त्री	स्त्रैण
स्वाद	स्वादु	स्वदेश	स्वादेशिक, स्वदेशी

(श, श्र, क्ष)

शिक्षा	शैक्षिक, शिक्षित	शास्त्र	शास्त्रीय
शासन	शासित, शासक	शिव	शैव
शरद्	शारदीय	श्रद्धा	श्रद्धेय, श्रद्धालु

शौक	शौकीन	क्षण	क्षणिक
शृगार	शृगारिक	क्षोभ	क्षुब्ध
शरीर	शारीरिक	क्षमा	क्षम्य
श्याम	श्यामल	क्षय	क्षीण, क्षयी

(ह)

हवा	हवाई	हॅसी	हॅसोड़
हिमा	हिसक	हृदय	हार्दिक

पदवाचक विशेषण

हिन्दी और सस्कृत मे कुछ ऐसे विशेषण प्रयुक्त हैं, जो विशेष प्रकार के पदो या विशेष्यों के पहले आते हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं –

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
अगाध	सागर	अनुपम	छवि
अप्रत्याशित	घटना	अनन्य	भक्ति, भक्त, प्रेम
अमानुषिक	अत्याचार, व्यवहार	आकुल	हृदय, प्राण
ओजस्वी	भाषण	उद्‌भट	योद्धा, विद्वान्
उर्वर	भूमि	करुण,	क्रन्दन
कलुषित	कार्य, हृदय	गगनचुम्बी	अट्टालिका, शिखर
चतुर	बालक	चालू	बाजार, लड़का
तरुण	हृदय	दूषित	हवा, वातावरण
दुर्गम	वन, पर्वत	दुर्लभ	बन्धु
दैवी	प्रकोप, घटना	नश्वर	जगत्, शरीर
निर्मम	हृदय	निन्दित	कार्य
निर्जला	एकादशी	नील	कमल, आकाश
नीरस	विषय	प्रचण्ड	मार्तण्ड, पुरुष
प्रत्यक्ष	प्रमाण	प्रगाढ	प्रेम, निद्रा
पुष्ट	शरीर	पांचभौतिक	शरीर
फलित	ज्योतिष	भौतिक	शरीर, जगत्
भीषण	युद्ध	मनोरम	छवि, दृश्य

मरणासन्न	स्थिति	मधुर	भाषण, भोजन
मानसिक	कष्ट	यशस्वी	नेता
विफल	मनोरथ	विशाल	हृदय
सजल	नेत्र, मेघ	सतत	प्रयास
सफल, भग्न	मनोरथ	सदय	हृदय
स्नेहमयी	भगिनी, माता	स्निग्ध	हृदय, दृष्टि
स्वादिष्ट	भोजन	स्वर्णिम	सुयोग, उषा, अक्षर
श्रान्त	पथिक	शारीरिक	श्रम, कष्ट
शस्यश्यामला	भूमि	शुभ्र	वसन
हार्दिक	प्रेम. बधाई	हृदयविदारक	समाचार, दृश्य
क्षुब्ध	हृदय		

क्रिया से संज्ञा (भाववाचक)

क्रिया मे कृत्-प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाए बनती हैं। कृत्-प्रत्ययों द्वारा धातुओं से बनी संस्कृत की भाववाचक कृदन्त-संज्ञाए हिन्दी में ज्यो-की-त्यों प्रयुक्त होती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातुओ के साथ हिन्दी के ये कृत्-प्रत्यय लगते हैं– आहट, आ, आई, ई, आप, आव, आवा, आवट, न, औता, औती, ता, क, त, ना, आन, नी, ती, न्त, न्ती इत्यादि। पिछले पृष्ठों में हमने 'हिन्दी के कृत-प्रत्यय' के अन्तर्गत क्रियाओं से बनी कुछ भाववाचक सज्ञाओ के उदाहरण दिए हैं। यहा कुछ और उदाहरण दिए गए हैं ·—

क्रिया	**संज्ञा**	**क्रिया**	**संज्ञा**
उतरना	उतार	उडना	उड़ान
करना	करनी	कमाना	कमाई
काटना	कटाई	खपना	खपत
खाना-पीना	खानपान	खिलाना	खिलाई
खेलना	खेल	खोजना	खोज
गाना	गान	गिनना	गिनती
घटना	घटाव	घबराना	घबराहट
घटाना	घटती, घटाव	घुड़कना	घुड़की
घूमना	घुमाव, घुमन्त	घेरना	घेरा
चढना	चढ़ाई, चढ़ाव	चलना	चलन, चलावा, चलन्त

चमकना	चमक	चलना	चलन
चराना	चराई	चिल्लाना	चिल्लाहट
चुराना	चोरी	चुनना	चुनाव
छापना	छाप, छपाई	छिड़कना	छिड़काव
छींकना	छींक	छेडना	छेड
जमाना	जमाव, जमावट	जगमगाना	जगमगाहट
जाँचना	जाँच, जँचाई	जीतना	जीत
जोडना	जोड	जोतना	जुताई
झगडना	झगडा	झाड़ना	झाडन, झाड़
झुझलाना	झुँझलाहट	टाँकना	टाँकी, टँकाई
डकरना	डकैत	तोडना	तोड
थकना	थकावट, थकान	देना	देन (अ)
देखना	दिखावट	देखना-भालना	देख-भाल
दौड़ना	दौड	धोना	धुलाई
नाचना	नाच	पकडना	पकड
पहनना	पहनावा	पढ़ना	पढ़ाई
पडना	पड़ाव	पाना	पावना
पीटना	पिटाई	फँसना	फाँसी
फेरना	फेरा	बनाना	बनाई, बनाव, बनावट
बचाना	बचाव, बचत	बैठना	बैठक
भनभनाना	भनभनाहट	भुलाना	भुलावा
भूलना	भूल	मारना	मार
मिलना	मिलाप,	मुसकाना	मुस्कराहट, मुस्कान
रुकना	रुकावट, रोक	रेतना	रेती
रोना	रुलाई	लड़ना	लड़ाई
लजाना	लाज	लिखना	लिखावट, लिखन्त
लूटना	लूट	लेना	लेन
लेना-देना	लेन-देन	सजाना	सजावट

समझाना	समझौता	सींचना	सिंचाई
हारना	हार		

विशेषण से संज्ञा (भाववाचक)

विशेषण के अन्त मे सस्कृत और हिन्दी के तद्धित-प्रत्यय लगाकर भाववाचक स‍ बनती हैं। ये प्रत्यय है- ता, त्व, अ, य, आ, इ, इमा, अन, ई, आई, आहट, आयत, पन, अ आपा इत्यादि। आगे विशेषण-शब्दो से इन तद्धित प्रत्ययो के योग से बनी भाववा‍ सज्ञाओ के कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं।

विशेषण	**भाववाचक सज्ञा**	**विशेषण**	**भाववाचक सज्ञा**
		(अ)	
अन्ध	अँधेरा	अपना	अपनापन (पन हि.)
अच्छा	अच्छाई	अधिक	अधिकता, आधिक्य
अराजक	अराजकता	अभिलाषित	अभिलाषा
अकित	अंकन		
		(आ-ई)	
आवश्यक	आवश्यकता	ईमानदार	ईमानदारी
		(उ-ए)	
उपकृत	उपकार	उपस्थित	उपस्थिति
उत्कृष्ट	उत्कृष्टता	ऊँचा	ऊँचाई
एक	एकता, एकत्व	ऐतिहासिक	ऐतिहासिकता
		(क)	
कडवा	कड़वाहट	कर्मनिष्ठ	कर्मनिष्ठता
कठोर	कठोरता	कुरूप	कुरूपता
कुशल	कुशलता, कौशल	करुण	कारुण्य
		(ख)	
खट्टा	खटास, खटाई	ख्यात	ख्याति
खुश	खुशी	खामोश	खामोशी
		(ग)	
गरम	गरमी	गरीब	गरीबी

गम्भीर	गाम्भीर्य, गम्भीरता	गृहस्थ	गृहस्थी
गुरु	गुरुता, गुरुत्व, गौरव	गहन	गहनता
		(घ)	
घनिष्ठ	घनिष्ठता	घना	घनत्व
		(च)	
चतुर	चतुराई, चातुर्य, चातुरी	चालाक	चालाकी
चिकना	चिकनाई, चिकनाहट	चौडा	चौडाई
		(ज)	
जटिल	जटिलता	जड़	जड़त्व
जातीय	जातीयता	जितेन्द्रय	जितेन्द्रियता
		(ठ, ढ, त)	
ठाकुर	ठकुराई	तीव्र	तीव्रता
ढीठ	ढींठाई	तीक्ष्ण	तीक्ष्णता
		(द)	
दिलचस्प	दिलचस्पी	दगाबाज	दगाबाजी
दक्ष	दक्षता	दीन	दीनता, दैन्य
दुष्ट	दुष्टता	दूकानदार	दूकानदारी
		(ध)	
धार्मिक	धार्मिकता	धन्य	धन्यता
		(न)	
नवाब	नवाबी	नीचा	निचाई
नेक	नेकी	नम्र	नम्रता
		(प)	
पराजित	पराजय	परिश्रमी	परिश्रम
परिवर्तित	परिवर्तन	पण्डित	पाण्डित्य, पण्डिताई
प्रतिकूल	प्रतिकूलता	प्रयुक्त	प्रयोग, प्रयुक्ति
प्रतिपादित	प्रतिपादन	पागल	पागलपन
प्रामाणिक	प्रामाणिकता	प्राचीन	प्राचीनता

प्रांतीय	प्रांतीयता	पौराणिक	पौराणिकता

(फ)

फकीर	फकीरी	फलित	फलन

(ब)

बहुत	बहुतायत	बड़ा	बडाई
बुरा	बुराई	बूढ़ा	बुढ़ापा (आपा)
बेवफा	बेवफाई	बेईमान	बेईमानी
बेवकूफ	बेवकूफी	बद	बदी

(भ)

भला	भलाई (आई)	भारतीय	भारतीयता
भावुक	भावुकता	भीषण	भीषणता

(म)

मधुर	मधुरता, माधुर्य	मलिन	मलिनता
महान्	महत्ता	मर्द	मर्दानगी
मीठा	मिठास (आस)	मुखर	मुखरता
मूर्ख	मूर्खता	मोटा	मोटापा
मौलिक	मौलिकता	मनोरम	मनोरमता

(य)

यथेष्ट	यथेष्टता	योग्य	योग्यता

(र)

राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता	राजनीतिक	राजनीतिकता
रसीला	रसीलापन	रौद्र	रौद्रता

(ल)

लघु	लघुता, लघुत्व, लाघव	लम्बा	लम्बाई
ललित	लालित्य, ललिताई	लाल	लालिमा, ललाई, लाली

(व)

विस्मृत	विस्मृति, विस्मरण	विभक्त	विभाजन, विभक्ति
विधवा	वैधव्य	विश्वस्त	विश्वसनीयता

वीर	वीरता, वीरत्व		

(श)

शिष्ट	शिष्टता	शठ	शठता
श्लील	श्लीलता	श्याम	श्यामता

(स)

सरल	सरलता	सभ्य	सभ्यता
सहायक	सहायता, माहाय्य	स्थापित	स्थापन, स्थापना
स्वीकृत	स्वी।कृति	स्वस्थ	स्वास्थ्य
स्पष्ट	स्पष्टता	संगृहीत	सग्रह
साहित्यिक	साहित्यिकता	सावधान	सावधानी
सिद्ध	सिद्धि	सुस्त	सुस्ती
सुन्दर	सुन्दरता, सौंदर्य	सुखद	सुख

(ह)

हक	हकदार	हार्दिक	हार्दिकता
हीन	हीनता	हरा	हरापन

विशेषण शब्दों के अशुद्ध प्रयोग

1. प्राय: हम जिस विशेषण का प्रयोग करते हैं, उसकी व्याप्ति विशेष्य में सम्भव नही होती।
2. जहा विशेषण के लिग, वचन विशेष्य के अनुसार परिवर्तित किये जाने चाहिए, वहा उन्हें परिवर्तित नहीं किया जाता।
3. जहां विशेषण के लिंग, वचन विशेष्य के अनुसार परिवर्तित नही होने चाहिए, वहा पर हम उन्हें परिवर्तित कर देते हैं।
4. जहा विशेष्य के रूप में ही विशेषणत्व विद्यमान रहता है, वहां पर एक और विशेषण शब्द रख देते हैं।
5. अनेक बार हम विशेषण का प्रयोग करते समय उसके स्थान का ध्यान रखे बिना अपनी इच्छानुसार उसका किसी भी स्थान पर प्रयोग कर देते हैं। उससे यह होता है कि वह वांछित विशेष्य की विशेषता प्रकट न कर किसी आवंछनीय विशेष्य की विशेषता प्रकट करने लगता है।
6. विशेषज्ञों के अवस्था-सूचक शब्दों का ध्यान रखे बिना ही उनमें पुन· अवस्था-सूचक प्रत्यय लगाकर प्रयोग कर देते हैं।

7 मख्यावाचक विशेषणो को शब्द में न लिखकर अंकों मे लिख देते हैं।

इन भूलो के प्रनि सचेष्ट रहना चाहिए और विशेषण का प्रयोग सोच-ममझकर करना चाहिए।

	अशुद्ध	शुद्ध
1	साहित्य व ममाज मे **घोर** सम्बन्ध है।	साहित्य और समाज मे **घनिष्ठ** सबध है।
2	वह अपने **भावी जीवन** के प्रति निश्चित हैं।	वह अपने **भविष्य** के प्रति निश्चित है।
3	वह **अपने** शृगार करने मे बहुत समय लगाती है।	वह **अपना** शृगार करने में बहुत समय लगाती है।
4	**उन लोग** वहा गए।	**वे लोग** वहा गए।
5	**कोई काम** मे अमुविधा नही होगी।	**किसी काम** मे असुविधा नही होगी।
6	सैनिको ने **भयानक** सहनशक्ति का परिचय दिया।	सैनिको ने **अत्यधिक** सहनशक्ति का परिचय दिया।
7	वहा **भारी-भरकम** भीड जमा हो गई।	वहा **बड़ी** भीड़ जमा हो गई।
8.	तुम सबसे **सुदरतम** हो।	तुम सबसे **सुदर** हो।
9	वे अपना **भावी** जीवन यही बिताएगे।	वे अपना **शेष** जीवन यही बिताएंगे।
10	मोहन **योग्य** नही है।	मोहन **अयोग्य** है।
11	उसने **भयंकर** भूलें की।	उसने **अक्षम्य** भूले की।
12.	वह **बड़ा** बुद्धिमान है।	वह **बहुत** बुद्धिमान है।
13	उसकी **दयनीय दुर्दशा** देखकर–	उसकी **दयनीय दशा** देखकर
14	राम **बड़ा अच्छा** व्याख्याता है।	राम **बहुत अच्छा** व्याख्याता है।
15.	उसे **भयकर** प्यास लगी है।	उसे **बहुत** प्यास लगी है।
16.	मुझे **अगणित** कष्ट उठाने पड़े।	मुझे **बहुत** कष्ट उठाने पड़े।
17.	**अधिकांश** सदस्यो का मत उसके विपरीत था।	**अधिकतर** सदस्यो का मत उसके विपरीत था।
18.	**अधिकतर** भाग राम ने प्राप्त किया।	**अधिकाश** भाग राम ने प्राप्त किया।

19.	राम और श्याम का **घोर** सम्बन्ध है।	राम और श्याम का **घनिष्ठ** सबंध है।
20	हरि **निपट** खिलाडी है।	हरि **पूरा** खिलाडी है।
21	यह एक **गहरी** समस्या है।	यह एक **गम्भीर** समस्या है।
22	यह एक **गंभीर** तालाब है।	यह एक **गहरा** तालाब है।
23	सरोज का रोग **चिंतनीय** है।	सरोज का रोग **चिंताजनक** है।
24	आपका **आगामी** जीवन सुखमय रहे।	आपका **भावी** (शेष) जीवन सुखमय रहे।
25	उसने **प्रलयी** हुंकार की।	उसने **प्रलयकारी** हुंकार की।
26	मैं अपना **भावी** जीवन सीकर मे ही बिताऊंगा।	मैं अपना **शेष** जीवन सीकर में ही बिताऊंगा।
27	**अग्रिम** बैठक मई में होगी।	**आगामी** बैठक मई में होगी।
28	**आगामी** धन-राशि दे दीजिए।	**अग्रिम** धन-राशि दे दीजिए।
29	यह सर्वथा सम्भव है कि वह त्याग-पत्र दे दे।	यह सम्भव है कि वह त्याग पत्र दे दे।
30	**प्रिया** महोदया।	**प्रिय** महोदया।
31	कुछ ऐसी भूलों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।	ऐसी भूलों के कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं।
32	सर्वोत्कृष्ट रोग का चिकित्सा केंद्र।	रोग का सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा केन्द्र।
33.	चीनी का भाव **गभीर** रूप धारण कर रहा है।	चीनी का भाव **विकट** रूप धारण कर रहा है।
34.	यह एक **महत्वपूर्ण** समस्या है।	यह एक **जटिल** समस्या है।
35.	यह एक **विकट** योजना है।	यह एक **महत्वपूर्ण** योजना है।
36	यह एक **गभीर** षड्यंत्र था।	यह एक **विकट** षड्यंत्र था।
37.	आकाश से **भीषण** बूंदे गिर रही थी।	आकाश से **तेज** बूंदें गिर रही थी।
38.	घोड़ा **भीषण** गति से दौड रहा था।	घोड़ा **तेज** गति से दौड रहा था।
39.	आपके **घोर** आग्रह पर मैं यहा आया हूं।	आपके **बहुत** आग्रह पर मैं यहां आया हू।

40.	मैं एक **अनिवार्य** पत्र लिख रहा हूं।	मैं एक **आवश्यक** पत्र लिख रहा हू।
41.	रोगी के लिए पथ्य **आवश्यक** है।	रोगी के लिए पथ्य **अनिवार्य** है।
42.	मैं **आवश्यक** परिस्थितियो के कारण बैठक मे उपस्थित नही हो सका।	मैं **अपरिहार्य** परिस्थितियों के कारण बैठक मे उपस्थित नही हो सका।
43.	उसकी **भयकर** नाक उसकी आकृति को बिगाड रही थी।	उसकी **भद्दी** नाक उसकी आकृति को बिगाड़ रही थी।
44	भयकर शब्दों का प्रयोग रचना को **विकृत** बना देता है।	भयंकर शब्दों का प्रयोग रचना को **नीरस** (कठिन) बना देता है।
45	उसने अपनी **विशाल** प्रतिभा का परिचय दिया।	उसने अपनी **महान्** प्रतिभा का परिचय दिया।
46.	उसके **महान्** शरीर को उठाना असम्भव है।	उसके **विशाल** शरीर को उठाना असम्भव है।
47	राम **श्रेष्ठतम** गायक है।	राम **श्रेष्ठ** गायक है।
48	उसने **सर्वोच्चतम** अक प्राप्त किये।	उसने **सर्वोच्च** अक प्राप्त किये।
49.	राम श्याम से **वरिष्ठ** है।	राम श्याम से **वरीय** है।
50	मुझे आज **अनेको** काम है।	मुझे आज **अनेक** काम हैं।
51.	श्रीमान् रमा जी।	श्रीमती रमा जी।
52.	सीता **विद्वान्** छात्रा है।	सीता **विदुषी** छात्रा है।
53	यह बालिका **बुद्धिमान्** है।	यह बालिका **बुद्धिमती** है।
54.	2 और 2 चार होते हैं।	दो और दो चार होते हैं।
55	घर-घर में उत्सव मनाये जा रहे हैं।	घर-घर में उत्सव मनाया जा रहा है।
56	उस समारोह में 2,000 दर्शक थे।	उस समारोह में दो हजार दर्शक थे।
57.	उसकी सुंदर शोभा ने राम को बेचैन कर दिया।	उसकी शोभा ने राम को बेचैन कर दिया।
58.	एक गोपनीय रहस्य।	एक रहस्य।
59	उसका गुप्त भेद खुल गया।	उसका भेद खुल गया।
60	पुरानी परम्पराओं का त्याग करना होगा।	परम्पराओं का त्याग करना होगा।

61	उसे उचित न्याय की आशा थी।	उसे न्याय की आशा थी।
62	गरम आग से पैर जल गया।	आग मे पैर जल गया।
63	ठंडी बर्फ से गला बैठ गया।	बर्फ से गला बैठ गया।
64.	ईश्वर उनकी मृत आत्मा को शांति प्रदान करे।	ईश्वर उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे।
65.	अब बहुत काफी हो गया।	अब काफी हो गया।
66	औषधि बहुत तत्काल लाभ पहुंचाती हैं।	औषधि तत्काल लाभ पहुचाती हैं
67	राम ने इस पर आपत्ति प्रकट की।	राम ने इस पर आपत्ति की।
68.	वह निरपराधी व्यक्ति रोने लगा।	वह निरपराध व्यक्ति रोने लगा।
69	स्वामी जी को घातक विष दे दिया।	स्वामी जी को विष दे दिया।
70.	मुझे छिलके वाला धान चाहिए।	मुझे धान चाहिए।
71.	मुझे बिना छिलके का चावल चाहिए।	मुझे चावल चाहिए।
72	राम सच्चरित्रवान व्यक्ति है।	राम चरित्रवान व्यक्ति है।
73	मुझे आपकी अच्छी सद्‌भावना मिली।	मुझे आपकी सद्‌भावना मिली।
74	वह एक अच्छा डाक्टर है।	अच्छे डाक्टरों में वह एक अच्छा डाक्टर है।
75.	अस्तगामी सूर्य का दर्शन **भयकर** होता है।	अस्तगामी सूर्य का दर्शन **अशुभ** होता है।
76.	हमारे वाला मकान राजघाट पर स्थित है।	हमारा मकान राजघाट पर स्थित है।
77	मुझे निखालिस घी चाहिए।	मुझे खालिस घी चाहिए।
78	उसकी बुरी कुदृष्टि से सभी डरते हैं।	उसकी बुरी दृष्टि से सभी डरते हैं।
79.	उसका बुरा अभिशाप उसे ले बैठा।	उसका अभिशाप उसे ले बैठा।
80	ऐसा दुष्ट कपूत तो भगवान किसी को न दे।	ऐसा कपूत तो भगवान किसी को न दे।
81.	ऐसा अच्छा सज्जन कहा मिलेगा।	ऐसा सज्जन कहां मिलेगा ?

82.	इसमे समस्त नारी मात्र का हित निहित है।	इसमें नारी मात्र का हित निहित है।
83	किसी और दूसरे छात्र को भेज दो।	किसी दूसरे छात्र को भेज दो।
84.	अन्य दूसरे छात्र भी इसे स्वीकार नही करेगे।	दूसरे छात्र भी इसे स्वीकार नही करेगे।
85.	सारे विश्वभर में आश्चर्य छा गया।	विश्वभर में आश्चर्य छा गया।
86	मैंने पूरी शक्ति भर प्रयास किया।	मैंने शक्ति भर प्रयास किया।
87	प्राय. सभी लोगो ने इसका विरोध किया।	सभी लोगों ने इसका विरोध किया।
88.	ये मेरी महेली है।	यह मेरी सहेली है।
89	प्रत्येक मनुष्यो को जाने दो।	सभी मनुष्यो को जाने दो।
90.	वह शुद्ध भैंस का दूध बेचता है।	वह भैंस का शुद्ध दूध बेचता है।
91	कई फैक्टरी के कर्मचारी मर गए।	फैक्टरी के कई कर्मचारी मर गए।
92	केवल व्याकरण मात्र मीखने से क्या होगा ?	केवल व्याकरण सीखने से क्या होगा ?
93	सीता सोती नीद में जाग पडी।	सीता नीद से जाग पडी।
94	घडी में कै बजा है ?	घडी में कितना बजा है ?
95.	अपनी सकुशलता का पत्र भेजना।	अपनी कुशलता का पत्र भेजना।
96.	ध्वस्त विमान के यात्री सुरक्षित है।	ध्वस्त विमान के यात्री सकुशल हैं।
97	वो लडकी कितनी लम्बी है।	वह लड़की कितनी लम्बी है।
98	आप वडे अच्छे शिक्षक हैं।	आप बहुत अच्छे शिक्षक है।
99	मुझे भारी काम है।	मुझे बहुत काम है।
100	अधिकाश लोग नही आयेगे।	अधिकतर लोग नही आएगे।
101	सत्य और अहिंसा का घोर सम्बन्ध है।	सत्य और अहिसा का घनिष्ठ सबन्ध है।
102.	परिषद् की दो दिवसीय गोष्ठी है।	परिषद् की द्विदिवसीय गोष्ठी है।

103	इस गहरी समस्या का समाधान कहा है ?	इस गभीर समस्या का समाधान कहा है ?
104.	यह कार्य सर्वथा संभव है।	यह कार्य सम्भव है।
105.	उसकी बीमारी चिन्तनीय है।	उसकी बीमारी चिताजनक है।
106	सीता राधा से अद्वितीय है।	सीता अद्वितीय है।
107	तुम दोनों में सबसे लम्बा कौन है ?	तुम दोनो में अधिक लम्बा कौन है ?
108	कक्षा में अधिक लोकप्रिय कौन है ?	कक्षा में सबसे अधिक लोकप्रिय कौन है ?
109	देश का अधिक अच्छा लेखक कौन है ?	देश का सबसे अच्छा लेखक कौन है ?
110	बबूल की डाल महीन होती है।	बबूल की डाली पतली होती है।
111	तुम्हारी बुद्धि पतली है।	तुम्हारी बुद्धि सूक्ष्म है।
112	कुत्ते का कपडा पतला था।	कुत्ते का कपडा महीन था।
113	आज दाल मोटी हुई है।	आज दाल गाढी हुई है।
114.	मूर्तिकार द्वारा चित्रित मूर्ति–	मूर्तिकार द्वारा निर्मित मूर्ति–
115	मेरे द्वारा निर्मित चित्र-	मेरे द्वारा चित्रित चित्र-
116	मै अपने से नीची आयु वालों से -	मैं अपने से कम आयु वालों से-
117	ज्ञानपीठ ने पुस्तकमाला स्थापित की।	ज्ञानपीठ ने पुस्तकमाला प्रारम्भ की।
118	पठित समाज में यह फैशन है।	शिक्षित समाज में यह फैशन है।
119	नेहरू जी की मृत्यु से अपार क्षति हुई है।	नेहरू जी मृत्यु से भारी क्षति हुई है।
120	मुझे घोर आग्रह पर जाने दिया।	मुझे विशेष आग्रह पर जाने दिया।
121	उसने सच गवाही दी।	उसने सच्ची गवाही दी।
122	तुमने झूठ बात कही।	तुमने झूठी बात कहा।
123.	वह आदमी बहुत श्रेष्ठ है।	वह आदमी बहुत अच्छा है।
124	मेरी तबीयत नाशाद थी।	मेरी तबीयत नासाज थी।
125	भारी भरकम भीड जमा हो गई।	बडी भीड जमा हो गई।

126	तरह-तरह के जुए के दाव-	जुए के तरह-तरह के दाव-
127	कई रेलवे कर्मचारी।	रेलवे के कई कर्मचारी।
128.	विपुला धन-	विपुल धन-
129	विपुल पृथ्वी-	विपुला पृथ्वी-
130	दरिद्री छात्र-	दरिद्र छात्र-
131	कामुकी स्त्री-	कामुक स्त्री-
132.	इनका सम्मान भारी हुआ।	उनका भारी सम्मान हुआ।

विशेषण के अशुद्ध स्वरूप

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विश्वासित	विश्वस्त	आश्वासित	आश्वस्त
जागृत, जाग्रत	जागरित	सम्बन्धित	सम्बन्ध
धैर्यतापूर्वक	धैर्यपूर्वक	क्रोधित	क्रुद्ध
शक्तिशील	शक्तिशाली	संयमित	संयत
निरपराधी	निरपराध	व्यापित	व्याप्त
हतोत्साहित	हतोत्साह	सशकित	सशक
ग्रसित	ग्रस्त	आवश्यकीय	आवश्यक
लाचारोहालत	लाचारहालत	स्पर्शित	स्पृष्ट
निराकाक्षी	निराकांक्ष	त्रसित	त्रस्त
सपर्कित	सम्पृक्त	सवित	संवेत
आकर्षित	आकृष्ट	अनुवादित	अनुदित
गौरवित	गौरवान्वित	निर्दयी	निर्दय
अनुमानित	अनुमित	निर्मोही	निर्मोह

■ ■ ■

4

क्रिया पदों में होने वाली भूलें

क्रिया पदों के प्रयोग में अशुद्धियाँ अनेक कारणों से सम्भावित हैं -

1. वाक्य के लम्बा हो जाने पर कर्ता और क्रिया के संबध का ध्यान न रहने से भूल हो जाती है। कर्त्तरि प्रयोग में क्रिया कर्ता के लिंग एक वचन के अनुसार होगी, कर्मणी प्रयोग मे कर्म के लिंग और वचन के अनुसार और भाव के प्रयोग मे सदैव भूतकाल पुल्लिग एकवचन में रहेगी।

2 'करना' और 'होना' क्रियाओं में संज्ञा शब्दो के साथ सावधानी से प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि 'करना' क्रिया सज्ञा शब्द को सकर्मक और 'होना' उसे अकर्मक बनाती है।

3. कुछ क्रिया शब्द उपरिदृष्टि से पर्यायवाची से लगते हैं, किन्तु वस्तुत उनके अर्थो मे अंतर रहता है। उस अंतर को ध्यान मे रखकर सम्बद्ध क्रिया-पद का प्रयोग कीजिए।

4 अकर्मक, सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियाओं के प्रयोग में सावधानी की आवश्यकता है।

5 मयुक्त क्रियाओ का प्रयोग करते समय भी हमें ध्यान रखना चाहिए कि उसका प्रयोग उपयुक्त मूल क्रिय' एवं उसके उपयुक्त रूप के साथ ही किया जा रहा है ?

6. एक साथ प्रयुक्त दो या अधिक संज्ञाएं पृथक-पृथक क्रियाओं की आकांक्षी हैं, तो पृथक-पृथक क्रिया रूपों का ही प्रयोग किया जावे।

7 सयुक्त क्रिया यदि अकर्मक है और मूल क्रिया सकर्मक है तो भी दोनों से निर्मित क्रिया पद अकर्मक ही रहेगा। इसी प्रकार सकर्मक और अकर्मक के योग मे निर्मित क्रिया-पद सकर्मक रहेगा।

8 इसी प्रकार अन्य आवश्यक प्रयोगों को ध्यान में रखकर ही वाक्य विन्यास होना चाहिए।

अनावश्यक प्रयोग

	अशुद्ध	शुद्ध
1	यह संभव हो सकता है।	यह सभव है।
2	इसको दगा कहकर पुकारना अनुचित है।	इसको ठगा कहना अनुचित है।
3.	इस बात का स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता है।	इस बात के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।
4	उषा विलाप करके रोने लगी।	उषा विलाप करने लगी।
5.	विद्यालय मे कैसा वातावरण उपस्थित है ?	विद्यालय में कैसा वातावरण है ?
6.	बैठक स्थगित होने की सम्भावना दिखाई देती है।	बैठक स्थगित होने की सम्भावना है।
7.	मै वहा जाए बिना नही रह सकता हूं।	मैं वहां जाए बिना नही रह सकता।
8	यह आप पर निर्भर करता है।	यह आप पर निर्भर है।
9.	मैं आपकी श्रद्धा करता हूं।	मैं आप पर श्रद्धा करता हू।
10.	वह नही कह सकता है।	वह नही कह सकता।
11.	उसे राम कहकर पुकारना अनुचित है।	उसे राम कहना अनुचित है।
12	उसने बैठ कर आसन ग्रहण किया।	उसने आसन ग्रहण किया।

आवश्यक प्रयोग

1.	जगली फल और झरनों का पानी पीकर हम आगे बढ़े।	जंगली फल खाकर और झरनों का पानी पीकर हम आगे बढ़े।
2.	मैं इस समय चाय या बिस्कुट नहीं खा सकूंगा।	मैं इस समय न चाय पी सकूगा, न बिस्कुट खा सकूगा।
3	वह गाना, बजाना, सिलाई और गणित पढ़ती है।	वह गाना, बजाना तथा सिलाई सीखती है और गणित पढती है।
4.	उसका व्यवहार और बातें सुन कर बडा आनद आया।	उसका व्यवहार देख और बातें सुनकर बडा आनद आया।
5	हमने रोटी और छाछ पीकर प्रस्थान किया।	हमने रोटी खाकर और छाछ पीकर प्रस्थान किया।

6	हमने उसका गाना और रूप देखा।	हमने उसका गाना सुना और रूप देखा।
7.	हम उसका बोलना और हँसना देखकर मुग्ध हो गए।	हम उसका बोलना सुनकर और हँसना देखकर मुग्ध हो गए।
8	उसका रोटियाँ और चाय बनाने का ढग आकर्षक था।	उसका रोटियाँ पकाने और चाय बनाने का ढग आकर्षक था।
9	चावल और रोटियाँ सिक रही थी।	चावल उबल रहे थे और रोटियाँ सिक रही थी।
10	हाथी और घोडे हिनहिना रहे थे।	हाथी चिघाड रहे थे और घोडे हिनहिना रहे थे।
11	उसका नाचना और गाना सुन रहे थे।	उसका नाचना देख रहे थे और गाना सुन रहे थे।

अनुपयुक्त क्रिया-पद

1	वह धोती पहन रहा था।	वह धोती बांध रहा था।
2	वह प्रश्न पूछने लगा।	वह प्रश्न करने लगा।
3	मैंने इस बात से अनुभव लिया है, कि_	मैने इस बात से अनुभव किया है कि_
4	राज्य सरकार ने निर्णय लिया है, कि__	राज्य सरकार ने निर्णय किया है, कि__
5	रेल और ट्रक मे भिडन्त__	रेल और ट्रक में टक्कर__
6	शीघ्र ही युद्ध चलने की सम्भावना है।	शीघ्र ही युद्ध छिड़ने की सम्भावना है।
7	सीमा पर युद्ध लडा जा रहा है।	सीमा पर युद्ध हो रहा है।
8	उसने प्रतिज्ञा तोड डाली।	उसने अपनी प्रतिज्ञा तोड दी।
9	उसने निराशा ही दी।	उसने निराश ही किया।
10	उसने थालिया मेज पर डाल दी।	उसने थालिया मेज पर रख दी।
11	वह भाषण बोलने लगा तो _	वह भाषण देने लगा तो _
12	आप से हमे मार्गदर्शन मिल रहा है।	आप से हमे मार्ग दर्शन हो रहा है।

13.	चीनी के दाम न बढ़ने देने के लिए कार्यवाही होगी।	चीनी के दाम न बढ़ने देने के लिए कार्यवाही की जाएगी।
14	मानसिक संतुलन होना आवश्यक है।	मानसिक सतुलन रखना आवश्यक है।
15	लोग हिन्दी की शिक्षा ले रहे है।	लोग हिन्दी की शिक्षा पा रहे हैं।
16	मुझे स्मरण दिला देना।	मुझे स्मरण करा देना।
17.	वह परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।	उसने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।
18.	मैं चाय पीना मांगता हू।	मैं चाय पीना चाहता हूं।
19.	सीता आटा गूथ रही है।	सीता आटा गूध रही है।
20.	वह माला गूध रही है।	वह माला गूंथ रही है।
21	रामलाल पगड़ी ओढ़कर जाओ।	रामलाल पगड़ी बाध कर जाओ।
22.	बाबूलाल सारा दिन कम्बल पहने रहा।	बाबूलाल सारा दिन कम्बल ओढे रहा।
23.	विद्यालय बद होने की सभावना की जा रही है।	विद्यालय बंद होने की सम्भावना है।
24	सुनीता ने प्रेम पत्र मे कहा है कि__	सुनीता ने प्रेम पत्र में लिखा है कि__
25	मैं लेटना मांगता हू।	मैं लेटना चाहता हूं।
26.	मैं दर्शन देने आया था।	मैं दर्शन करने आया था।
27.	विमला को वहा नौकरी पा गई।	विमला को वहां नौकरी मिल गई।
28.	माशूका ने उसे गालियॉं निकाली।	माशूका ने उसे गालियाँ दीं।
29.	हमें यह सावधानी लेनी होगी।	हमें यह सावधानी बरतनी होगी।
30.	अपराधी दण्ड देने योग्य है।	अपराधी दण्ड पाने योग्य है।
31.	वह लट्ठा तो बताओ।	वह लट्ठा तो दिखाओ।
32.	उसने शिक्षा विभाग में नौकरी पा ली।	उसने शिक्षा विभाग में नौकरी कर ली।
33.	साहब मोटरसाईकिल हाँक रहे हैं।	साहब मोटरसाईकिल चला रहे हैं।
34.	चोर पशुओं को उठा ले गए।	चोर पशुओं को हाँक ले गए।

35.	आज सभी ने यह सकल्प लिया कि —	आज सभी ने यह संकल्प किया कि—
36	वहा गहन अधकार घिरा हुआ था।	वहां गहन अंधकार छाया हुआ था।
37.	अपने जूते तो निकालो।	अपने जूते तो उतारो।
38.	उसका मूल्य आप नही नाप सकते।	उसका मूल्य आप नही आंक सकते।
39	गुलामी की बेडियां पैरों में लगी हुई हैं।	गुलामी की बेडियां पैरों में पडी हुई हैं।
40.	उसको अभिनदन-पत्र प्रदान किया।	उसको अभिनदन-पत्र भेंट किया।
41.	शादी में अनेक वस्तुए भेट की गईं।	शादी में अनेक वस्तुओं का उपहार मिला।
42.	कमीज डाल लो।	कमीज पहन लो।
43.	आप कल दर्शन करेंगे।	आप कल दर्शन देंगे।
44	वह नीट ले रहा था।	वह सो रहा था।
45.	कल आपकी प्रतीक्षा देखी।	कल आपकी प्रतीक्षा की।
46.	मैं आप सब लोगों का धन्यवाद करता हू।	मैं आप सब लोगो को धन्यवाद देता हू।
47.	हम अपनी मांगें मागने आए हैं।	हम अपनी मांगें मनवाने आए हैं।
48	सभा मे सन्नाटा भर गया।	सभा में सन्नाटा छा गया।
49.	छान टपक रही थी।	छान चू रही थी।
50.	वह चने खा रहा था।	वह चने चबा रहा था।
51	सब्जी घुट गई।	सब्जी बन गई।
52.	उसने गिलास तोड दिया।	उसने गिलास फोड दिया।
53.	यह शीशा किसने फोडा है ?	यह शीशा किसने तोडा है ?
54.	उसका चेहरा गिर गया।	उसका चेहरा उतर गया।
55.	उसकी नाक पर मुक्का दिया।	उसने नाक पर मुक्का मारा।
56.	नदी पार हो गई।	नदी पार कर ली।
57.	बेबी ने माला गूंध ली।	बेबी ने माला गूंथ ली।

अकर्मक, सकर्मक और प्रेरणा के अशुद्ध प्रयोग

1	समय पडने पर आपको भुलाया नही जाएगा।	समय पडने पर आपको भूला नही जाएगा।
2	उसने हरि को घिरा लिया।	उसने हरि को घेर लिया।
3.	मै उसके सब इरादे ढाह दूगा।	मैं उसके सब इरादे ढहा दूगा।
4	सेठ आज रुपए बटा रहा है।	सेठ आज रुपए बॉट रहा है।
5	सीता डूबती दिखती है।	सीता डूबती दिखाई देती है।
6.	विवाह में धन का उपयोग समझ-बूझकर होना चाहिए।	विवाह मे धन का उपयोग समझ-बूझकर करना चाहिए।
7	मेरे जन्म होते घर मे प्रसन्नता भर गई।	मेरे जन्म लेते ही घर में प्रसन्नता छा गई।

संयुक्त क्रियाओं के अशुद्ध प्रयोग

	अशुद्ध	शुद्ध
1	वह गिरा पडा।	वह गिर पडा।
2	उससे कार्य नही बना पड़ा।	उससे कार्य नही बन पड़ा।
3	उसने पैसा फेंक डाला।	उसने पैसा फेंक दिया।
4	उसने सभी बंधन काट दिए।	उसने सभी बंधन काट डाले।
5	उसने उसका आश्रय कर लिया।	उसने उसका आश्रय ले लिया।
6.	राम को बुला देना।	राम को भेज देना।
7.	वह पडा फिरता है।	वह पडा रेग रहा है।
8	आप उसे रख डालना।	आप उसे रख लेना।
9.	वह फूट चला।	वह फूट पडा।
10	वह उस पर चढ आया।	वह उस पर चढ़ बैठा।
11	उसने अपनी प्रतिज्ञा तोड डाली।	उसने अपनी प्रतिज्ञा तोड दी।
12	उसने किवाड तोड दिए।	उसने किवाड़ तोड़ डाले।
13	वह वहा से भाग लिया।	वह वहा से भाग पडा।

14	उमने अपना रोना गाया।	उसने अपना रोना रोया।
15	वह भटक पडा।	वह भटक गया।
16	उमने मुझे मार लिया।	उसने मुझे मार दिया।
17	वह रो दिया।	वह रो पडा।
18	उमने हरि को पटक डाला।	उसने हरि को पटक दिया।
19	उसने मब कुछ खा डाला।	उसने मब कुछ खा लिया।
20	उमने पत्थर पर मिर दे डाला।	उमने पत्थर पर सिर दे मारा।
21	मर्प को देखकर वह घबरा आई।	सर्प को देखकर वह घबरा गई।
22	वह चिल्ला उठा।	वह चिल्ला पडा।
23	वह खा उठा।	वह खा चुका।
24	मैं उसे स्वय समझा लूगा।	मैं उसे स्वयं समझा दूंगा।
25.	मन ऊब आता है।	मन ऊब जाता है।
26.	वह देखकर नियत्रण करता है।	वह देखकर नियत्रण रखता है।
27	वह मुझे फसाने लगा।	वह मुझे फासने लगा।
28	वह रोने पडना है।	वह रोने लगता है।
29	वह गा डालता है।	वह गा देता है।
30.	अणुबम से लाखों आदमी नाश हो जाते हैं।	अणुबम से लाखो आदमी नष्ट हो जाते हैं।
31	मैं यह स्वीकृत करता हू।	मैं इसे स्वीकृत करता हू।
32	मैंने उसे दौड में जीत लिया।	मैंने उसे दौड मे पराजित कर दिया।
33	मैं वहा पर कई बार आया हू।	मै वहा कई बार आया हू।
34	उसने देश को भारी संकट से रोक दिया।	उसने देश को भारी सकट से बचा लिया।
35.	वह रुपया नही पा पाया।	वह रुपया नही ले पाया।
36.	वह अब नही जीने सकता है।	वह अब नही जी सकता है।
37.	मैं आगे बढ सकने का प्रयत्न करता हू।	मै आगे बढ़ने का प्रयत्न करता हू।

38	उस पर सकट आन पडा।	उस पर सकट आ पडा।

विविध

1	मै आप पर निर्भर करता हू।	मै आप पर निर्भर हू।
2.	संसद में कई प्रश्न पूछे गए।	ससद में कई प्रश्न किए गए।
3	उसने दो हजार रुपये का दान दिया।	उसने दो हजार का दान किया।
4.	दुग्ध-पान पीना उत्तम है।	दुग्ध पान करना उत्तम है।
5.	मैं किसी प्रकार का दुराव नहीं समझता।	मैं किसी प्रकार का दुराव नही करता।
6.	राम को मेरा स्मरण तो दिला देना।	राम को मेरा स्मरण करा देना।
7	उसने सतोष दिलाते हुए कहा।	उसने सतोष देते हुए कहा।
8.	दवा का प्रयोग समझ-बूझकर होना चाहिए।	दवा का प्रयोग समझ-बूझकर करना चाहिए।
9	मैं प्रातः चलने जाता हूं।	मैं प्रात. टहलने जाता हूं।
10	नगे पैर टहलना अच्छा नही।	नगे पैर चलना अच्छा नही।
11	मैने दस तोला सोना आक कर देखा।	मैने दस तोला सोना तोल कर देखा।
12	वहा गहरी मारकाट हुई।	वहा भारी मारकाट हुई।
13	मेरा सम्पूर्ण विश्वास है।	मेरा पूर्ण विश्वास है।
14	वह तकलीफ भोग रहा है।	वह तकलीफ उठा रहा है।
15	मैं कष्ट नही उठा सकता।	मैं कष्ट नहीं सह सकता।
16	यह संभव हो सकता है।	यह संभव है।
17.	वह गीत बजा रही है।	वह गीत अलाप रही है।
18.	मैने एक योजना बॉधी है।	मैंने एक योजना बनाई है।
19.	उस समय मेरी मुद्रा उदास थी।	उस समय मैं उदास था।
20.	यह मकान फूटा हुआ है।	यह मकान टूटा हुआ है।
21.	आजकल दाल-रोटी निभना कठिन है .	आजकल दाल-रोटी चलना कठिन है।
22.	उसने अपना दुखड़ा गाकर सुनाया।	उसने अपना दुखड़ा कह कर सुनाया।

23.	इसमें आश्चर्य मनाने की क्या बात है ?	इसमे आश्चर्य करने की क्या बात है ?
24	जुकाम के कारण वह छीक उठा।	जुकाम के कारण उसने छीका।
25	उसने खूब आनद उठाया।	उसने खूब आनद लिया।
26.	वह अब लडखडा उठा है।	वह अब लडखडा रहा है।
27.	वह विश्वास मागती थी।	वह विश्वास चाहती थी।
28	मगीत चुकते ही वह चला गया।	सगीत समाप्त होते ही वह चला गया।
29	आक्षेप रखना ठीक नही है।	आक्षेप करना ठीक नहीं है।
30.	उसका तापमान अभी जारी था।	उसका ज्वर अभी जारी था।
31.	सुनिये, मुझे क्षमा करे।	सुनिये, मुझे क्षमा कीजिए।
32.	ज्यों-ज्यों मैं अध्ययन करता गया, त्यों-त्यो ज्ञान-नेत्र खुलने लगे।	ज्यों-ज्यों मैं अध्ययन करता गया, त्यों-त्यो ज्ञान-नेत्र खुलते गए।

अपूर्ण पर्यायवाची क्रिया-पद

1	**उबालना**	चावल उबलते हैं।
	पकाना	खाना पकता है।
2.	**उकसाना**	किसी कार्य के लिए तैयार करना (बुरे अर्थ में)।
	बहकाना	सही मार्ग से हटाना या भ्रम में डाल देना।
3.	**उछलना**	एक स्थान से ऊपर की ओर गति करना।
	कूदना	एक स्थान से ऊपर की ओर या सीधी ओर गति करना।
	फेकना	किसी द्वारा किसी व्यक्ति या वस्तु को उठाकर गति देना।
4.	**कहना**	किसी बात को वाणी के माध्यम से दूसरे तक पहुचाना।
	बोलना	वाणी का स्पष्ट उच्चारण।
	बकना	अनुचित या अधिकार से बाहर कुछ कहना।
	बड़बड़ाना	अनिच्छापूर्वक या रोष में अस्पष्ट उच्चारण करना।
	झगड़ना	दो या अधिक व्यक्तियों का बकना।

	गुनगुनाना	अस्पष्ट उच्चारण किंतु इच्छापूर्वक।
5	**काटना**	चाकू, दराती से काटा जाता है।
	कतरना	कैंची से कतरा जाता है।
6	**तोड़ना**	निरवकाश वस्तु तोडी जाती है।
	फोड़ना	. सावकाश वस्तु फोडी जाती है।
7	**दौडना**	एक स्थान से दूसरे स्थान तक तेज गति से जाना।
	भागना	. किसी भी भय या आशका से दौड़ना।
8	**मिलना**	सजीव मिलता है।
	प्राप्त होना	निर्जीव प्राप्त होता है।
9	**विलाप करना**	रोने के साथ-साथ कुछ बोलते जाना।
	रोना	ऑखों में ऑसू के साथ-साथ ध्वनि का रोना।
10	**खाना**	कोमल पदार्थ खाया जाता है।
	चबाना	चना या कठोर वस्तु चबाई जाती है।
	कुतरना	कपडे इत्यादि को चूहे कुतरते हैं।
11	**दौडना**	साधार तेज गति से चलना।
	उड़ना	निराधार तेज गति से चलना।
	चलना	साधारण गति।
	खीचना	अपनी ओर किसी को चलने के लिए बाध्य या प्रेरित करना।
	ढकेलना	किसी गतिहीन व्यक्ति या वस्तु को आगे की ओर करना।
12	**प्रकाशित करना**	किसी अदृष्ट वस्तु को दृष्ट करना।
	अर्जित करना	परिश्रम से किसी वस्तु या भाव को प्राप्त करना।
	सकलित करना	वस्तुओ को निश्चित नियम से एक स्थान पर एकत्रित करना।
	सग्रह करना	वस्तुओं को अनियमित रूप से एकत्र करना।
	जमा करना	वस्तुओ को एकत्र कर अधिकार में रखना।
13.	**गिरना**	अनजान में आधार हट जाने के कारण आधार की ओर आना।
	पड़ना	. जान-बूझकर एक आधार को छोड़कर दूसरे आधार पर गिरना।
14.	**छोड़ना**	अस्थायी संबध-विच्छेद।

	त्यागना	स्थायी सवध-विच्छेद।
15	**तानना**	जो वस्तु फैल और खिच सकती हो, उसको ताना जाता है, जैसे- शामियाना। इसमें ऊपर का भाव निहित होता है।
	खीचना	जो वस्तु लम्बाई को ग्रहण करती है, उसे खीचा जाता है।
16	**टोकना**	किसी को बोलते समय बीच में टोकना।
	चिढ़ाना	किसी की अप्रिय वस्तु, भाव या गुण उसके सामने कहना।
17	**लेटना**	अकर्मक क्रिया है- एक पार्श्व से किसी आधार पर सारे शरीर को रख देना।
	लोटना	सकर्मक क्रिया है- सारे शरीर को बार-बार छुआना।
18	**खोसना**	किसी वस्तु को छीन लेना।
	खोसना	किसी वस्तु को दूसरी वस्तु मे लगाना (वस्तु पर लगाना नही होगा।)
19	**फूकना**	जलाना।
	फूकना	फूक देना या हवा से अग्नि प्रज्वलित करना।
20	**खपना**	समाप्त होना या मरना।
	समाना	किसी वस्तु या भाव या किसी वस्तु का भाव में समा जाना या आ जाना।
21	**खोदना**	ठोस प्राकृतिक वस्तु, मिट्टी आदि को खोदा जाता है (घास अपवाद है।)
	उखाड़ना	किसी जड वाली वस्तु को उखाड़ा जाता है। समूल नष्ट करना।
22	**ठोकना**	किसी वस्तु को आधार के साथ किसी वस्तु मे गाड़ना।
	जडना	किसी वस्तु पर सौन्दर्य दृष्टि से किसी दूसरी वस्तु को लगाना (मुहावरे में इसका भिन्न अर्थ होता है।)
23	**गँवाना**	अनावश्यक व्यय अथवा व्यर्थ प्रयोग या उपयोग।
	निछावर करना	किसी के सम्मान मे किसी वस्तु को दे देना।
24	**पार करना**	आधार का स्पर्श करते हुए दूसरी ओर जाना।
	लाघना	आधार का स्पर्श किये बिना ही दूसरी ओर चले जाना।
25.	**ढालना**	तरल पदार्थ को किसी ठोस आकृति में परिवर्तित करना।
	पाथना/थापना	घनीभूत जलयुक्त वस्तु को हाथ से थपथपा कर तैयार करना।

26 **फटना** · किसी वस्तु का अयुक्त होना।

हटना आधार का परिवर्तन करना।

27 **चीरना** उपकरण से वस्तु को दो भागो में करना।

फाड़ना बिना उपकरण के दो भागों में करना।

28 **घिसना** . वस्तु का क्षरण करना या होना। चन्दन घिसा जाता है।

रगड़ना दो उपकरणो से या एक उपकरण से किसी वस्तु के समग्र को विकृत कर देना। चटनी रगडी जाती है, पीसी जाती है।

पीसना रगड़कर किसी वस्तु को चूर्ण बना देना। दवा रगडी और पीसी जा सकती है, किन्तु चूर्ण या चून पीसा जाता है।

टिप्पणी – 'रगड़' से चूर्ण नही बनता, पीसने से वस्तु का चूर्णित होना आवश्यक है।

29. **चलना** · गन्तव्य की ओर गति, चलना है।

टहलना स्वास्थ्य के हित में धीरे-धीरे इधर-उधर घूमना टहलना होता है।

30 **तलना** · स्निग्ध पदार्थ मे वस्तु को पकाना।

भूनना आग पर किसी कठोर वस्तु को खस्ता बनाना।

सेंकना कम ताप से किसी वस्तु को पकाना। इसमे ताप और ताप्य का सम्पर्क आवश्यक है। रोटी, पापड़ सेके जाते हैं।

तापना · किसी वस्तु को गरम करना। इसमें ताप और ताप्य का सम्पर्क नहीं होता।

31. **खाना** . साधारण रूप से किसी वस्तु को उपयुक्त रीति से प्राप्त करना।

निगलना · बिना प्रयास ही किसी वस्तु को अनुपयुक्त रीति से प्राप्त कर लेना।

हड़पना बेईमानी से किसी वस्तु को प्राप्त करना।

32 **रहना** . लम्बी अवधि तक निवास करना।

ठहरना कुछ समय के लिए रुकना।

33. **चिल्लाना** निरुद्देश्य जोर-जोर से शोर करना या तेज ध्वनि में कुछ कहना।

पुकारना . किसी को तेज ध्वनि में बुलाना।

34. **गढ़ना** . एक साम्ग्री से ही किसी वस्तु को तैयार करना। कुर्सी, मेज गढ़ी जाती है। बात भी गढ़ी जाती है।

बनाना — किसी भी वस्तु को तैयार करना, साकार रूप देना। मकान बनाया जाता है।

टिप्पणी .— 'बनाना' सामान्य है और गढना विशेष; यथा– आभूपण गढे जाते हैं और बनाए भी जाते है, किन्तु मकान बनाया जाता है, गढा नही जाता है। चारपाई बनाई जाती है, गढी नही जाती है।

बोलने की निश्चित शब्दावली

1 सिंह **दहाड़ता** है।

2 हाथी **चिंघाड़ता** है।

3 घोडा **हिनहिनाता** है।

4 गाय **रँभाती** है।

5 **भैंस अरड़ाती हैं**

6 ऊँट **बलबलाता** है।

7 बिल्ली **खिसियाती** है या **म्याऊँ-म्याऊँ** करती है।

8 बकरी **मिमियाती** है।

9. बकरा **बो-बो** करता है।

10. कुत्ता गुर्राता या **भौंकता** है।

11 कुञ्जे **कुर्राती** है।

12 कोयल **कूकती** है।

13 चिडिया **चहचहाती** है।

14. कौआ **कॉव-कॉव** या **कॉय-कॉय** करता है।

15. मोर **केकता** है।

16 पपीहा **पीऊ-पीऊ** करता है।

17 मेढक **टर्राते** हैं।

18. भौंरें **गुञ्जार** करते हैं।

21 मक्खियॉ **भिनभिनाती** हैं।

22. उल्लू **घुघुआता** है।

23. कबूतर **गुटकता** है, **गुटरता** है।

24. गदहा **रेंकता** है।

25 चूहा **चूँ-चूँ** करता है।

26 झीगुर **झकारता** है।

27 तोता **टे-टे** करता है।

28 बदर **किकियाता** है।

29 सॉप **टिटकारता** है, **फुफकारता है।**

30 सियार हुऑ-हुऑ करता है।

31 भैंस **चुकरती** है।

32 बनक **के-के** करती है।

33 भेडा **भे-भे** करता है।

34 मुर्गा **बॉग** देता हैं।

35 मुर्गी **कुकडती** या **कुकडूँ-कूँ** करती है।

36 बाघ **गुर्राता** है।

37 भालू **खो-खो** करता है।

38. सूअर **किकियाता** है।

39 सॉड **डकारता** है।

40. शेर **गरजता** है।

41 हंस **कूजता** है।

अन्य बोलियॉ

बादल	**गरजते** है।
चिता	**चटचटाती** या चट्चट् करती है।
रुपए	**खनकते** है।
घडी	**टिक-टिक** करती है।
हवा	**सनसनाती** है।
जूता	**मचमचाता** या **चरमराता** है।
चूंडियॉ	**खनखनाती** है।
दिल	**धक्-धक्** करता या धड़कता है।
दॉत	**कटकटाते हैं, सलसलाते हैं।**
पत्ते	**खड़कते** हैं।

शस्त्र	**झनझनाते** है।
कपडा	**फड़फड़ाता** है।
बिजली	**कड़कती** या **कौंधती** है।

कुछ शब्दो के साथ-साथ कुछ विशिष्ट अर्थो मे विशिष्ट क्रियाएँ प्रयुक्त होती है।

1 बम फटता है।

2 बंदूक चलती है

3 गोली लगती है।

4 पानी खौलता है।

5 दूध उबलता है।

6 कीचड या पगडी उछाली जाती है।

7 आँख, उँगली, गरदन, बोझ, मुसीबत, सिर उठाया जाना है।

8 कष्ट भोगा जाता है और बीडा चबाया जाता है।

9 शराब ढाली जाती है, पानी उडेला जाता है और भाँग छानी जाती है।

10 जान खाई जाती है और प्राण पीये जाते हैं।

11 रौब या अड्डा जमाया जाता है, धूनी लगाई जाती है।

12 धज्जियाँ, धूल, मौज, हँसी उडाई जाती है

13 शख फूँका जाता है।

14 कान, गला, घास, दिन और पेट काटा जाता है।

15 चुगली खायी जाती है, निंदा की जाती है

16. टक्कर या ठोकर खाई जाती है।

17 शपथ ली जाती है।

18 सूली पर चढाया जाता है और फॉसी पर लटकाया जाता है।

19 ऑख, अरमान, दॉत निकाले जाते है।

20. नजर, परदा, पूरा, पल्ले, पिल, भिड, पीछे, बरस पडा जाता है।

21 कान, भाग्य या किस्मत खुलते या फूटते है।

22. ऑख, नियत्रण, निगाह, याद श्रद्धा, रखी जाती है, प्रेम किया जाता है।

23 छवि, शोभा, नियत, आदत बिगडती है।

24 ठिकाने लगाया जाता है और ऑख मारी जाती है।

25. दुकान और दीपक बढाए जाते हैं।

26 घात लगाई जाती है और शिकार खेला जाती है।

27 अडगा लगाया जाता और अवरोध डाला जाता है

28 खून, पसीना बहाया जाता है, ताकत लगायी जाती है।

29. दिल बहलाया या लगाया जाता है।

30 कान काटे जाते हैं और हाथ-पैर तोडे जाते हैं।

31. लडाई लडी जाती है और युद्ध किया जाता है।

32. लाठियाँ तानी जाती हैं और तलवार खींची जाती है।

33 तूफान आता है, हवा चलता है, किन्तु हवा का झोका आता है।

34. तकलीफ उठाई जाती है और औपचारिकता निभाई जाती है।

35. लडाई छिडती है, झगड़ा होता है।

प्रकार या काल सम्बन्धी भूले

1. आप वहाँ **जाओगे**। (जाएँगे)

2 तू **आये** हो। (आया है)

3 आप **सुनाओ**।(सुनाएँ)

4 सभी को दीवाली **मनाना** चाहिए।(मनानी)

5. सैनिक मैदान में **दौड खड़े** हुए। (लाएगा)

6. यदि वह कलकत्ता गया तो पुस्तक **लाया**। (लाएगा)

7. यदि वह **आया** तो गाना सुनाता। (आता)

8. वह **खावेगा**। (खाएगा)

9. उसने मुझे एक रसगुल्ला **खुवाया**। (खिलाया)

10. देखिए, औपचारिकता **न करें**। (मत कीजिए)

11. आप वहाँ **मत जाओ**। (न जाएँ)

12 जब टिकट लें तो रेजगी भली प्रकार देख **लीजिए**। (लें)

13. आपको चाहिए कि आप उनसे **मिलते**। (मिले)

14. छात्रों को चाहिए था कि वे सूचना पर **देखें**। (देखते)

15. यदि पढ सकें तो बड़ी कृपा **होगी**।(हो)

16 मैं चाहता हूं कि वह अवकाश पर चला **जाता**। (जाए)

17 मै चाहता हूँ कि वह अवकाश पर चला **जाए**।(जाता)

18 वे हमारे महाविद्यालय में **पढे हुए थे**।(पढे थे)

19 वे चाहते थे कि हम **आ जाएँगे**। (आ जाएँ)

20 फिर भारतीय भी उच्च पदों पर नियुक्त **किया** जाने लगे। (किये)

21. वह प्रतिदिन **आए** करता है। (आया)

22. पकडी जाने पर वह **स्त्री** बोली। (पकडे)

23. दवा तो **देना ही** चाहिए था। (देनी)

24 वह **पढकर के** जाएगा। (पढकर)

25. कन्याकुमारी **से लेकर** काश्मीर तक। (से)

26. ऑसू गैस छोड़कर **उपद्रवी पकड़े गये**। (उपद्रवियों को पकड लिया गया)

27. ऑसू गैस **छोड़कर** उपद्रवी पकडे जा सके। (छोडने पर)

28 मैंने यह पुस्तक **पढ़ी हूँ**। (पढी है)

29 **पढे-लिखे** हुए व्यक्ति भी उद्दण्ड हो गये। (पढे-लिखे)

30. उसने **जाती-जाती** कहा। (जाते-जाते)

31. मैं **आता-आता** रुक गया। (आते-आते)

32. लडकी को **पढ़नी** चाहिए था। (पढ़ना)

33. गत वर्ष, यह कहाँ **पढ़ता है** ? (था)

34. वह कल ही आया है। (था)

35 वह अभी-अभी आया था। (है)

36. मुझे दो साड़ियाँ चाहिए। (चाहिएँ)

37 अब आप **पूछें**। (पूछिए)

38 हमारे वार्तालाप का माध्यम मातृभाषा **होनी** चाहिए। (होना)

39 आपको पढते **रहने** चाहिए। (रहना)

40 यह कार्य तुम **कीजिओ**। (करो या करना)

■ ■ ■

5

क्रिया विशेषण सम्बन्धी भूलें

सामासिक क्रिया विशेषण शब्दों में किसी भाव या अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों की विद्यमानता में भी हम कभी-कभी उसके पर्यायवाची दूसरे शब्दों का प्रयोग कर बैठते हैं और इस प्रकार वाक्य की छवि बिगड जाती है। ऐसे प्रयोग अनावश्यक होते हैं –

अनावश्यक प्रयोग

1 वह प्रात काल **के समय** आपके पास आएगा।

2 वह सायकाल **के समय** घूमने जाता है।

3 वह **सारे** दिन भर घूमता रहा। (सारे या भर में से एक)

4 वे **परस्पर एक दूसरे को** देखने लगे।(दो में से एक)

5 इन दोनो में **केवल** यही अन्तर है।

6 चाहे जैसे **भी** करो, करना पडेगा।

7 **कृपया** इसे वह कल कर देगा।

8 उसके पास **केवल** मात्र एक रुपया रह गया।

9 **केवल** इसीलिए वह न पढ़ सका।

10. उसके बाद वे **वापस** लौट आए।

11. **इधर** आजकल इसका चलन हो गया है।

12. ये सब कुछ **केवल** कथन भर था।

13 वह स्वय **ही** उसको पढाएगा।

14 वह अवश्य **ही** वहां जाएगा।

15. **शायद** उसे अवश्य सफलता मिलेगी।

16 यहां **पर** कुछ गन्दी रहती है।

17 वह सदैव **ही** पाठ करता है।

18 वह अत्यन्त **ही** परिश्रमी है।

19 उसके **एकमात्र** पिता आप नहा रह।

20 वह क्यों कर **और कैसे** उससे लड रहा है ?

21 यह कदापि **भी झूठ** नही बोलता।

22. वह अभी **ही** गया है।

23 **सारे** देश **भर** में उत्सव मनाया जा रहा था। (दो में से एक)

24 वह **लगभग** रोने लगा।

25 उसने **लगभग** सारा काम पूरा कर लिया है।

26 हमारे **पारस्परिक** साथी हरीश।

27 आप लोग परस्पर **में** समझ लेना।

28 मैं **लगभग** चुप था।

29 आपने **बहुत** ठीक ही कहा।

30 मैं दोपहर **के समय** आऊँगा। (को)

31 वह **प्राय** कभी-कभी आता था।

अनुपयुक्त प्रयोग –

1. मानस बहुत ही **विद्वत्तापूर्ण** लिखा गया था (विद्वत्तापूर्वक)

2 उसका सर **नीचे** था (नीचा)

3 आपके आदेशों के **अनुकूल** चल रहा हूं। (अनुसार)

4. वह लडका आपकी प्रकृति **के अनुकूल** ही था। (के अनुरूप)

5. उसने अपने स्वभाव के **अनुरूप** कार्य किया। (अनुकूल)

6. यह मेरा कॉलेज है, जहां मैं पढ़ाता हूँ। (जहाँ)

7 इसके निराकरण के **एकमात्र** दो उपाय हैं। (मात्र या केवल)

8 सीमा पर पाकिस्तान की दस लाख सेना **तत्काल** मौजूद है। (इस समय)

9 देश के नवयुवक दृढ़ सगठित रहें। (दृढता से)

10 वे इसे **नही** बता सकते है, न समझा सकते हैं। (न)

11 शोर **नही** करो। (मत)

12 पुस्तक **साभारपूर्वक** प्राप्त की। (आभारपूर्वक)

13 राज्यादेश जारी होते ही **तत्काल** से लागू हो गया। (उसी समय)

14 उसका **भारी** अनुरोध था। (बहुत)

15 उसने अपना कार्य सरलता **पूर्वक** कर लिया। (से)

16 मैं वहाँ **न** जाऊँगा। (नहीं)

17 वह **नही** हँसता, **नही** बोलता है। (न...न)

18. **सदाकाल** से सुनता आ रहा हूँ। (सदा से)

19 दोपहर **का समय** था।(दो पहर था)

20 यह **रोती-रोती** सो गयी। (रोते-रोते)

21. वह **कहा** भी रहता हो, ले आओ। (जहाँ)

22 **यदि** वह गया, फिर भी जम न पाया। (यद्यपि)

23 आप चाहे कितना ही परिश्रम करे **तो भी** सफल न होंगे।(पर)

24 यद्यपि वह पढता रहा, **किन्तु** उसकी समझ में कुछ भी नही आया। (तथापि)

25 जैसे इनमें मैत्री थी, **उसी प्रकार** इनमे शत्रुता भी। (वैसे)

26 जितना अश मैंने देखा है, **वह** अत्यन्त आकर्षक है।

27 इतना दमन तो अंग्रेजों के शासन मे भी नही था, **जैसा** आज हो रहा है। (जितना)

28 जैसा करोगे, **वही** फल पाओगे। (वैसा)

29 वह **लगभग** पहुंच चुका है। (प्राय·)

30. **प्राय** एक सप्ताह हो गया। (लगभग)

टिप्पणी- (1) 'केवल', 'मात्र', 'भर' और 'ही' समानार्थक है। अत इनका एक ही वाक्य में साथ-साथ प्रयोग नही होगा। इसी प्रकार अधिकतावाची शब्दों के साथ भी 'ही' का प्रयोग शिष्ट नही है।

(ii) कालबोधक क्रिया-विशेषण शब्दों के साथ पुनः 'समय' शब्द का प्रयोग नही करना चाहिए।

(iii) 'कही', 'वही', 'जही', 'सभी' आदि शब्दों में 'ही' पहले ही विद्यमान है। अत इनके साथ पुन 'ही' का प्रयोग अशुद्ध होगा।

(iv) 'परस्पर', 'दरअसल' और दरहकीकत' के साथ 'मे' परसर्ग नहीं लगाना चाहिए।

(v) 'अनुरूप', 'अनुकूल' और 'अनुसार' के अर्थों में अन्तर है। रूप की एकता अनुरूप, एक साथ या पक्ष में होना अनुकूल और किसी के पीछे चलना अनुसार होता है। इसमें रूप, कूल और सर (सृ) की प्रधानता है।

6

अव्यय सम्बन्धी भूलें

अव्यय शब्दों के प्रयोग मे हम कभी-कभी ऐसी भूले कर जाते हैं कि अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अत इनका प्रयोग भी अन्य शब्दों की भति सतर्कता से करना चाहिए। कुछ सकेत–

1 एक से अधिक व्यक्ति, वस्तु स्थान या भाव का प्रयोग करते समय अन्तिम शब्द से पूर्व आवश्यक अव्यय शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए।

2 एकाधिक वाक्यों की सरचना में समुच्चय बोधक अव्यय शब्दों का प्रयोग करना मत भूलिए।

3. उपयुक्त अव्यय शब्दो का उपयुक्त स्थान पर ही प्रयोग करना चाहिए।

4. अव्यय शब्दों का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कही वह अर्थ को बिगाड तो नहीं रहा है।

कुछ उदाहरण

अव्यय का प्रयोग आवश्यक –

1. कक्ष में लडके, लडकियॉ _____प्राध्यापक उपस्थित थे। (और)
2 मैं _____ आया था कि आपसे विचार-विमर्श कर लेता। (इसलिए)
3. मैं सुनता रहा____ बोल न सका (परन्तु)
4 वह रोता रहा___हम सान्त्वना न दे सके। (किन्तु)
5. हम _____ निरक्षर है, किन्तु मूर्ख नही है। (चाहे)
6. वह कहेगा____मै उसे अवश्य यहॉ लाऊँगा। (तो)
7 उसने कहा____आप वहा अवश्य चले जाना। (कि)
8 लोग पुलिस से ___सहयोग नहीं करते कि वह बताने वाले को ही तंग करती है। (इसलिए)
9. जहॉ जाओगे __ मै मिलूगा (वहॉ)

10 वह इसलिए बैठा था____ कोई साथी ही मिल जाए। (कि)

अनावश्यक प्रयोग

1. घर मे कुर्सी, मेजें, सोफे और **मूढ़े** आदि पडे थे।
2 मै आया ही था **जब कि** वे भी आ गये।
3 सचमुच वे लोग भाग्यशाली है **कि** जिन्हें आज सम्मान मिलता है।
4 प्राय **करके** लोग झूठ बोलते है।
5 जो परिश्रमी होता है, **फिर** वह भाग्यवादी नहीं होता।
6 मैं ऐसा नही समझता जैसे **कि** आप समझते हैं।
7 यहॉ पर 'आ' प्रत्यय लगता है, उदाहरणार्थ **यथा**' अजा, बला।
8. मान लो **यदि** वह भाग जाए तो________
9. कदाचित् **यदि** वह आक्रमण कर देता तो।
10 जो कुछ तुम कह कर गये थे, **सो** अब उसे पूरा करो।

अनुपयुक्त :-

1 सीकर और लोशल **के बीच** टंगे भडके।(में)
2 **देश व काल** का ध्यान रखना आवश्यक है। (और)
3 आप वह खेला नहीं, **कि** उसकी टॉग मे दर्द था। (क्योकि)
4 वह अपनी पुस्तक **की अपेक्षा** दूसरे की ले गया। (के स्थान पर)
5 वहॉ अपार जन-समूह **एकत्रित** था। (एकत्र)
6 कुछ लोग हिन्दी भाषा **के बीच** उर्दू के शब्द ठूस रहे हैं। (में)
7 यदि कही वह मिल जाता, **तब** मै उसे मार डालता।(तो)
8. वे सन्तान **को लेकर** दुखी थे। (के कारण)
9 इस विषय **को लेकर** दोनो लड पडे। (पर)
10 विद्यार्थी खूब परिश्रम करते है, **क्योकि** वे पास हो जाऍ।(ताकि)
11 चुप रहो **कि** पिताजी नाराज हो जाएगे। (नही तो)
12 ज्यो ही अध्यापक पहुचा **वैसे ही** लडके खड़े हो गये। (त्यो ही)
13 जैसे ही वह भाषण देने लगा, **त्यों ही** सभा मे हलचल मच गई। (कि)
14 राम पराक्रमी ही नही, **किन्तु** वलवान भी था। (बल्कि)
15 राम सुन्दर ही नही था, **वरन्** शीलवान भी था (बल्कि)

16 जहॉ-जहाँ चरण पडे सन्तन के **तव-तव** बण्टाढार। (तहां-तहां)

17 देश मे समा इसलिए नही है, **क्योंकि** लोग उत्पादन पर ध्यान नही देते। (कि)

18 आज वह इसलिए नही आया **क्योंकि** वह अस्वस्थ था। (कि)

19 जहां मनुष्य गरीब है **उसी प्रकार** निकम्मा भी है। (वहा)

20 जब मैं पढने लगा **उस समय** वह आ धमका। (तब)

21 यदि वह कुछ मोटा न होता **तब** और भी तेज दौडता। (तो)

22 यद्यपि उसे अपमानित किया गया **तब भी** वह कुछ न बोला। (तो भी)

23 राम पढ भी रहा था **एव कुछ** सोचता भी जा रहा था। (तथा)

24 जैसे ही गाडी चलने लगी, **त्यो ही** किसी ने जजीर खीच ली। (वैसे ही)

25 तुम्हें काम करना है तो करो **या** अपने घर जाओ। (अन्यथा)

नित्य सम्बन्धी अव्ययो का प्रयोग –

इन अव्ययो का प्रयोग जोडो के साथ होता है। एक के प्रयुक्त होने पर दूसरे का प्रयुक्त होना आवश्यक होता है। जैसे–

ज्यो ही-त्यो ही, यद्यपि-तथापि, क्योंकि-इसलिए, यदि-तो, जिस समय-उस समय, जितने-उतने, इसलिए-क्योंकि, जहॉ-वहाँ, न तो न ही।

1	ज्यो ही मै स्टेशन पहुॅचा, गाडी रवाना हो गई।	ज्योही मैं स्टेशन पहुचा, त्योंही गाडी रवाना हो गई।
2	जैसे तुम आलसी हो, उतने ही कायर भी ही हो।	जितने तुम आलसी हो, उतने ही कायर भी हो।
3	इससे न तो तुम्हे हानि होगी, न तो जदनामी होगी।	इसमें न तो तुम्हे हानि होगी, न ही बदनामी होगी।
4	मैं प्रसन्न हूॅ, क्योंकि तुम परिश्रमी हो।	मै इसलिए प्रसन्न हू, क्योंकि तुम परिश्रमी हो।
5	क्योंकि राम युवक है, वह तेज चलता है।	क्योकि राम युवक है, इसलिए वह तेज चलता है।
6	जहाँ मनुष्य विवश है, उसी प्रकार वह असमर्थ भी है।	1 जहॉ मनुष्य विवश है, वहॉ असमर्थ भी है। 2 जिस प्रकार मनुष्य विवश है उसी प्रकार असमर्थ भी है।

■ ■ ■

7
समास

समास- दो या दो से अधिक पदो को मिलाकर जब एक पद बना दिया जाता है, तब उस मेल या योग को समास कहते है और निष्पन्न शब्द सामासिक कहलाता है, यथा रामावतार, विद्यालय, रसोईघर, माँ-बाप, छोटा-बडा आदि सामासिक शब्दो में राम का अवतार, विद्या के लिए आलय, रसोई के लिए घर, माँ और बाप, छोटा और बड़ा शब्द मिलकर सामासिक शब्द बने है। इन शब्दो में योग से पहले दो-दो शब्दो के बीच क्रमश 'का', 'के लिए, 'और' जैसे परसर्ग और योजक शब्द आए हैं, किन्तु सामासिक शब्दो मे ये शब्दांश नहीं है। अत स्पष्ट है कि जब दो पदो का योग होता है, तो उन पदो के विभक्ति प्रत्ययो या उपसर्गो का लोप हो जाता है और फिर सामासिक शब्द के साथ यथावश्यक परसर्गो का प्रयोग किया जाता है।

ध्यातव्य-

(i) समास करते समय विभक्ति प्रत्ययो, परसर्गो या योजक शब्दो का लोप हो जाता है।

(ii) सस्कृत भाषा मे समास के समय दो शब्दों के अन्त्य एवं पूर्व वर्णो के समीप आने पर नित्य सन्धि होती है, किन्तु हिन्दी भाषा में ऐसा प्राय. नहीं होता।

(iii) सामासिक शब्द का यथावश्यक एक शब्द की तरह सम्बद्ध परसर्गो के साथ प्रयोग किया जाता है।

(iv) हिन्दी भाषा में तद्भव शब्दावली के सामासिक शब्द के साथ जब परसर्ग लगाया जाता है तब 'पूर्व' एव 'पर' दोनो पदों मे समान विकार उत्पन्न होता है, जबकि सस्कृत में ऐसा नही होता।

(v) हिन्दी भाषा मे जब दो पदों का समास किया जाता है, तब अनेक अवसर ऐसे आते हैं कि पूर्व पद में ध्वन्यात्मक विकार उत्पन्न होता है। सस्कृत मे ऐसा नही होता, यथा- आम का चूरा = अमचूर, आधा मरा हुआ = अधमरा।

(vi) द्वन्द्व समास और सम्बन्ध तत्पुरुष समास में दो शब्दों के मध्य योजक चिन्ह लगाया जाता है या उसे फिर एक शब्द की तरह मिलाकर लिखा जाता है।

विग्रह- यह समास का विलोम शब्द है। जब दो पदों का योग होता है तब समास होता है और जब किसी सामासिक शब्द को पृथक-पृथक कर स्पष्ट किया जाता है, तब उसे समास विग्रह कहा जाता है, यथा- 'धर्म सम्पन्न' सामासिक शब्द है क्योकि इसमे दो पदों– 'धर्म' और सम्पन्न 'का' योग स्पष्ट है। जब इसका विग्रह किया जाएगा तब होगा 'धर्म से सम्पन्न'। अत: स्पष्ट है कि 'धर्मसम्पन्न' समास है और 'धर्म से सम्पन्न' यह सामासिक शब्द का विग्रह है।

समास के भेद

पदो की प्रधानता और अप्रधानता के आधार पर समास के मुख्यत चार भेद हो सकते है, यथा-पूर्व पद प्रधान, पर पद प्रधान, दोनो पद प्रधान और दोनों पद अप्रधान। इसी आधार को मान कर इनके नामकरण भी कर दिए गए हैं; यथा-

1 अव्ययी भाव समास,

2 तत्पुरुष समास,

3 द्वन्द्व समास और

4 बहुब्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास – सस्कृत मे इसकी परिभाषा इस प्रकार की गई है कि 'जिस समास का पूर्व पद अव्यय होता है, वहॉ अव्ययीभाव समास होता है' और सस्कृत भाषा में यह परिभाषा खरी उतरती है, किन्तु हिन्दी भाषा के ऐसे समासो के लिए परिभाषा मे कुछ सशोधन करना पडेगा, क्योकि कुछ ऐसे अव्ययी भाव समास भी हिन्दी मे मिलते है जिनका पूर्व पद अव्यय नही होता। हिन्दी के अनुसार अव्ययी भाव समास की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है– जिस समास का पूर्व पद प्रधान हो और सामासिक शब्द क्रिया-विशेषण अव्यय बन जाता हो, उसे अव्ययी भाव समास कहा जाता है। यथा-प्रतिदिन, यथाशक्ति, यथामति, आजन्म, व्यर्थ आदि।

हिन्दी में अव्ययीभाव समास की सरचना दो प्रकार से की जाती है –

(1) सस्कृत की पद्धति पर जिसमे मुख्यत. तत्सम शब्दावली का ही प्रयोग होता है और पूर्व पद अव्यय होता है।

(2) हिन्दी की अपनी पद्धति पर जिसमें पूर्व पद अव्यय, सज्ञा या विशेषण कोई भी हो सकता है और सामासिक शब्द अव्यय हो जाता है। भाषायी दृष्टि से हिन्दी अव्ययी भाव समासों को चार वर्गो में विभाजित किया जा सकता है –

(i) विशुद्ध संस्कृत भाषा के सामासिक शब्द,

(ii) हिन्दी के अपने सामासिक शब्द,

7

समास

समास- दो या दो से अधिक पदो को मिलाकर जब एक पद बना दिया जाता है, तब उस मेल या योग को समास कहते है और निष्पन्न शब्द सामासिक कहलाता है, यथा रामावतार, विद्यालय, रसोईघर, मॉ-बाप, छोटा-बडा आदि सामासिक शब्दो मे राम का अवतार, विद्या के लिए आलय, रसोई के लिए घर, मॉ और बाप, छोटा और बडा शब्द मिलकर सामासिक शब्द बने है। इन शब्दो में योग से पहले दो-दो शब्दो के बीच क्रमश· 'का', 'के लिए, 'और' जैसे परसर्ग और योजक शब्द आए हैं, किन्तु सामासिक शब्दो मे ये शब्दांश नही है। अत स्पष्ट है कि जब दो पदो का योग होता है, तो उन पदो के विभक्ति प्रत्ययो या उपसर्गो का लोप हो जाता है और फिर सामासिक शब्द के साथ यथावश्यक परसर्गो का प्रयोग किया जाता है।

ध्यातव्य-

(i) समास करते समय विभक्ति प्रत्ययो, परसर्गो या योजक शब्दो का लोप हो जाता है।

(ii) सस्कृत भाषा मे समास के समय दो शब्दों के अन्त्य एव पूर्व वर्णो के समीप आने पर नित्य सन्धि होती है, किन्तु हिन्दी भाषा में ऐसा प्राय नही होता।

(iii) सामासिक शब्द का यथावश्यक एक शब्द की तरह सम्बद्ध परसर्गो के साथ प्रयोग किया जाता है।

(iv) हिन्दी भाषा मे तद्‌भव शब्दावली के सामासिक शब्द के साथ जब परसर्ग लगाया जाता है तब 'पूर्व' एव 'पर' दोनो पदो मे समान विकार उत्पन्न होता है, जबकि सस्कृत मे ऐसा नही होता।

(v) हिन्दी भाषा मे जब दो पदो का समास किया जाता है, तब अनेक अवसर ऐसे आते हैं कि पूर्व पद में ध्वन्यात्मक विकार उत्पन्न होता है। सस्कृत मे ऐसा नही होता; यथा- आम का चूरा = अमचूर, आधा मरा हुआ = अधमरा।

(vi) द्वन्द्व समास और सम्बन्ध तत्पुरुष समास में दो शब्दों के मध्य योजक चिन्ह लगाया जाता है या उसे फिर एक शब्द की नरह मिलाकर लिखा जाता है।

विग्रह- यह समास का विलोम शब्द है। जब दो पदों का योग होता है तब समास होता है और जब किसी सामासिक शब्द को पृथक-पृथक कर स्पष्ट किया जाता है, तब उसे समास विग्रह कहा जाता है, यथा- 'धर्म सम्पन्न' सामासिक शब्द है क्योकि इसमे दो पदों- 'धर्म' और सम्पन्न 'का' योग स्पष्ट है। जब इसका विग्रह किया जाएगा तब होगा 'धर्म से सम्पन्न'। अत· स्पष्ट है कि 'धर्मसम्पन्न' समास है और 'धर्म से सम्पन्न' यह सामासिक शब्द का विग्रह है।

समास के भेद

पदो की प्रधानता और अप्रधानता के आधार पर समास के मुख्यत चार भेद हो सकते है, यथा-पूर्व पद प्रधान, पर पद प्रधान, दोनो पद प्रधान और दोनो पद अप्रधान। इसी आधार को मान कर इनके नामकरण भी कर दिए गए हैं; यथा-

1 अव्ययी भाव समास,

2 तत्पुरुष समास,

3 द्वन्द्व समास और

4 बहुब्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास – सस्कृत मे इसकी परिभाषा इस प्रकार की गई है कि 'जिस समास का पूर्व पद अव्यय होता है, वहाॅ अव्ययीभाव समास होता है' और सस्कृत भाषा मे यह परिभाषा खरी उतरती है, किन्तु हिन्दी भाषा के ऐसे समासो के लिए परिभाषा मे कुछ सशोधन करना पड़ेगा, क्योकि कुछ ऐसे अव्ययी भाव समास भी हिन्दी में मिलते है जिनका पूर्व पद अव्यय नही होता। हिन्दी के अनुसार अव्ययी भाव समास की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है– जिस समास का पूर्व पद प्रधान हो और सामासिक शब्द क्रिया-विशेषण अव्यय बन जाता हो, उसे अव्ययी भाव समास कहा जाता है। यथा-प्रतिदिन, यथाशक्ति, यथामति, आजन्म, व्यर्थ आदि।

हिन्दी में अव्ययीभाव समास की संरचना दो प्रकार से की जाती है –

(1) सस्कृत की पद्धति पर जिसमे मुख्यत तत्सम शब्दावली का ही प्रयोग होता है और पूर्व पद अव्यय होता है।

(2) हिन्दी की अपनी पद्धति पर जिसमे पूर्व पद अव्यय, सज्ञा या विशेषण कोई भी हो सकता है और सामासिक शब्द अव्यय हो जाता है। भाषायी दृष्टि से हिन्दी अव्ययी भाव समासों को चार वर्गो मे विभाजित किया जा सकता है –

(I) विशुद्ध सस्कृत भाषा के सामासिक शब्द,

(II) हिन्दी के अपने सामासिक शब्द,

(iii) उर्दू भाषा से आगत सामासिक शब्द और

(iv) सकर सामासिक शब्द।

(i) विशुद्ध सस्कृत भाषा के सामासिक शब्द-

यथाशक्ति	यथामति	यथानुरूप
यथासमय	यथावश्यकता	यथास्थान
यथार्थ	यथाक्रम	यथासम्भव
यथासाध्य	यथास्थिति	यथाविधि
आजन्म	आमरण	आश्वस्त
आश्वासन	यावज्जीवन	प्रतिदिन
प्रतिपल	प्रत्येक	प्रतिकूल
अनुरूप	अनुसार	अनुकूल

(ii) हिन्दी के अपने सामासिक शब्द –

भरपेट	निडर	निधडक
दिन-दिन	पल-पल	घर-घर
हाथो-हाथ	रातों-रात	दिनो-दिन
कोठे-कोठे	रोते-रोते	सोते-सोते
मन ही मन	आप ही आप	मुँहें-मुँह
सिरे-सिर	कटा-कट	एकाएक

(iii) उर्दू के सामासिक शब्द –

हरसाल	बेशक	हर रोज
नाहक	बेफायदा	बखूबी
सरासर	बर्जिस	लाजवाब

(iv) संकर सामासिक शब्द –

ये शब्द भिन्न-भिन्न भाषाओ के योग से बनाए जाते हैं :–

बेकाम	हर घड़ी	हर पल
हर वर्ष	बेधड़क	बेखटके
आये दिन	हर दिन	

2. तत्पुरुष समास –

तत्पुरुष समास वहॉ होता है, जहॉ पर पद प्रधान होता है और प्रत्येक पूर्व पद के साथ कर्ता तथा सम्बोधन कारक को छोडकर अन्य कारक का परसर्ग लगा होता है, जिसका समास में लोप हो जाता है। यथा– राजा का कुमार= राजकुमार, यज्ञ के लिए वेदी= यज्ञवेदी आदि।

तत्पुरुष समास के दो भेद होते हैं –

1 व्याधिकरण तत्पुरुष और

2 समानाधिकरण तत्पुरुष।

1. व्याधिकरण तत्पुरुष समास –

जिस तत्पुरुष समास में पूर्व पद और उत्तर पद की विभक्तियॉ या परसर्ग पृथक-पृथक होते हैं, वहॉ व्याधिकरण तत्पुरुष समास होता है। संस्कृत में इन्हे द्वितीया तत्पुरुष या चतुर्थी तत्पुरुष जैसे नामों मे विभक्त्यानुसार अभिहित किया जाता है, किन्तु हिन्दी मे द्वितीया, तृतीया जैसी सज्ञाए न होने के कारण इन्हे कारकानुमार अभिहित किया जाता है। यथा–कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष आदि। इस आधार पर व्याधिकरण तत्पुरुष के छह उपभेद हो सकते हैं :–

(i) कर्म तत्पुरुष– जिसका पूर्व पद कर्म परसर्ग से युक्त रहा हो-

स्वर्ग को प्राप्त= स्वर्गप्राप्त, देश को गया हुआ = देशगत,

जेब को काटने वाला = जेबकट, सब कुछ जानने वाला = सर्वज्ञ

(ii) करण तत्पुरुष- जिसका पूर्व पद करण परसर्ग युक्त रहा हो-

मद से अन्धा = मदान्ध ईश्वर का दिया हुआ = ईश्वरदत्त,

श्रम से साध्य = श्रमसाध्य, मन से मान लिया हो= मनमाना,

मुॅह से मॉगा हुआ = मुॅहमॉगा, मन से मत्त हुआ = मदमाता।

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष- जिमका पूर्व पद सम्प्रदान परसर्ग युक्त रहा हो –

यज्ञ के लिए वेदी = यज्ञवेदी, सभा के लिए मण्डप = सभामण्डप,

राष्ट्र के लिए भक्ति = राष्ट्रभक्ति, रसोई के लिए घर = रसोईघर,

विद्या के लिए आलय = विद्यालय, देव के लिए आलय = देवालय

(iv) अपादान तत्पुरुष- जिसका पूर्व पद अपादान के परसर्ग से युक्त हो –

ऋण से मुक्त = ऋणमुक्त, सेवा से मुक्त = सेवामुक्त

देश से निकाला = देशनिकाला, गुरु के कारण भाई = गुरुभाई,

स्थान से च्युत = स्थानच्युत, वेद से विमुख = वेदविमुख।

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष- जिसका पूर्व पद सम्बन्ध परसर्ग से युक्त रहा हो –

राजा का कुमार = राजकुमार नरो का ईश = नरेश

भू का पति = भूपति, राम की कहानी = रामकहानी

गृह का पति = गृहपति गणो का ईश = गणेश

(vi) अधिकरण तत्पुरुष – जिसका पूर्व पद अधिकरण के परसर्ग से युक्त रहा हो–

ग्राम में बसने वाला = ग्रामवासी;गृह से स्थित = गृहस्थी

गृह मे प्रवेश = गृहप्रवेश, आप मे बीती हुई = आपबीती

कान में फुसफुसाहट करना = कानाफूसी,

मुनियो मे श्रेष्ठ = मुनिश्रेष्ठ

इनके अतिरिक्त व्याधिकरण तत्पुरुष समास के अलुक तत्पुरुष, उपपद तत्पुरुष और नञ् , तत्पुरुष जैसे भेद भी होते हैं। हिन्दी मे भी इनके उदाहरण मिल जाते है। तत्सम शब्दो मे तो मिलते ही हैं। कतिपय उदाहरण तद्भव शब्दों मे भी मिल जाते है।

(क) अलुक् तत्पुरुष . – जहॉ परसर्ग या विभक्ति का लोप नही होता –

सस्कृत मे – मनसिज, सरसिज, युधिष्टिर, वाचस्पति, कर्तरिप्रयोग, कर्मणिप्रयोग. परमेश्वर आत्मनेपद आदि।

हिन्दी मे :- चूहेमार, खोंचेवाला, कलकत्ते वाली, पहरेदार, दावेदार

(ख) उपपद वे तत्पुरुष समास जिसका उत्तरपद ऐसा कृदन्त होता है जिसका स्वतन्त्र प्रयोग नही होता। हिन्दी में ऐसे शब्दांशों को प्रत्यय कहा जाने लगा है –

सस्कृत में:- ग्रन्थकार, जलद, जलज, उरग, कृतज्ञ, कृतघ्न, जलचर, नभचर आदि।

हिन्दी मे·- लकडहारा, तिलचट्टा, कनकटा, बटमार, चिडीमार आदि।

(ग) नञ् , तत्पुरुष : निषेध आदि मे पूर्वपद 'न' या 'अन' हो जाता है।

हिन्दी मे आजकल इसकी गणना उपसर्गो मे की जाने लगी है:-

सस्कृत:- मे : अधर्म अनारम्भ, अज्ञान अनभिज्ञ, अकारण आदि।

हिन्दी मे·- अनजान, अनबन, अनकही, अनचाहा, अटूट, अकाज, अलग आदि।

(1) समानाधिकरण तत्पुरुष समास:-जब पूर्वपद और उत्तर पद दोनो में समान विभक्ति या परसर्ग प्रयुक्त किया ज्ञाता है तब समानाधिकरण तत्पुरुष समास होता है। इसके दो उपभेद होते हैं· – (1) कर्मधारय और (11) द्विगु।

(क) कर्मधारय : - कर्मधारय समास वहां होता है, जहॉ पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है या पूर्वपद उपमान और उत्तरपद उपमेय होता है तथा इसके विपरीत प्रक्रिया भी हो सकती है।

महान है जो देव वह - महादेव　　　　नीली है जो गाय वह - नीलगाय

महान् है जो जन वह - महाजन,　　　　शुभ है जो आगमन वह- शुभागमन

भला है जो मानस वह - भलामानस, काला है जो पानी वह - कालापानी

चन्द्र जैसा मुख वह - चन्द्रमुख,　　　　घन जैसा श्याम - घनश्याम

प्राण जैसा प्रिय वह - प्राणप्रिय,　　　　कमल जैसे चरण - चरणकमल

(ख) द्विगु : – जिस समानाधिकरण तत्पुरुष समास का पूर्वपद संख्या वाचक होता है और जिससे समूह का बोध होता है वह द्विगु समास कहलाता है –

तीन भुवनों का समाहार - त्रिभुवन,　　　　पंच पात्रों का समूह - पञ्चपात्र

तीन राहो का मिलन - तिराहा,　　　　चार मासो का समुदाय - चौमासा

छह माहो का समाहार - छमाही,　　　　दो आनो का समूह - दुअन्नी

(3) द्वन्द्व समास . – जिस समास के सभी पद प्रधान हो अथवा उनका समाहार प्रधान हो वहॉ द्वन्द्व समास होता है। यह समास हिन्दी का प्रिय समास है। इसके तीन भेद होते है - (1) इतरेतर द्वन्द्व

(II) समाहार द्वन्द्व और (III) वैकल्पिक द्वन्द्व।

(1) इतरेतर द्वन्द्व .- जहॉ पर सब पद समुच्चय बोधक और, या, अथवा आदि शब्दो से जुडे हों, वहॉ इतरेतर द्वन्द्व समास होता है –

राधा और कृष्ण - राधाकृष्ण,　　　　मॉ और बाप - मॉ-बाप

गाय और बैल - गाय-बैल,　　　　सीता और राम - सीताराम

दूध और रोटी - दूधरोटी,　　　　कन्द और मूल और फल - कुन्द-मूल-फल

(1) कभी-कभी दो पद मिलकर एक ही वस्तु की सूचना देते हैं और सामासिक शब्द एक वचन मे प्रयुक्त होता है। ये प्राय· द्रव्यवाचक सज्ञाएं होती है –

घी और गुड - घी-गुड,　　　　दाल और रोटी-दाल-रोटी

हुक्का और पानी - हुक्का-पानी,　　　　खान और पान - खान-पान

टिप्पणी : - द्वन्द्व समास मे जब भिन्न लिगी शब्दो का समास होता है तब लिग व्यवस्था प्रयोग से ही जानी जा सकती है। वैसे अधिकतर सामासिक शब्द पुल्लिग ही रहता है

गाय और बैल - गाय-बैल (पु)   दूध और रोटी   दूध-रोटी (स्त्री)

भाई और बहन - भाई-बहन (पु)

(II) समाहार द्वन्द्व :- जिस द्वन्द्व समास से कुछ समानार्थक शब्दो का समास कर उनसे सम्बद्ध अन्य शब्दो के अर्थ का भी समाहार कर लिया जाता है, उसे समाहार द्वन्द्व समास कहते हैं, यथा - 'सेठ-साहूकार' 'सेठ और साहूकार' के अतिरिक्त अन्य सभी धनी लोगो का समाहार भी इस पद में है। इसी प्रकार 'दालरोटी' सभी प्रकार के साधारण भोजन का प्रतीक है। यह समास तीन रूपो मे उलब्ध होता है - (क) समानार्थक शब्दो का समास (ख) मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दो का समास और (ग) सार्थक शब्द के साथ उससे मिलते-जुलते निरर्थक या अप्रचलित शब्द का समास।

(क) समानार्थक शब्दो का समास -

कपडे और लत्ते = कपडे-लत्ते,   लूट और मार = लूटमार

घास और फूस = घास-फूस   कूडा और कचरा = कूडा-कचरा

मोटा और ताजा = मोटा-ताजा   मार और पीट = मार-पीट

(ख) मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दो का समास:-

अन्न और जल - अन्न-जल,   घर और द्वार - घर-द्वार

पान और फूल - पान-फूल,   रहन और सहन - रहन-सहन

मोल और तोल - मोल-तोल,   खाना और पीना - खाना-पीना

(ग) एक पद निरर्थक का समास :-

अडोसी-पडोसी - अडोसी-पडोसी   आस और पास-आस-पास

आमने और सामने - आमने-सामने,   अदला और बदला - अदला-बदला

पान और वान - पानवान   जाट और वाट - जाट-वाट

मिठाई और विठाई-मिठाई विठाई   रोटी और ओटी- रोटी-ओटी

(III) वैकल्पिक द्वन्द्व समास - इस समास मे दोनों पद एक दूसरे के विलोम शब्द होते हैं और या, वा, अथवा जैसे समुच्चय बोधक से जुड़े रहते हैं किन्तु समास मे इनका लोप हो जाता है –

पाप अथवा पुण्य - पाप-पुण्य,   सुख या दुःख - सुख-दुःख

थोडा या बहुत - थोडा-बहुत,   दो या चार- दो-चार

जात अथवा कुजात - जात-कुजात   राग या द्वैष - राग-द्वेष

(4) बहुव्रीहि समास :- जिस समास मे कोई भी पद प्रधान नही होता और जिसका पदगत अर्थ न होकर कोई अन्य अर्थ ही विवक्षित होता है वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। यहाँ पर यह ध्यातव्य है कि अन्य अर्थ का पदगत अर्थ के साथ कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य रहता है जैसे : – पीताम्बर-पीला है अम्बर जिसका ऐसा व्यक्ति, अर्थात् श्रीकृष्ण। यदि उक्त शब्द का विग्रह है 'पीला है जो अम्बर वह, किया जाएगा तो यह कर्मधारय समास होगा। अत· कहा जा सकता है कि पूर्ववर्ती सभी सामामिक शब्द विग्रह के आधार पर बहुव्रीहि हो सकते है; यथा. – दशमुखो का समाहार=द्विगु, दस है मुख जिसके ऐसा जो व्यक्ति अर्थात् 'रावण' बहुव्रीहि। इसी प्रकार अद्वितीय= द्वितीय नही नञ तत्पुरुष और द्वितीय नहीं है कोई जिसका वह व्यक्ति= बहुव्रीहि। सत्यव्रत= सत्य का व्रत- तत्पुरुष, सत्य का ले लिया है व्रत जिसने वह = बहुव्रीहि।

विग्रह मे उत्तर पद की विभक्ति के अनुसार इसके भी तत्पुरुष की तरह कारकानुसार भेद हो सकते हैं –

(i) दे दिया है चित्त जिसने= दत्तचित= करण बहुव्रीहि।

(ii) दिया गया है धन जिसको=दत्तधन = सम्प्रदान बहुव्रीहि।

(iii) निकल गया है जन समूह जिससे = निर्जन = अपादान बहुव्रीहि।

(iv) पीत है अम्बर जिसका = पीताम्बर = सम्वन्ध बहुव्रीहि

(v) फूले हैं कमल जिसमें = प्रफुल्ल कमल, अधिकरण बहुव्रीहि।

टिप्पणी :- हिन्दी में कर्मकारक के प्रयोग नगण्य है।

'समास' के सम्बन्ध मे यह ध्यान रखने की बात है कि एक ही सामासिक शब्द किसी भी समास का उदाहरण हो सकता है। यह इस पर निर्भर है कि कोई व्यक्ति किसी सामासिक शब्द का विग्रह कैसे करता है और वाक्य मे वह किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

समास सम्बन्धी भूलें

सामासिक शब्दो के लेखन मे भी हम भारी भूले कर जाते है क्योकि शब्द जब समस्त होने लगते है तब अनेक शब्द ऐसे होते हैं जिनमे ध्वन्यात्मक विकार उत्पन्न हो जाता है। हम उस विकार के प्रति सावधान नही रहते और अशुद्धि कर जाते है, यथा . - 'लज्जा' शब्द नञ् तत्पुरुष मे सामासिक होता है तब 'लज्ज' हो जाता है, 'अपराधी' शब्द जब नञ् तत्पुरुष मे प्रयुक्त होता है तब 'अपराध' बन जाता है। इसी प्रकार 'आम' जब समस्त होता है तब 'अम' तीन, चार आदि जब समस्त होते है तब 'ति चौ' आदि रूप ग्रहण करते है। अत हमे सतर्क रहना चाहिए।

कुछ उदाहरण:-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उन्नतशील	उन्नतिशील	कृतघ्नी	कृतघ्न
दृढव्रती	दृढ़व्रत	निरपराधी	निरपराध
निर्दोषी	निर्दोष		
तीनराहा	तिराहा	चारमुखी	चौमुखी
मद्यपानी	मद्यपायी	आमचूर	अमचूर
दोगुना	दुगुना	दोपहर	दुपहर
राज्यनैतिक	राजनीतिक	राज्यकीय	राजकीय
सत्यव्रर्ती	सत्यव्रत	निस्स्वार्थी	नि· स्वार्थ
शान्तमय	शान्तिमय	सतोगुण	सत्वगुण
मुँहफटा	मुहफट	नाककट	नकटा
सौभाग्यशील	सौभाग्यशाली	स्वतन्त्रप्रिय	स्वतन्त्रताप्रिय
प्राणीशास्त्र	प्राणिशास्त्र	विद्यार्थीवर्ग	विद्यार्थिवर्ग
मन्त्रीमण्डल	मन्त्रिमण्डल	योगीराज	योगिराज
स्थायीत्व	स्थायित्व	मन्त्रीत्व	मन्त्रित्व
विद्वानता	विद्वता	महानता	महत्ता
चक्रपाणी	चक्रपाणि	चतुर्भुजा	चतुर्भुज
हरिचन्द्र	हरिश्चन्द	चन्द्रमौली	चन्द्रमौलि
माताभक्त	मातृभक्त	पिताभक्त	पितृभक्त
स्वामीत्व	स्वामित्व	मूसलधार	मूसलाधार

■■■

8

सन्धियां

हिन्दी भाषा प्राय वियोगात्मक है। फलत. इसमें सन्धियो का विशेष विधान नही है। हिन्दी के व्याकरण ग्रन्थो में उपलब्ध सन्धियो का विवरण प्राय तत्सम शब्दो तक ही सीमित है। आचार्य वाजपेयी ने हिन्दी की सन्धियो पर प्रकाश डालने का किचित् प्रयास किया है, वह स्तुत्य है। इसे आधार बना कर कुछ आगे बढा जा सकता है। सस्कृत भाषा की तरह हिन्दी मे सन्धियो को चार वर्गो मे तो नही, परन्तु तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है --

1 स्वर सन्धि

2 व्यंजन सन्धि और

3 प्रकृति भाव।

सन्धि- जब किसी एक पद या अधिक पदो मे दो वर्ण एक दूसरे के समीप आते हैं, तो उनमें रूपान्तर हो जाता है, उसी रूपान्तर को सन्धि कहते हैं। यह रूपान्तर मुख्यत तीन प्रकार का होता है –

1 दो वर्ण मिलकर एक वर्ण हो जाते हैं;

2 दो वर्ण मिलकर किसी तीसरे वर्ण का रूप धारण कर लेते है, और

3 दो वर्णों में से एक वर्ण रूपान्तरित हो जाता है और एक वर्ण अपने मूल रूप में रहता है।

हिन्दी की सन्धियॉ

हिन्दी की मन्धियों से तात्पर्य हिन्दी-तद्भव शब्दो मे उपलब्ध सन्धिगत रूपान्तरो से है। अत. इस शीर्षक के अन्तर्गत केवल तद्भव शब्दो के प्रसग मे ही विचार किया जाएगा –

1. स्वर सन्धि- जब दो स्वर एक दूसरे के समीप आने पर रूपान्तरित होते है, तब स्वर सन्धि होती है। इसके निम्न भेद है –

(i) पररूप सन्धि – 'अ' के पश्चात 'ऊं', 'ए' और 'ओ' आने पर 'अ' को पररूप आदेश होता है अर्थात् 'अ' और 'ऊँ' मिलकर 'ऊं', 'अ' और 'ए' मिलकर 'ए' और 'अ' और 'ओ' मिलकर 'ओ' हो जाता है। यथा-

पढ+ए=पढे　　　　चल+ए=चले　　बैठो ए = बैठे

पढ + ऊ =पढ़ूॅ　　　　चल + ऊ =चलूॅ　पढ + ओ =पढो

चल + ओ = चलो।

(ii) गुण सन्धि - 'अ' अथवा 'आ' के पश्चात् यदि एक वचनवाचक 'इ' प्रत्यय आता है तो दोनो को मिलाकर गुण हो जाता है अर्थात् 'अ' अथवा 'आ' जब एकवचनवाचक 'इ' के पास आते हैं तो दोनो का 'ए' हो जाता है। यथा-

जाता + इ = जाते लड़का + ई = लड़के घोडा + इ = घोड़े

चलना + इ = चलने।

(iii) अकारान्त सर्वनाम शब्दो और सार्वनामिक क्रिया विशेषण शब्दो के पश्चात् यदि 'ही' निपात आता है तो अन्त्य 'अ' का लोप हो जाता है और 'स' के योग मे 'ह' का भी लोप हो जाता है। अन्य वर्णो के योग मे अल्पप्राण ध्वनि 'ह' योग से महाप्राण हो जाती है। यथा

किस + ही = किसी　　जिस + ही = जिसी　अब + ही = अभी

कब + ही = कभी　　जब +ही = जभी　तब + ही = तभी

किन + ही = किन्ही　　उन + ही = उन्ही।

(iv) दो सवर्ण परस्पर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं यथा-

जिला + अधीश = जिलाधीश　　घोड़ + अ = घोड़ा

लड़क + अ = लडका।

(v) स्त्रीवाची 'ई' प्रत्यय के योग में प्रकृति के अन्त्य 'अ' या 'आ' का पररूप हो जाता है। यथा -

नद + ई = नदी　　लडका + ई = लडकी　घोडा + ई = घोडी

बैठ + ई = बैठी　　चल + ई = चली।

(vi) बहुवचन वाची 'ऑ' और 'ओ' प्रत्यय के योग मे 'इ', 'ई' कारान्त प्रातिपदिकों की 'इ', 'ई' को 'इय' आदेश होता है। यथा-

लड़की + ऑ = लडकियॉ　　　मुनि + ओ = मुनियो

गति + ऑ = गतियॉ　　　घोडी + ओ = घोडियो

हाथि + ओ = हाथियो।

(vii) अकारान्त स्त्रीलिग शब्दों के योग मे जब बहुवचन वाची 'ऍ' या 'ओ' प्रत्यय आते है तब अकार को पररूप आदेश होता है। यथा-

बात + एँ = बाते बहन+एँ = बहने बहन + ओं = बहनो।

अकारान्त पुल्लिग शब्दो मे भी 'ओ' का प्रयोग आता है, पररूप होता है। यथा-

नाक + ओ = नाकों बात + ओ = बातो कान + ओ = कानो

दान + ओ = दानों जन + ओ =जनो गण + ओ = गणो

(viii) किया, दिया, लिया, पिया आदि धातुओ के योग मे जब स्त्री वाची 'ई' प्रत्यय आता है तो 'इया' का लोप हो जाता है। यथा-

किया + ई = की दिया + ई = दी लिया + ई=ली

पिया + ई = पी।

2. व्यजन सन्धि – किसी स्वर या व्यंजन के योग से जब व्यंजन में विकार उत्पन्न होता है, तब वह व्यजन सन्धि होती है।

जब एक ही व्यजन दो बार पास-पास आता है तो पूर्ववर्ती व्यजन का लोप हो जाता है। यथा-

खरीद + दार = खरीददार वह + ही = वही यह + ही =यही

नाक + कटा = नकटा।

प्रकृति भाव-

(i) अकारान्त एवं आकारान्त शब्दों को छोडकर अन्य स्वरान्त पुल्लिग शब्दो तथा अकारान्त के अतिरिक्त अन्य स्त्रीलिग शब्दो के योग में 'एँ' और 'ओ' की प्रकृतिभाव सन्धि होती है अर्थात् उसमे कोई रूपान्तर नहीं होता-

लता + एँ = लताएँ बहु + ओं =बहुओं गौ + एँ = गौएँ

नौका + एँ = नौकाएँ बला + ए = बलाएँ।

(ii) अकारान्त धातुओ को छोडकर शेष स्वरान्त धातुओ के योग में 'ऊं', 'ए', 'एँ', 'ओ' प्रत्यय के योग मे प्रकृतिभाव सन्धि होती है। यथा-

पढा + ऊं = पढाऊ पढ़ा + ए = पढाए पढ़ा + एँ = पढ़ाएँ

जा + ओ = जाओ गा+ऊं=गाऊ ला + एँ = लाएँ

ला+ओ=लाओ।

संस्कृत संधियाँ

सस्कृत भाषा मे मुख्यत पॉच प्रकार की संधियॉं होती हैं, किंतु हिन्दी में आगत तत्सम शब्दो के आधार पर तीन प्रकार की सधियों को ही ग्रहण किया जाना चाहिए –

1 स्वर सन्धि

2 व्यंजन सन्धि और

3 विसर्ग सन्धि।

1. स्वर सन्धि –

स्वर सन्धि के पॉच उपभेद किये जा सकते हैं . -

(i) गुण सन्धि

(ii) वृद्धि सन्धि

(iii) अयादि सन्धि

(iv) दीर्घ सन्धि

(v) यण सन्धि।

(i) गुण सन्धि - संस्कृत भाषा में 'अ, 'ए' और 'ओ' स्वरों की गुण संज्ञा होती है।

(क) 'अ' या 'आ' के योग मे 'इ' या 'ई' हो तो दोनो को मिलाकर 'ए' होता है।

(ख) 'अ' या 'आ' के योग में 'उ' या 'ऊ' हो तो दोनों को मिलाकर 'ओ' होता है तो दोनो को मिलाकर 'ओ' होता है।

(ग) 'अ' या 'आ' के योग मे 'ऋ' हो तो दोनों को मिलाकर 'अर्' होता है।

उदाहरण -

गण + ईश = गणेश   महा + ईश = महेश

देव + इन्द्र = देवेन्द्र   महा + इन्द्र = महेन्द्र

चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय   महा + उत्सव = महोत्सव

जल + ऊर्मि = जलोर्मि

महा + ऋषि = महर्षि देव + ऋषि = दवर्षि।

(ii) वृद्धि सन्धि - सस्कृत भाषा में 'आ', 'ए' और 'ओ' स्वरों की वृद्धि सज्ञा होती है।

(क) 'अ' या 'आ' के योग में 'ए' या 'ऐ' हो तो दोनो को मिलाकर 'ऐ' होता है।

(ख) 'अ' या 'आ' के योग में 'ओ' या 'औ' हो तो दोनो को मिलाकर 'औ' होता है।

उदाहरण -

मत + ऐक्य = मतैक्य सदा + एव = सदैव

महा + ऐश्वर्य = महेश्वर्य एक + एक = एकैक

(iii) अयादि सन्धि - 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के पश्चात इन्हें छोड़कर कोई अन्य स्वर आता है तो इन्हें क्रमश· 'अय्', 'आय्' 'अव्' और 'आव्' होते है।

उदाहरण -

ने + अन = नयन | गै + अन = गायन

पो + अन = पवन | पौ + अक = पावक

(iv) दीर्घ सन्धि- जब दो सवर्णी स्वर पास-पास आते हैं तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

(क) अ + अ = आ, अ + आ = आ, आ + अ = आ और आ + आ + = आ।

(ख) इ + ई = ई, इ + ई = ई, ई + इ = ई और ई + ई = ई।

(ग) उ + उ = ऊ, उ + ऊ = ऊ, ऊ + उ = ऊ और ऊ + ऊ = ऊ।

उदाहरण-

परम + अर्थ = परमार्थ | हिम + आलय = हिमालय

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी | विद्या + आलय = विद्यालय

मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र | महि + ईश = महीश

सुधी + इन्द्र = सुधीन्द्र | मती + ईश = सतीश

अनु + उदित = अनूदित | लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

वधू + उत्सव = वधूत्सव | भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व।

(v) यण सन्धि - सस्कृत में 'य', 'व', 'र' और 'ल' को 'यण' कहते हैं। हिन्दी तत्सम शब्दो में लृकारान्त शब्दों का अभाव है। अतः 'य', 'व', 'र', पर ही विचार किया जायेगा।

(क) 'इ' या 'ई' के परे 'इ', 'ई' को छोड़कर जब कोई अन्य स्वर आता है तो इन्हें 'य्' आदेश होता है।

(ख) 'उ' या 'ऊ', के परे 'उ', 'ऊ' को छोडकर जब कोई अन्य स्वर आता है तो इन्हें 'व्' आदेश होता है।

(ग) 'ऋ' के परे 'ऋ' को छोडकर कोई अन्य स्वर आता है तो 'ऋ' को 'र्' आदेश होता है।

उदाहरण –

अति + अधिक = अत्याधिक | प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

अभि + उदय = अभ्युदय | सप्तमी + अन्त = सप्तम्यन्त

अति + आचार = अत्याचार　　　　　नि + ऊन = न्यून

देवी + आवाहन = देव्यावाहन　　　　　नदी + ऊर्मि = नद्यूर्मि

प्रति + एक = प्रत्येक

सु + अल्प = स्वल्प　　　　　सु + आगत = स्वागत

अनु + इति = अन्वति अनु + एषण = अन्वेषण

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा　　　　　व्याख्यातृ + ई = व्याख्यात्री

धातृ + ई = धात्री ।

2. व्यजन सन्धि -

जब किसी व्यंजन से परे कोई स्वर या व्यजन आ जाने से व्यंजन में होने वाले रूपातर को व्यजन सन्धि कहते है।

हिन्दी तत्सम शब्दो के लिए व्यजन सन्धि के नियम -

(i) जब किसी अल्पप्राण अघोष व्यंजन के आगे कोई स्वर या अल्पप्राण या महाप्राण सघोष व्यजन आ जाता है, तो उसे अल्पप्राण सघोष हो जाता है अर्थात् 'क्''च्', 'ट्', 'त्', 'प्', के परे कोई स्वर वर्ग तीसरा और चौथा वर्ण तथा 'य', 'र', 'व' आ जाते हैं, तो वे क्रमश· 'ग्''ज्', 'ड्''ब्', हो जाते है।

उदाहरण -

वाक् + ईश = वागीश　　　　　दिक् + गज = दिग्गज

वाक + दान = वाग्दान　　　　　वाक् + जाल = वाग्जाल

दिक् + बल = दिग्बल　　　　　अच् + अत = अजन्त

अच् + आदि = अजादि　　　　　षट् + ३ ानन = षडानन

षट् + यत्र = षडयत्र　　　　　षट् + तु = षड्ऋतु

विद्वत् + वृंद = विद्वद्वृन्द　　　　　विद्वत् + आगम = विद्वदागम

तत् + उपरांत = तदुपरांत　　　　　भवत + ईय = भवदीय

सत् + आनंद = सदानद　　　　　जगत् + ईश = जगदीश

सुप् + अत = सुबंत　　　　　अप् + ज = अब्ज

अप् + द = अब्द　　　　　शप् + द = शब्द ।

(ii) जब किसी अल्पप्राण अघोष व्यजंन के आगे कोई अनुनासिक व्यंजन आ जाता है तो उस अल्पप्राण अघोष ध्वनि को उसी वर्ग के अनुनासिक व्यंजन का आदेश होता है अर्थात् 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्' और 'प्' के परे यदि 'ङ्', 'ञ्', 'ण्', 'न्' और 'म्'

में मे कोई व्यंजन आता है तो इन्हे क्रमशः 'ङ्', 'ञ्', 'ण्', 'न्' और 'म्' आदेश होता है।

उदाहरण-

वाक्+मय=वाङ्मय	जगत्+नाथ=जगन्नाथ
षट्+मास=षण्मास	षट्+मुख्=षण्मुख
दिक्+मय=दिङ्मय।	

टिप्पणी · – हिन्दी मे चकारान्त शब्दों का अभाव है।

(iii) 'त्', या 'द्' के परे यदि च वर्ग और 'ल' हो तो 'त' को 'च' और 'ल' तथा 'द' को 'ज' और 'ल' होते हैं।

उदाहरण -

मत्+चरित्र=सच्चरित्र	उद्+ज्वल=उज्ज्वल
महत्+छाया=महच्छाया	उत्+लास=उल्लास

(iv) 'त्' से परे यदि 'श्' हो तो 'त्' को 'च्' और श्', 'छ' और यदि 'ह्' हो तो 'त्' को 'द्' और 'ह्' को 'ध्' का आदेश होता है।

उदाहरण -

उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट	उत्+श्वास=उच्छवास
उत्+हार=उद्धार	तत्+हित=तद्धित।

(v) हिन्दी मे वर्ग वर्णो के योग मे अनुस्वार का उच्चारण परिवर्तित हो चुका है, अत तत्सम शब्दो मे वर्ग का पॉचवॉ अक्षर लिखने की जो पद्धति है उसे काम में नही लाना चाहिए और लेखन मे सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। अत अनुस्वार से सम्बद्ध सन्धि नियम देने की कोई आवश्यकता नही है।

(3) विसर्ग सन्धि

हिन्दी ने विसर्गो का परित्याग कर दिया है, कितु कुछ तत्सम शब्द ऐसे है जिनमें विसर्ग या उसका रूपातर विद्यमान है, अत इस पर भी विचार कर लेना आवश्यक है।

कोई स्वर या व्यंजन के सामने आ जाने पर विसर्ग मे जो रूपातर होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते है। छात्रो को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विसर्ग से पूर्व में कोई न कोई स्वर अवश्य आता है। इस दृष्टि से विसर्ग के तीन वर्ग किए जा सकते है –

(i) 'अ' के पश्चात आने वाले विसर्ग

(ii) 'आ' के पश्चात आने वाले विसर्ग और

(iii) शेष स्वरो के पश्चात आने वाले विसर्ग।

(i) 'अ' के पश्चात आने वाले विसर्गो के परे यदि वर्ग का तीसरा, चौथा पॉचवॉ वर्ण, 'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', 'ह्' और 'अ' मे से कोई वर्ण आता है तो विसर्गों का 'ऊ' हो जाता है। यथा -

मन + योग = मनोयोग	मन रथ = मनोरथ
मन + नयन = मनोनयन।	

(ii) 'अ' के विसर्गो का स्वर ('अ' को छोडकर) परे रहते लोप हो जाता है। यथा-

अत + एव = अतएव।

(iii) 'आ' के विसर्गो का स्वर, वर्ग का तीसरा, चौथा, पॉचवॉ वर्ण, 'य', 'र', 'ल' 'व' और 'ह' पर रहते लोप हो जाता है।

(iv) शेष स्वरों के विसर्गों को स्वर, वर्ग का तीसरा, चौथा, पॉचवॉ वर्ण 'य', 'र', 'ल', 'व' और 'ह' वर्णो मे से किसी वर्ण के परे रहते 'र' आदेश होता है। यथा -

नि + ईश्वर = निरीश्वर	नि + गमित = निर्गमित
नि + विरोध = निर्विरोध	दु· + गम = दुर्गम
नि जन = निर्जन	दु + बल = दुर्बल
नि बल = निर्बल।	

(v) किन्ही भी विसर्गों से परे यदि 'त', 'थ' और 'स' मे से कोई वर्ण आता है तो विसर्गो को 'स'; 'च', 'छ', और 'श' में से कोई वर्ण आता है तो विसर्गों को 'श्', और 'ह', 'ठ', तथा 'ष' मे से कोई वर्ण आता है तो विसर्गों को 'ष्' आदेश होता है। यथा-

नि + चेतन = निश्चेतन	नि· + श्वास = निश्श्वास
नि + संदेह = निस्संदेह	नि + तार = निस्तार
दु + साहस = दुस्साहस	दु + ट = दुष्ट
क + ट = कष्ट।	

(vi) किन्ही भी विसर्गो के परे यदि 'क', 'ख', 'प', और 'फ' मे से कोई वर्ण आता है तो विसर्गो मे विकास उत्पन्न नहीं होता है। यथा-

प्रातः + काल = प्रातःकाल	दु. + ख = दुःख
अध. + पतन = अधःपतन	पुनः + फलित = पुनःफलित
मन + कामना = मनःकामना।	

टिप्पणी - नियमानुसार 'अधोपतन' और 'मनोकामना' रूप अशुद्ध है, किंतु ये रूप हिन्दी में चल पडे है।

सन्धि सम्बन्धी भूलें

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अभ्यार्थी	अभ्यर्थी	अत्याधिक	अत्यधिक
अधोपतन	अधःपतन	अध्यावसाय	अध्यवसाय
महत्व	महत्त्व	महता	महत्ता
उज्वल	उज्ज्वल	प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित
तत्व	तत्त्व	उछिष्ट	उच्छिष्ट
इछा	इच्छा	मनोकामना	मनःकामना
प्रातकाल	प्रातःकाल	निर्रोग	नीरोग
अंतःराष्ट्रीय	अतर्राष्ट्रीय	भिज्ञ	अभिज्ञ
अंतपुर	अतःपुर	अतकरण	अंतःकरण
अत्योक्ति	अत्युक्ति	अनाधिकार	अनधिकार
प्रोढ़	प्रौढ	जात्याभिमान	जात्यभिमान
तदोपरांत	तदुपरात	हरीचद	हरिश्चद्र
आछादन	आच्छादन	उछवास	उच्छ्वास
जगतबंधु	जगद्बधु	भगवत्गीता	भगवद्गीता
सतगुरु	सद्गुरु	सन्मान	सम्मान
शरत्चंद्र	शरच्चन्द्र	अंतर्कथा	अंतःकथा
दुरावस्था	दुरवस्था	दुस्कर	दुष्कर
पुरष्कार	पुरस्कार	पुनरोत्थान	पुनरुत्थान
परयंत	पर्यत	सतुपदेश	सदुपदेश
तेजमय	तेजोमय	दुशासन	दुश्शासन
दुसाध्य	दुस्साध्य	अधःगति	अधोगति
		रविन्द्र	रवीन्द्र
यतिन्द्र	यतीन्द्र	रजकण	रजःकण
जगतगुरु	जगद्गुरु	जगतनाथ	जगन्नाथ
यावतजीवन	यावज्जीवन	उधार	उद्धार

■■■

9

वाक्य संबंधी भूलें

वर्तनी की शुद्धता का ज्ञान और समृद्ध शब्द–भण्डार होने पर भी यदि वाक्य-विन्यास उपयुक्त नही है तो सारा गुड-गोबर हो जाता है। अत विद्यार्थियो को वाक्य-रचना के प्रति भी मनर्क रहना चाहिए। वाक्य रचना के समय हमे निम्नलिखित तथ्यो को ध्यान मे रखना चाहिए -

(1) अस्पष्टता एव भ्रामकता . - वाक्य रचना के समय हमे ध्यान रखना चाहिए कि हम जो कुछ भी कहना चाहते है वह सरलता से श्रोता या पाठक की समझ मे आ जाए। यदि आपकी बात को श्रोता या पाठक भली प्रकार से नही समझ पाया या ममझने के लिए उसे काफी प्रयास करना पडा तो आपका कथन व्यर्थ हो जाता है। प्रयास करने पर यदि आपकी बात श्रोता या पाठक की समझ मे आ जाती है वहॉ तक तो ठीक है, कितु यदि उन्होंने आपके वाक्य से कुछ और ही समझ लिया तो अनर्थ हो जाएगा। अत ऐसी वाक्य-रचना नही होनी चाहिए जो भ्रामक हो। अस्पष्ट वाक्य-रचना सदोष और भ्रामक वाक्य-रचना व्यर्थ होती है। अस्पष्टता और भ्रामकता जैसे दोष अनियमित वाक्य-विन्यास के कारण आते हैं। अत अनियमित वाक्य-विन्यास से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। उक्त दोष शब्द के यथा स्थान प्रयोग न करने या उनका भावानुरूप प्रयोग न होने के कारण आते है।

(2) निरर्थकता - अस्पष्ट एव भ्रामक वाक्यो का कोई न कोई अर्थ तो निकलता हैं किन्तु कुछ लोग ऐसी वाक्य-रचना करते हैं कि उन वाक्यो का कोई अर्थ ही नही होता। अत ऐसे वाक्यो से बचना चाहिए।

(3) शिथिलता - वाक्य-रचना मे शिथिलता भी एक दोष होता है। शिथिल वाक्य-रचना वह रचना होती है जिसमे शब्दो का अनावश्यक प्रयोग कर दिया जाता है। कभी-कभी लम्बे वाक्यों की रचना मे हम पूर्व वाक्य की रचना को भूलकर नये प्रकार की रचना कर बैठते है और एक मिश्रवाक्य बिखरा-सा प्रतीत होने लगता है। यद्यपि शिथिल वाक्यों का अर्थ तो समझ मे आ जाता है कितु रचना मे भद्दापन आ जाता है और लेखक की असावधानी स्पष्ट हो जाती है। साथ ही अर्थ का जो प्रभाव श्रोता या पाठक पर पड़ना चाहिए वह नही पड पाता।

(4) जटिलता -- जटिलता भी वाक्य का एक दोष होता है। कुछ लोग अपना पाण्डित्य प्रदर्शित करने के लिए लम्बे-लम्बे जटिल वाक्यो की रचना कर बैठते है और उनके सीग पूँछ का कही पता ही नही लगता। ऐसे वाक्यो को समझने के लिए बडा श्रम करना पडता है। यद्यपि गम्भीर विषय-विवेचन मे वाक्य का जटिल होना कुछ सीमा तक स्वाभाविक है, तो भी जहा तक सम्भव हो जटिल वाक्य-रचना नही करनी चाहिए।

उपर्युक्त तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए कुछ ऐसे वाक्य यहाँ पर प्रस्तुत किए जा रहे है –

अस्पष्ट एव भ्रामक वाक्य-

1 श्री हितहरिवशजु के प्रशंसात्मक छप्पय की टीका। (भ्रामक वाक्य)

श्री हितहरिवशजु की प्रशंसा मे लिखे गए छप्पय की टीका। (शुद्ध वाक्य)

2 प्राचार्य ने बताया कि वाइस प्रेसिडेण्ट कार्य मेम्बर चुनेगे। (भ्रामक वाक्य)

प्राचार्य ने बताया था कि कार्यसमिति के मेम्बर ही वाइस प्रेसिडेण्ट का चुनाव करेंगे। (स्पष्ट वाक्य)

3 नियमानुसार जो अनुशासनहीनता करता है वह भी दण्ड का भागी होता है। (भ्रामक वाक्य)

जो अनुशासनहीनता करता है वह भी नियमानुसार दण्ड का भागी होता है। (शुद्ध वाक्य)

4 सितोपलादि चूर्ण से क्षय के प्रारम्भ मे सहायता मिलती है। (भ्रामक वाक्य)

क्षय की आरम्भिक स्थिति में सितोपलादि चूर्ण लाभकर होता है। (शुद्ध वाक्य)

5 दुर्भाग्यवश छात्र सघ चुनाव होने के कारण से पुरस्कार वितरण समारोह टल गया। (भ्रामक वाक्य)

छात्र संघ के चुनाव होने के कारण पुरस्कार–वितरण समारोह टल गया। (शुद्ध वाक्य)

6 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने प्रकृति चित्रण षड्ऋतु मे किया था। (भ्रामक वाक्य)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने षड्ऋतु वर्णन में

(शुद्ध वाक्य)

प्रकृति-चित्रण किया था।

7	एक चाय का कप लाओ।	(भ्रामक वाक्य)
	चाय का एक कप लाओ।	(शुद्ध वाक्य)
8	हम निम्नलिखित इस गॉव के वासी–	(भ्रामक वाक्य)
	इस गॉव के हम निम्नलिखित वासी –	(शुद्ध वाक्य)
9	मुख्यमत्री ने किसी कर्मचारियो की सभा मे कहा था	(भ्रामक वाक्य)
	मुख्यमत्री ने कर्मचारियों की किसी सभा में कहा था	(शुद्ध वाक्य)
10	चॉदी-सोने का भाव बढता ही जा रहा है।	(भ्रामक वाक्य)
	सोने-चॉदी का भाव बढता ही जा रहा है।	(शुद्ध वाक्य)

शिथिल वाक्य-

1 राम ने श्याम को पीटा और मार डालने की धमकी दी।

शुद्ध- राम ने श्याम को पीटा और उसे मार डालने की धमकी दी।

2 उसके पास हो सकने की आशा बहुत साहस करके की जा रही है।

शुद्ध-उसके पास होने की बहुत ही कम आशा रह गई है।

3 उसने उसके किए हुए कार्यो की उसकी आलोचना की झड़ी लगा दी।

शुद्ध-उसने उसके कार्यो की खूब आलोचना की।

4 देश की प्रगति होती दिखाई मानी जाती है।

शुद्ध-इसे ही देश की प्रगति होना माना जाता है।

5 आज के समारोह की अध्यक्षता उनके कर-कमलो द्वारा सम्पन्न हुई।

शुद्ध- उन्होंने आज के समारोह की अध्यक्षता की।

6 ग्वालियर अनेक विद्वानो को अपने में रखने का गौरव पाले है।

शुद्ध-ग्वालियर को अनेक विद्वानो की आवास-स्थली होने का गौरव प्राप्त है।

7 खाद्य समस्या के बारे में हमे अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

शुद्ध- खाद्य समस्या का निराकरण अधिक उत्पादन से सम्भव है।

8 पोप गम्भीर पर नियन्त्रण में।

शुद्ध- पोप की हालत गम्भीर, पर नियन्त्रण मे।

9 नरगिस दत्त की क्रिया सम्पन्न।

शुद्ध- नरगिस दत्त की अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न।

10 भाजपा आन्दोलन साजिश -चौधरी।

शुद्ध- भाजपा आन्दोलन एक साजिश-चौधरी।

11. कांग्रेस के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

शुद्ध- कांग्रेस के अलावा कोई दूसरा विकल्प नही है।

12 राम ने मोहन को पीटा और मकान छोड़ देने की धमकी दी।

शुद्ध- राम ने मोहन को पीटा और उसे मकान छोड़ देने की धमकी दी।

13 मोहन ने श्याम से तस्करी के हथियार लेने का प्रबन्ध किया था, परन्तु वे बीच में ही पकड़े गए।

शुद्ध- मोहन ने श्याम से तस्करी के हथियार लेने का प्रबन्ध किया था, परन्तु हथियार बीच मे ही पकडे गए।

14 कालिदास ने अशोक पुष्प का वर्णन शरत्काल में किया है।

शुद्ध- कालिदास ने अशोक का उल्लेख शरत्काल के वर्णन मे किया है।

15 जहॉं तक हमारा विचार तो यही है।

शुद्ध- हमारा विचार तो यही है।

16. उसने बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की।

शुद्ध- वह बी.ए. की परीक्षा मे उत्तीर्ण हो गया।

17 इस बात की गहराई में जाना होगा कि जो प्रवृत्तियॉं हानिकारक हैं, उनको इन दिनो बढ़ावा क्यों मिल रहा है?

शुद्ध- इन बढ़ती हुई हानिकारक प्रवृत्तियों के कारणों की गहराई से छानबीन करनी होगी।

18 देश की स्वाधीनता ने जो स्थितियॉं उत्पन्न की हैं, उनके कारण...

शुद्ध- देश की स्वाधीनता के पश्चात् उत्पन्न स्थितियों के कारण...

19 नई जनगणना के आधार पर जयपुर शहर को बी-1 की श्रेणी का दर्जा प्राप्त हो गया है।

शुद्ध- नयी जनगणना के आधार पर जयपुर को बी-1 की श्रेणी का शहर मान लिया गया है।

अनिर्वहित वाक्य –

1 केवल ऐसा करने से ही भावुकता को स्थान नही हो जाता है।

शुद्ध- केवल ऐसा करने से ही भावुकता को स्थान नही मिल जाता।

2 भारत चाहता है कि वह भी माल तैयार करने की दशा मे हो।

शुद्ध- भारत चाहता है कि वह भी माल तैयार करने की स्थिति मे आ जाए।

3 ऐसा दारुण अन्न सकट कभी नही देखा गया, जैसी भयकर दशा आज उत्पन्न है।

शुद्ध- ऐसा दारुण अन्न सकट कभी नही देखा गया, जैसा सकट आज दिखाई देता है।

4 जब वे दिल्ली गए, तब अपने साथ परिवार को ले गए,

शुद्ध- जब वे दिल्ली गये, तब अपने साथ परिवार को भी ले गये।

5 वहॉ एक ऐसे पडयन्त्र का पता लगा है, जो रजाकारो की भर्ती का प्रयत्न कर रहे है।

शुद्ध- वहॉ एक ऐसे षडयन्त्र का पता लगा है, जहॉ रजाकारो की भर्ती के प्रयत्न किए जा रहे थे।

6 वह सुदूर की सस्थाओ और व्यक्तियो के कार्यो के अनुवाद करके अपने पत्र मे देता है।

शुद्ध- वह सुदूर की सस्थाओ और व्यक्तियो के कार्यो का सग्रह करके अपने पत्र मे देता है।

7 आज दस लाख हिन्दू सिन्ध से भागने की दशा मे पडे है।

शुद्ध- आज दस लाख हिन्दू सिन्ध से भागने की तैयारी में है।

8 कभी बम्बई जाओ तो इधर से होकर आना।

शुद्ध- कभी बम्बई जाओ तो इधर से होकर जाना।

असगत वाक्य-

1 मेरा यह पत्र न मिले तो सूचित कीजियेगा। (सूचित कैसे करेगा ?)

2 इसी से वह अपना दिल सहलाने लगा। (बहलाने)

3 पिछले शुक्रवार को क्या दिन था ? (तिथि)

4 उनकी एक आख कानी थी। (वह काना था)

5 वह एक टॉग से लॅगड़ा था। (वह लॅगडा था)

6 मैं लात मार-मार कर उसकी चमडी खीच लूॅगा।

(लात से चमड़ी कैसे खीची जाएगी ?)

7 मै मरने के बाद भी आपको याद रखूँगा।

(मरने के बाद कैसे याद रखेगा ?)

8 विद्युत मडल के अधिकारियो के साथ मारपीट की घटना आए दिन घटना यहाँ आम बात हो गई है।

(घटना-घटना ?)

9 सरकार व उच्च अधिकारी कुम्भकरणी निद्रा में सोए मालूम पडते है तथा उनकी आवाज नक्कारखाने मे तूती की आवाज साबित हो रही है। (जब सोये मालूम पडते हैं तो नक्कारखाना कैसे हुआ ?)

10 तब शायद आप अवश्य जाएगे।

('शायद' के साथ 'अवश्य' असगत है)

11 प्राय ऐसे अवसर आते है, जिनमे हमें कभी-कभी जाना पड़ता है।

('प्राय' के साथ 'कभी-कभी' असगत है)

12 आपकी याद बडी दुःखदायी है।

('याद' के साथ 'दु खदायी' असगत है ।)

13 उसने प्रेमपूर्वक उसकी पिटाई की।

(पिटाई भी प्रेमपूर्वक होनी है ?)

14 उसने घृणा से उसका मुख चूम लिया।

('चुम्बन' प्रेम से होता है, घृणा से नहीं)

15 नायिका ने कहा कि सखी! धीरे बोल अन्यथा हृदयस्थ पति तुम्हारी बात सुन लेगा।

(नायिका की बात नहीं सुनी ?)

16 वह चुपचाप कहने लगी। (चुपचाप और कहने लगी ?)

17. वह धीरे से एकदम घुस गया। (धीरे से और एकदम ?)

18 जब तक आकाश मे सूर्य, चन्द्रमा और तारे रहेगे, तब तक मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।

(अनन्त काल तक तुम कैसे जीते रहोगे ?)

19 बैल शेर की तरह सींग मारता हुआ गरजने लगा।

(बैल सीग मारता हुआ शेर की तरह ?)

20 मन मयूर चाहता है मर्कट की तरह उछलते रहना।

(मन मयूर भी है, मर्कट भी ?)

21 साहित्य समाज का दर्पण है, जिससे उसे प्रेरणा मिलती है।

(दर्पण से प्रेरणा ?)

22 अन्न सकट के बारे मे हमे अपने पैरो पर खड़ा होना चाहिए।

(उपज के बारे में)

23 वे इस बात में बहुत स्वार्थ लेते है।

शुद्ध- इस बात में उनका बहुत स्वार्थ है।

24 आज हिन्दी के प्रश्न पर देश के सभी साहित्यकारो का उत्तरदायित्व है। (हिन्दी के विकास का या प्रचार का उत्तरदायित्व है ?)

25 यह देखते ही कृष्ण की मुद्रा उदास हो गयी।

शुद्ध- यह देखते ही कृष्ण उदास हो गया।

सामान्य अशुद्धियो के अन्य उदाहरण

	अशुद्ध	शुद्ध
1	उसने दौडते हुए मोहन को देखा।	जब वह दौड़ रहा था, तो उसने मोहन को देखा।
2	दो छात्र एक-दूसरे का अनुसरण कर रहे थे।	एक छात्र दूसरे का अनुसरण कर रहा था।
3	अन्तिम निष्कर्ष क्या है ?	निष्कर्ष क्या है ?
4	वह सायकाल के समय आया।	वह सायकाल आया।
5	वह उन दिनो मे गरीब था।	वह उन दिनो गरीब था।
6	उनका सन्तान बेकार है।	उनकी सन्तान बेकार है।
7	डाक्टरनी ने अच्छी चिकित्सा की।	डाक्टर ने अच्छी चिकित्सा की।
8	मत्राणी समारोह मे आई है।	मत्री समारोह मे आई है।
9.	उसने नई चप्पले खरीदी हैं।	उसने नई चप्पल खरीदी है।
10	उसके मौजे सुन्दर हैं।	उसका मौजा सुन्दर है।
11	विद्यार्थियों का दल आ रहे हैं।	विद्यार्थियों का दल आ रहा है।

12	लुटेरो का जत्था छिप गया ।	लुटेरों का गिरोह छिप गया।
13	पॉच किलो गेहूॅ खरीदे।	पॉच किलो गेहूॅ खरीदा।
14	दो पूडी दो।	दो पूडियॉ दो।
15	एक किलो पूडियॉ खरीदो।	एक किलो पूडी खरीदो।
16	वह शत्रु की भी भलाइयॉ करता है।	वह शत्रु की भी भलाई करता है।
17	आपका दर्शन दुर्लभ है।	आपके दर्शन ही दुर्लभ हैं।
18	मेरा तो होश उड गया।	मेरे तो होश उड गए।
19	मामे को सब जानते है।	मामा को सब जानते हैं।
20	वह आगरे से लौटा है।	वह आगरा से लौटा है।
21	यह आगरा की मिठाई है।	यह आगरे की मिठाई है।
22	कलकत्ता से कौन आने वाला है ?	कलकत्ते से कौन आने वाला है ?
23	उसने गाने की कसरत की।	उसने गाने का अभ्यास किया।
24	गीत की दो-चार लड़ियॉ गाइए।	गीत की दो-चार कडियॉ गाइए।
25	उसकी कन्या के लिए विवाह तय हो गया	उसकी कन्या का विवाह तय हो गया।
26	शोक है कि मैं पत्रों का उत्तर न दे सका।	खेद है कि मै पत्रों का उत्तर न दे सका।
27	दादा की मृत्यु से बडा दुःख हुआ।	दादा की मृत्यु से बडा शोक हुआ।
28	मेरी आयु बीस की है।	मेरी अवस्था बीस वर्ष की है।
29	हम दोनो के बीच शत्रुता हो गई।	हम दोनो मे शत्रुता हो गई।
30	गले मे पराधीनता की बेडियॉ	पैरो मे पराधीनता की बेडियॉ-
31	तलवार की नोक पर-	तलवार की धार पर-
32	पॉच हजार का टिकट बिक गया-	पॉच हजार के टिकिट बिक गए।
33	वह अनेक भावो को प्रकट करता है।	वह अनेक भाव प्रकट करता है।
34	तुम्हारे ऊपर अभियोग है।	तुम पर यह अभियोग है।
35	गुरुजनो के ऊपर श्रद्धा रखो।	गुरुजनो पर श्रद्धा रखो।

36	इस समस्या की आपके पास कोई दवा है ?	इस समस्या का आपके पास कोई समाधान है ?
37	कृपया बैठने का अनुग्रह करे।	कृपया बैठ जाएं।
38	प्रेमचन्द ने अपने जीवन मे ग्रन्थों का निर्माण किया।	प्रेमचन्द ने अपने जीवन में ग्रन्थो की रचना की।
39	उसने चित्रो की रचना की।	उसने चित्रो का चित्रण किया।
40	वह अपनी त्रुटि को समाप्त करेगा।	वह अपनी त्रुटि का सुधार करेगा।
41	तुमसे मिलने की इतनी बेचैनी नही है।	तुमसे मिलने की इतनी उत्सुकता नही है।
42	तुम्हारा अन्तःकरण ठिकाने नही है।	तुम्हारा चित्त ठिकाने नही है।
43	वह अपने चित की आज्ञा पर चलता है।	वह अपने अन्तःकरण की आज्ञा पर चलता है।
44	मैंने वहॉ जाकर बडी अशुद्धि की।	मैंने वहॉ जाकर बडी भूल की।
45	अकाल मे भूख की घटनाये होती है।	अकाल मे भुखमरी की घटनाए होती है।
46	मकान के गिर जाने का सन्देह है।	मकान के गिर जाने की आशका है।
47	मुझे ईश्वर पर आत्म विश्वास है।	मुझे ईश्वर पर विश्वास है।
48.	मुझे लज्जा का अनुभव करना पडा।	मुझे लज्जा का बोध हुआ।
49	उसके रहन-सहन का दर्जा ऊंचा है।	उसके रहन-सहन का स्तर ऊचा है।
50.	इस समस्या की औषधि मेरे पास है।	इस समस्या का समाधान मेरे पास है।
51	बंदूक एक बहुत ही उपयोगी शस्त्र है।	बन्दूक एक बहुत ही उपयोगी अस्त्र है।
52	श्रीकृष्ण के अनेको नाम हैं।	श्रीकृष्ण के अनेक नाम है।
53.	एक गाय, दो घोड़े और एक बकरी मैदान में चर रहे हैं।	एक गाय, दो घोड़े और एक बकरी मैदान में चर रही है।

(यदि वाक्य में दोनों लिग और वचनों के अनेक विभक्ति रहित कर्ता 'और' या किसी अन्य अव्यय से युक्त हों, तो क्रिया बहुवचन में होगी और उसका लिंग अतिम कर्ता के अनुसार होगा।)

54 बाघ और बकरी एक-घाट पानी पीती है। — बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।

(यदि वाक्य मे दोनो लिग के एकवचन के विभक्ति रहित अनेक कर्ता 'और' या इसी अर्थ मे व्यवहृत किसी अन्य अव्यय से सयुक्त हो, तो क्रिया प्राय वहुवचन और पुल्लिग होगी।)

55 कई रेलवे के कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई। — रेलवे के कई कर्मचारियो की गिरफ्तारी हुई।

56 मुझे सदेह है कि युद्ध 1944 ई के पहले बंद हो जाएगा। — मैं समझता हूँ कि युद्ध 1944 ई. के पहले बंद हो जाएगा।

(ऐसा अशुद्ध वाक्य अँगरेजी के शाब्दिक अनुवाद की देन है)

57 छात्रो ने पंडित नेहरू को अभिनंदन-पत्र प्रदान किया। — छात्रो ने पडित नेहरू को अभिनंदन-पत्र अर्पित किया।

('प्रदान' का प्रचलन उस दान के लिए निश्चित् हो चुका है, जो बड़ो की ओर से 'छोटो' को दिया जाता है। बड़ो के लिए 'अर्पण' का प्रयोग होता है।)

58 भारत सरकार ने श्रीमती रुक्मिणी अरुण्डेल को 'भारत-विभूषण' की पदवी अर्पित की। — भारत सरकार ने श्रीमती रुक्मिणी अरुण्डेल को 'भारत-विभूषण' की पदवी प्रदान की।

(बडो द्वारा दिए गए पुरस्कार या आशीर्वाद के अर्थ में 'प्रदान' शब्द का ही प्रयोग होता है।)

59 शेक्सपियर के नाट्य-दृश्यों का प्रयोग होना चाहिए। — शेक्सपियर के नाटकों का अभिनय होना चाहिए।

60. मैं गाने की कसरत कर रहा हूं। — मैं गाने का रियाज या अभ्यास कर रहा हूँ।

61 वह गीत की दो-चार लड़ियाँ गाती है। — वह गीत की दो-चार कड़ियाँ गाती है।

62 हमारी सौभाग्यवती कन्या का विवाह होने जा रहा है। — हमारी आयुष्मती कन्या का विवाह होने जा रहा है।

(विवाह के बाद ही कन्या 'सौभाग्यवती' होती है, पहले नही)

63 वहाँ भारी-भरकम भीड़ जमा थी। — वहाँ भारी भीड लगी थी।

64 शोक है कि आपने मेरे पत्रो का कोई उत्तर नही दिया। — खेद है कि आपने मेरे पत्रो का कोई उत्तर नही दिया।

65	साहित्य और जीवन का घोर सम्बन्ध है।	साहित्य और जीवन का अभिन्न सम्बन्ध है।
66	आपका पत्र सधन्यवाद या धन्यवाद-सहित मिला।	आपका पत्र मिला। धन्यवाद।

('धन्यवाद' के अशुद्ध प्रयोग वाले वाक्य का अर्थ हो जाएगा-पत्र तो मिला ही, साथ में धन्यवाद भी मिला।)

67	पति-पत्नी के झगडे का हेतु क्या हो सकता है ?	पति-पत्नी मे झगडे का कारण क्या हो सकता है ?

('हेतु' विशिष्ट अर्थ मे और 'कारण' साधारण अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'हेतु' का मुख्य अर्थ है- वह उद्देश्य, जिससे कोई कार्य किया जाये।)

68	लडका मिठाई लेकर भागता हुआ घर आया।	लडका मिठाई लेकर दौडता हुआ घर आया।

('भागना' भय या आशका के कारण और 'दौड़ना' साधारण अर्थ में लिया जाता है।)

69	वर्तमान महासमर विश्व की सर्वप्रमुख समस्या है।	वर्तमान महासमर ससार की सबसे बड़ी समस्या है।

(अग्रेजी मे जो अर्थ world और universe का है, उन्ही अर्थों मे क्रमश 'ससार', और 'विश्व' का प्रयोग होता है।)

70	इस समय आपकी आयु चालीस वर्ष की है।	इस समय आपकी अवस्था चालीस वर्ष की है।

('आयु' समस्त जीवन-काल और 'अवस्था' साधारण 'वय' या 'उम्र' को कहते हैं।)

71	उसकी पत्नी बडी लजीज है।	पुलाव बहुत लजीज है।

(सिर्फ खाने-पीने की चीजे ही 'लजीज' हो सकती है।)

72	एक प्रलयी प्रचण्ड हुकार हुआ।	एक प्रलयकर हुंकार हुई।

(प्रलय का विशेषण 'प्रलयंकर' है, प्रलयी नही)

73	मेरा नाम श्री आनंदकुमार जी है।	मेरा नाम आनदकुमार है।

(अपने नाम के पहले और अंत मे क्रमश. 'श्री' और 'जी' लगाना अहकार और शिष्टाचारहीनता का परिचय देना है।)

74 मैं इसका वह अर्थ नही लगाता, जो कि आप लगाते हैं।

मै इसका यह अर्थ नही लगाता जो आप लगाते है।

(यहॉ 'कि' के प्रयोग से 'अधिकपदत्व' का दोष आता है।)

75 अभग एक प्रकार का मराठी छन्द होता है।

अभंग एक मराठी छन्द है।

(यहाँ 'प्रकार का अपप्रयोग है। अत यहॉ 'अधिकपदाव' दोष है।)

76 उनकी अपनी प्रखर बुद्धिशक्ति उनके हर काम में प्रकट होती है।

उनके हर काम में प्रखर बुद्धिशक्ति प्रकट होती है।

(सोचने का काम पराये मन से नही होता। अत. 'अपनी' शब्द अनावश्यक है।)

77 दो वर्षों के बीच भारत और ब्रिटेन के बीच कटुता उत्पन्न हो गई।

दो वर्षों के बीच भारत और ब्रिटेन में कटुता उत्पन्न हो गई।

(यहॉ 'बीच' शब्द की द्विरुक्ति के कारण 'कथितपदत्व' दोष आ गया है।)

78 उम वन में प्रातःकाल के समय वहुत ही सुहावना दृश्य होता था।

उस वन में प्रातकाल का दृश्य बहुत ही सुहावना होता था।

(वाक्य में एक ही अर्थ या भाव सूचित करने वाले दो शब्द प्रयुक्त नही होने चाहिए। यहॉ 'प्रातकाल' और 'समय' का प्रयोग दोषपूर्ण है। अत· यह भी कथितपदत्व-दोष है। नीचे कुछ और उदाहरण दिए गए हैं।

79 आपका भवदीय।

आपका या भवदीय।

80 आजकल वहां काफी सरगर्मी दृष्टिगोचर हो रही है।

आजकल वहॉ काफी सरगर्मी दिखाई देती है।

('सरगर्मी' के साथ 'दृष्टिगोचर' का प्रयोग भाषा के नाते बेमेल है।)

81 वकीलो ने कागजात का निरीक्षण किया।

वकीलों ने कागजों की जॉच की।

(यहॉ भी 'कागजात' और 'निरीक्षण' का बेमेल प्रयोग है।)

82 ऐसे चित्रो मे से किसी व्यक्ति या घटना के दृश्य या रूप का ही अकन प्रधान होता है।

किसी व्यक्ति या घटना के रूप या दृश्य का अकन ही ऐसे चित्रो मे प्रधान होता है।

(अशुद्ध वाक्य में पदों का क्रम शिथिल है।)

83 वहॉ बहुत-से पशु और पक्षी उड़ते और चरते हुए टिखाई दिए।

वहॉ बहुत-से पशु और पक्षी चरते और उड़ते दिखाई दिए।

(अशुद्ध वाक्य मे पशु और पक्षी के क्रम में क्रियाएँ नहीं आईं।)

	अशुद्ध	शुद्ध
84	यह चित्र श्री शारदाजी जब नागौर पधारे थे, उस समय लिया गया था।	यह चित्र उस समय लिया गया था, जब शारदाजी नागौर पधारे थे।

(अशुद्ध वाक्य मे उपवाक्य अंग्रेजी ढग पर है, हिन्दी ढंग पर नहीं है।)

85	नारायण, जिसे छह महीने की सजा हुई थी, की अपील मजूर की गई।	छह महीने की सजा पाने वाले नारायण की अपील मजूर हो गई।

(अशुद्ध वाक्य मे 'की' विभक्ति यथास्थान प्रयुक्त नही है। इसे 'अक्रमत्वदोष' कहते हैं।)

86	उसने 'निवेदिता' शीर्षक कविता लिखी गई थी, खडी बोली की।	उसने खड़ी बोली में 'निवेदिता' शीर्षक कविता लिखी थी।
87	भारतीयो को चाहिए कि वे अपने बच्चों को बताएँ कि भारत उनका है।	भारतीयों को चाहिए कि अपने बच्चों को बताएँ कि भारत हमारा है।

(अशुद्ध अंग्रेजी का 'परोक्ष कथन' है। यह अन्धानुकरण हिन्दी मे ठीक नहीं।)

88	मैं अपनी बात का स्पष्टीकरण करने के लिए तैयार हूँ।	मै अपनी बात के स्पष्टीकरण के लिए तैयार हूँ।

(अशुद्ध वाक्य में 'करना' क्रिया का वाचक 'करण' पहले से ही मौजूद है। साधारण वाक्य में दो-दो क्रियावाचक पदो का प्रयोग नही होता।)

89	यह काम आप पर निर्भर करता है।	यह काम आप पर निर्भर है।

('निर्भर' के साथ 'करना' क्रिया का प्रयोग दोषपूर्ण है।)

90	मैं आपकी भक्ति या श्रद्धा करता हूँ।	मैं आप पर श्रद्धा (या भक्ति) रखता हूँ।

(श्रद्धा, भक्ति आदि के साथ 'करना' क्रिया नहीं खपती।)

91	हमारे शिक्षक प्रश्न पूछते हैं।	हमारे शिक्षक प्रश्न करते हैं।

(प्रश्न के साथ 'करना' क्रिया का प्रयोग होता है।)

92	मैने एक वर्ष तक उनकी प्रतीक्षा देखी।	मैने एक वर्ष तक उनकी प्रतीक्षा की।

('प्रतीक्षा' की जाती है, देखी नही जाती।)

93	सारा राज्य उसके लिए एक थाती थी।	सारा राज्य उसके लिए थाती था।

(व्याकरण के अनुसार वाक्य की क्रिया सदा कर्ता या उद्देश्य के अनुसार होती है। यहाँ अशुद्ध वाक्य मे विधेय के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है, जो ठीक नही है।)

94	कई सौ वर्षो तक भारत के गले में पराधीनता की वेडियाँ पडी रही।	कई सौ वर्षो तक भारत के पैरों मे पराधीनता की बेडियाँ पडी रही।

(पैरो मे बेडियाँ पडती है और गले मे फदा या तौक।)

95	ऐसी एकाध बातें और देखने मे आती है।	ऐसी एकाध बात और देखने में आती है।

('एकाध' के साथ एकवचन का प्रयोग होता है।)

96	मै आपका दर्शन करने आया हूँ।	मैं आपके दर्शन करने आया हूँ।

(हिन्दी मे दर्शन, प्राण, समाचार, दाम, लोग, होश, हिज्जे, भाग्य और ऑसू सदा बहुवचन मे प्रयुक्त होते है।)

97	यह कविता अनेक भावो को प्रकट करती है।	यह कविता अनेक भाव प्रकट करती है।

(अशुद्ध वाक्य मे 'को' का प्रयोग व्यर्थ है कुछ और उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।)

98	इस बात के कहने मे किसी को सकोच न होगा।	यह बात कहने म किसी को सकोच न होगा।

('के' का प्रयोग व्यर्थ है।)

99	उसके चाचा को लडकी हुई है।	उसके चाचा के लडकी हुई है।

(सम्बन्ध, स्वामित्व और सम्प्रदान के अर्थ में सम्बधकारक या सम्बन्ध क्रिया के साथ होता है और उसकी 'के' विभक्ति आती है - कामताप्रसाद गुरु)

100	शब्द केवल सकेतमात्र है।	शब्द केवल संकेत हैं।

(वाक्य में किसी एक पद पर विशेष बल देने के लिए 'पर', 'केवल', 'मात्र' और 'ही'–इन चार अव्ययों में से किसी एक का ही प्रयोग होता है।)

101	इन दोनो मे केवल यही अतर है।	इन दोनों मे यही अंतर है।

(वाक्य मे प्रयुक्त 'यही = यह + ही' का 'ही' और 'केवल' पर्यायवाची है।)

102	हम तो अवश्य ही जाएंगे।	हम तो अवश्य जाएगे।

('अवश्य' और 'ही' का प्रयोग एक साथ नहीं होता है।)

103	किसी भी आदमी को भेज दो।	किसी आदमी को भेज दो।

('किस + ही = किसी' के 'ही' से ही काम चल जाता है। उसके स्थान पर 'भी' का प्रयोग भद्दा है।)

104	वह बिल्कुल भी बात करना नही चाहती थी।	वह बिल्कुल बात करना नही चाहती थी।
105	चाहे जैसे भी हो तुम वहॉ जाओ।	चाहे जैसे हो, तुम वहॉ जाओ।

('चाहे' और 'बिलकुल' के बाद 'भी' का प्रयोग भद्दा है।)

106	मैंने सुई, कघी, दर्पण और पुस्तके मोल लिए।	मैंने सुई, कघी, दर्पण और पुस्तकें मोल ली।

नियम – 'ने' चिह्न वाले , अर्थात् सम्प्रत्यय कर्ता और 'को' चिह्न से रहित, अर्थात् अप्रत्यय कर्म की स्थिति मे अंतिम कर्म के वचन और लिंग के अनुसार क्रिया होगी।

107	थोडी देर बाद वे वापस लौट आए।	थोडी देर बाद वे लौट आये। या, थोडी देर बाद वे वापस आए।
108	प्रधानाध्यापक लडके चुनेगे।	प्रधानाध्यापक लड़कों का चुनाव करेगे।
109	मैं हल करने की तलाश में हूॅ।	मै इस सवाल के हल की तलाश मै हूॅ।
110	तब शायद यह काम जरूर हो जाएगा।	तब यह काम जरूर हो जाएगा।

('शायद' और 'जरूर' का प्रयोग एक साथ नही होता।)

111	प्राय ऐसे अवसर आते है, जिसमे लोगो को कभी-कभी अपना मन बदलना पडता है।	प्राय ऐसे अवसर आते है, जबकि लोगो को अपना मत बदलना पडता है।

('प्राय ' के साथ 'कभी-कभी' का प्रयोग अनुचित है। दोनो विरोधी अव्यय है।)

112	पशुओ का झुण्ड चारों ओर पानी की चाह मे घूम रहा था।	पशुओ का झुण्ड चारो ओर पानी की खोज मे घूम रहा था।

('चाह' मे नही, बल्कि 'तलाश' या 'खोज' मे घूमा-फिरा जाता है।)

113	मेरे लिए ठण्डी बर्फ और गर्म आग लाओ।	मेरे लिए बर्फ और आग लाओ।

('बर्फ' ठण्डी और 'आग' गर्म ही होती है।)

114	हमारे यहॉ तरुण नवयुवको की शिक्षा का अच्छा प्रबंध है।	हमारे यहॉ नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबध है।

('तरुण' शब्द का प्रयोग व्यर्थ है, क्योकि 'नवयुवक' तरुण ही होते हैं।)

115	कृपया आप ही यह बताने का अनुग्रह करें।	कृपया आप ही यह बताएँ।
116	मुझसे यह काम सम्भव नही हो सकता।	मुझसे यह काम सम्भव नही।

('सम्भव' का अर्थ है 'हो सकना'।)

118.	यह कहना आपकी भूल है।	यह कहना आपकी गलती है।

(हिन्दी-कृदन्त 'भूल' का अर्थ यहाँ ठीक नही बैठता। इसलिए अरबी-तद्धित 'गलती' का प्रयोग उचित है। यो सस्कृत शब्द 'त्रुटि' भी यहाँ चल सकता है।)

119	शास्त्री जी की मृत्यु से हमें बडा खेद हुआ।	शास्त्रीजी की मृत्यु से हमे बडा दुःख हुआ।

('खेद' साधारण जीवन की बात है, जबकि 'दुःख' नितात हानि की।)

120	व्यायाम करना चाहिए, जिससे कि स्वस्थ रहें।	व्यायाम करना चाहिए, ताकि हम स्वस्थ रहे।

('ताकि' फारसी अव्यय का हिन्दी-तद्भव है। 'ता कुजा' इसका फारसी-पर्याय है। यह हिन्दी में ज्यो-का-त्यो प्रचलित है। इसके स्थान पर, इसके अर्थ मे अन्य कोई शब्द हिन्दी में नही है। जैसे, 'कफन' (अरबी) का पर्याय हिन्दी मे नहीं है। 'जिससे कि' में 'ताकि' का अर्थ नही आता और फिर 'जिससे' के आगे उसी अर्थ का अव्यय 'कि' ठीक बैठता भी नही।)

121	तुम्हारा यह कहना मेरे लिए बडी बात होगी।	तुम्हारा यह कहना मेरे लिए बड़ी बात होगा।

('कहना' कर्ता है न कि 'बात'। अतः कर्ता के अनुसार क्रिया होनी चाहिए।)

122	एक-एक करके सभी मर गए।	एक-एक कर सभी मर गये।

('कर' के बाद 'के', 'कर' का अर्थ देकर व्यर्थ आवृत्ति पैदा करता है।)

123	वास्तव मे वह बडा आदमी है।	वस्तुत वह बडा आदमी है।

('वस्तुतः' ही सही है। 'वस्तुत' अव्यय है और 'वास्तव' विशेषण। विशेषण के बाद सज्ञा आती है, अधिकरण का चिह्न 'मे' नहीं।)

124	शिवाजी की खूब धाक जमी।	शिवाजी की काफी धाक जमी।

('खूब' और 'काफी' में अर्थ का अतर है।)

125	उसने मुक्तहस्त से धन लुटाया।	उसने मुक्तहस्त धन लुटाया।

('मुक्तकण्ठ' और 'मुक्तहस्त' का अर्थ ही है 'मुक्तकण्ठ और मुक्तहस्त होकर'।)

126	आज आपका दर्शन हुआ।	आज आपके दर्शन हुए।
127	आपको अनेको बार चेतावनी दी गई।	आपको अनेक बार चेतावनी दी गई।
128	आपका पत्र सधन्यवाद मिला।	आपका पत्र मिला। धन्यवाद।
129	आपका लडका वहॉ गया रहा होगा।	आपका लडका वहॉ गया होगा।
130	आजकल तबीयत ऊब आती है।	आजकल तबीयत ऊब जाती है।
131	आपके मन की थाह का पता नही चलता।	आपके मन की थाह नहीं लगती।
132	आपके बाद फिर वह आया।	आपके बाद वह आया।
133	आपने अपनी कविता स्वयं आप पढकर सुनाई।	अपने अपनी कविता पढकर सुनाई।
134	आपने कलम, कघी, छाता तथा पुस्तके मोल लिए।	आपने कलम, कघी, छाता तथा पुस्तके मोल ली।
135	आप यह रहस्य अपने मित्र को प्रकट कर दे।	आप यह रहस्य अपने मित्र पर प्रकट कर दे।
136	आज आपने भाषण दिया।	आज आपने भाषण किया।
136a	आपकी घडी मे कै बजा है।	आपकी घड़ी मे कितने बजे है।
137	आप वहॉ जाने नही सकेगे।	आप वहॉ जा न सकेगे।
138	आपको मृत्युदड की सजा मिली है।	आपको मृत्युदण्ड मिला है।
139	मै रोटी खाई।	मैने रोटी खाई।
140	राधा रोटी खाई।	राधा ने रोटी खाई।
141	सीता मुझसे कही।	सीता ने मुझसे कहा।
142	उसने बोला।	वह बोला।
143	मै वहॉ जाने नही सकूँगा।	मैं वहॉ जा न सकूंगा।
144	मोहन अब आरोग्य हो गया।	मोहन अब नीरोग हो गया।
145	आप कुशलतापूर्वक होगे।	आप कुशलपूर्वक होगे।
146	मैं अवश्य ही आऊँगा।	मैं अवश्य आऊँगा।
147	आपका सब विचार अच्छा है।	आपके सब विचार अच्छे है।
148	राम ने मुक्तहस्त से दान दिया।	राम ने मुक्तहस्त दान दिया।

149	उमने हाथ जोड दिया।	उसने हाथ जोड दिए।
150	देसाई के एक-एक शब्द तुले हुए होते है।	देसाई का एक-एक शब्द तुला हुआ होता है।
151	निम्न वाक्यो पर ध्यान दे।	निम्नाकित वाक्यो पर ध्यान दे।
152	विश्व ने जयप्रकाश की मुक्तकंठ से प्रशसा की।	विश्व ने जयप्रकाश की मुक्तकठ प्रशसा की।
153	राधा चरखा कातती है।	राधा चरखा चलाती है।
154	दरअमल मे मैंने सुना ही नही।	दरअसल मैंने सुना ही नही।
155	उसने आपको धन्यवाद दिया।	उसने आपका धन्यवाद किया ।
156	माता पुत्र शोक में विलाप कर रोने लगी।	माता पुत्र शोक मे विलाप करने लगी।
157	मै गॉधीजी के ऊपर श्रद्धा रखता हूॅ।	मैं गॉधीजी पर श्रद्धा रखता हूॅ।
158	वह भग ढाल कर पडा रहता है।	वह भग छानकर पड़ा रहता है।
159	वह शराब छानकर सोता रहता है।	वह शराब ढालकर सोता रहता है।
160	मेरी ऑखो से ऑसू बह निकले।	मेरी ऑखो से ऑसू बह चले।
161	वह केवल नाममात्र का राजा है।	वह नाममात्र का राजा है।
162	मैं प्रात काल के समय टहलता हूॅ।	मै प्रात काल टहलता हूॅ।
163	वह घर वापस लौट आया।	वह घर लौट आया।(वह घर वापस आ गया।)
164	अब उसके पास केवल तन के वस्त्र-मात्र बचे थे।	अब उसके पास केवल तन के वस्त्र बचे थे।
165	राजू दड देने के योग्य है।	राजू दडनीय है।(राजू दड पाने योग्य है।)
166	कई बैक के कर्मचारियो की गिरफ्तारी हुई।	बैक के कई कर्मचारियो की गिरफ्तारी हुई।
167	महाकवि को अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।	महाकवि को अभिनन्दन पत्र अर्पित किया गया।
168	गवैया गाने की कसरत करता है।	गवैया गाने का अभ्यास (रियाज) करता है।

169	रोटी और जीवन का घोर सम्बन्ध है।	रोटी और जीवन का अभिन्न सम्बन्ध है।
170	गीत की प्रथम लडी प्रभावित कर गई।	गीत की प्रथम कडी प्रभावित कर गई।
171	दोनो भाइयों के झगडे का हेतु अज्ञात है।	दोनो भाइयो के झगडे का कारण अज्ञात है।
172	शत्रु मैदान से दौड़ खडा हुआ।	शत्रु मैदान से भाग खड़ा हुआ।
173	रावण का प्रलयी हुंकार सुनकर बन्दर डर गए।	रावण का प्रलयकर हुकार सुनकर बन्दर डर गए।
174	मोहन ने हरीश के विरुद्ध मुकदमा किया।	मोहन ने हरीश पर मुकदमा दायर कर दिया।
175	मैं स्वय ही वहा जाऊंगा।	मैं स्वयं वहा जाऊगा।
176	हमारे देश का भविष्य तरुण नवयुवको पर निर्भर है।	हमारे देश का भविष्य नवयुवको पर निर्भर है।
177	नासिक मे नोट छापने की टकसाल है।	नासिक मे नोट छापने की प्रेस है।
178	आपकी समस्या की यही दवा है।	आपकी समस्या का यही समाधान है।
179	ठडी बर्फ तथा गर्म आग एक साथ नही रह सकतीं।	बर्फ तथा आग एक साथ नही रह सकती।
180	उसके बाद फिर मै बोला।	उसके बाद मै बोला।
181	आपका सब काम गलत होता है।	आपके सब काम गलत होते है।
182	सडक मे भीड लगी है।	सडक पर भीड लगी है।
183	शब्द केवल सकेत मात्र है।	शब्द केवल सकेत है।
184	रघुवीर को लडकी हुई है।	रघुवीर के लड़की हुई है।
185	अकबर और प्रताप मे घमासान की लड़ाई हुई।	अकबर और प्रताप मे घमासान लडाई हुई।
186	इस काम को करते हुए सात दिन हो गए।	यह काम करते सात दिन हो गए।
187.	मेरे मित्र ने मुझे काशी बुलाई।	मेरे मित्र ने मुझे काशी बुलाया।

188	सच्ची बात सुनते ही उसका चेहरा गिर गया।	सच्ची बात सुनते ही उसका चेहरा उतर गया।
189	उसने मेरे का मारा।	उसने मुझे मारा।
190	जल्द से यह काम करना।	जल्दी से यह काम करना है। (जल्द यह काम करना है)
191	मैं, वह और तुम पढोगे।	मैं, तुम और वह पढोगे।
192	मैं आपकी बगल में खडा हूँ।	मैं आपके बगल मे खडा हूँ।
193	आपकी वर्तमान मौजूदा हालत ठीक नही।	आपकी वर्तमान हालत ठीक नही।
194	तमाम देश भर मे अराजकता फैल गई।	देश भर मे अराजकता फैल गई।
195	इस काम का भार आपके ऊपर है।	इस काम का भार आप पर है।
196	नेता के गले मे फूलो की हार शोभित है।	नेता के गले मे फूलो का हार था।
197.	इन शब्दो को वाक्यो में प्रयोग करें।	इन शब्दो का वाक्यो मे प्रयोग करे।
198	मैं दो महीनों से बीमार हूँ।	मैं दो महीने से बीमार हूँ।
199	अख़लाक प्रातःकाल तडके प्रभातफेरी मे शामिल हुआ।	अख़लाक प्रभात फेरी मे शामिल हुआ।

पदो का क्रम

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
चॉदी-सोना	सोना-चॉदी	बीस-दस	दस-बीस
भाल-देख	देख-भाल	पचास-सौ	सौ-पचास
नारी-नर	नर-नारी	अच्छा एक लडका	एक अच्छा लडका
पिता-माता	माता-पिता	विदेशी सिलाई के धागे	सिलाई के विदेशी धागे
पुरुष-स्त्री	स्त्री-पुरुष		
झगड़ना-लडना	लडना-झगडना	एक चाय का कप	चाय का एक कप
बहन-भाई	भाई-बहन	सब हम	हम सब
धान्य-धन्य	धन्य-धान्य	एक गुलाब और गेदे की माला	गुलाब और गेदे की एक माला
फूलो-फलो	फलो-फूलो		

■■■

10

लोकोक्तियां एवं वाग्धाराएं

लोकोक्तियां एव वाग्धाराए भाषा को पुष्ट करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इनके प्रयोग से भाषा चुस्त एव सजीव हो जाती है। हिन्दी के लेखक इनके प्रयोगो के प्रति उदासीन ही रहते है, फिर भी जहॉ कही स्वत इनका प्रयोग हो जाता है तो वहॉ विचार या भाव प्रभावी हो जाता है। लोकोक्ति और वाग्धाराएं वाक्य या वाक्याश का वह सुगठित एव परिष्कृत रूप है, जिसमें किसी प्रकार का फेर-बदल सम्भव नही है। वह जिस रूप मे चल पड़ता है, उसी रूप मे प्रभावी होता है।

लोकोक्ति' या 'कहावत' उस कथन को कहते है जिसके पीछे कोई सामाजिक, राजनीतिक या सास्कृतिक घटना का हाथ रहता है और वह घटना एक वाक्य या वाक्याश से स्पष्ट प्रतीत होती है अन्यथा शब्दानुसार उस वाक्य या वाक्याश का कोई अर्थ नही होता, यथा-'टेढी खीर' जैसी कहावत शब्दार्थ से अस्पष्ट एव निरर्थक है, क्योकि 'खीर' दूध और चावल से बना खाद्य पदार्थ होता है, उसे 'टेढा' या 'सीधा' कहना निरर्थक है। इसके पीछे घटना यह है कि किसी अन्धे ने एक व्यक्ति से पूछा कि खीर कैसी होती है? व्यक्ति ने कहा कि सफेद होती है। अन्धे ने फिर प्रश्न किया, सफेद कैसा होता है? तब व्यक्ति ने एक बगुला उसके हाथ मे देते हुए कहा कि ऐसी सफेद। अन्धे ने उस पर हाथ फिरा कर देखा और कहा कि खीर तो टेढी होती है। अत कहावत चल पडो 'टेढी खीर' अर्थात् जिसका ज्ञान कठिनाई से हो। इसी प्रकार अन्य लोकोक्तियो को भी समझ लेना चाहिए।

यहॉ पर केवल लोकोक्तियॉ एव उनके अर्थ ही दिए जा रहे हैं-

	लोकोक्ति	**अर्थ**
1	एक पन्थ दो काज-	एक साधन से दो कार्यो का सिद्ध होना।
2	एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है-	एक व्यक्ति सारे परिवार या समाज को दोषी बना देता है।
3.	अधजल गगरी छलकत जाए-	ओछा व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करता है।

4	अकल बडी कि भैंस-	बुद्धि शारीरिक शक्ति से अच्छी होती है।
5	अपनी नाक कटे तो कटे,दूसरे का सगुन तो बिगड़े-	किसी दूसरे को हानि पहुँचाने के लिए अपनी हानि की परवाह न करना।
6	अपना ही माल खोटा तो दूसरे को क्या कहें-	अपनी वस्तु बुरी है तो दूसरे को क्या दोष दें ?
7	आप मरे बिना स्वर्ग नही दिखता-	जब तक व्यक्ति अपना काम स्वय नही करता सफलता नही मिलती।
8	अब पछताय होत क्या जब चिडिया चुग गयी खेत-	काम बिगडने के पश्चात पश्चाताप करना व्यर्थ है।
9	अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग-	सब अपनी-अपनी चलाते है।
10.	अकेला चना भाड नहीं फोड सकता-	अकेला व्यक्ति कुछ नही कर सकता।
11	आख का अंधा गॉठ का पूरा-	मूर्ख धनी व्यक्ति।
12	आंख का अंधा नाम नैनसुख-	नाम और गुण मे अन्तर होना।
13	आठ कनौजिये नौ चूल्हे-	सब का पृथक-पृथक मार्ग पर चलना।
14	आम के आम गुठलियो के दाम-	दोनों ओर से लाभ मिलना।
15	आम खाने हैं कि पेड़ गिनने हैं-	कार्य की सिद्धि से मतलब रखना।
16	आधा तीतर आधा बटेर-	पूर्णता नही होना, अनमेल रूप या कार्य।
17	आप भला तो जग भला-	व्यक्ति को अपने आप को भला बनाना चाहिए दूसरो को दोष नहीं देना चाहिए।
18	आकाश से गिरा खजूर मे अटका-	एक बाधा से निपटा कि दूसरी बाधा मे फॅस गया।
19	उलटा चोर कोतवाल को डॉटे-	अपराध भी करे और अकड भी दिखाये।
20.	उतर गयी लोई तो क्या करेगा कोई-	मर्यादा का त्याग करने वाले का कोई कुछ नही कर सकता।

21	ऊट के मुँह मे जीरा-	अधिक स्थान पर बहुत कम का प्रयोग।
22.	एक अनार सौ बीमार-	वस्तु कम और चाहने वाले अधिक।
23	एक हाथ से ताली नहीं बजती-	झगडा एक व्यक्ति से नही होता।
24.	एक तो करेला फिर नीम चढा-	दुष्ट व्यक्ति का कुसंग मे और पड जाना।
25	एक म्यान मे दो तलवार-	समान वर्चस्व के व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकते।
26	एक और एक ग्यारह होते हैं-	एकता में शक्ति होती है।
27	ओखली मे सिर दिया तो मूसलो से क्या डर-	प्राणो को संकट में डाल देने से डरना नहीं चाहिए।
28	अगूर खट्टे है-	वस्तु के न मिलने पर उसमे दोष निकालना।
29	अन्धा पीसे कुत्ता खाये-	मूर्ख की कमाई दूसरे खाते हैं।
30	अन्धे के हाथ बटेर लगी-	अयोग्य पात्र को उत्तम वस्तु मिलना।
31	अन्धो मे काना राजा-	मूर्खो मे कम मूर्ख व्यक्ति ही बुद्धिमान कहलाता है।
32	अन्धे के आगे रोवे, अपने नैन खोवे-	मूर्ख से अपनी दुर्दशा कहना व्यर्थ है।
33	अन्धा क्या चाहे, दो आखे-	इच्छित वस्तु की प्राप्ति।
34	कही खेत की, सुनी खलिहान की-	कुछ का कुछ सुनना।
35	कही की ईट–कही का रोडा, भानमती ने कुनबा जोड़ा-	अनमेल वस्तुओ को एकत्र करना।
36	कहने से कुम्हार गधे पर नही चढ़ता-	हठी व्यक्ति कहने से काम नही करता।
37	कर ले सो काम भज ले सो राम-	कार्य को तुरन्त कर लेना ही अच्छा रहता है।
38	कहॉ राजा भोज, कहॉ गंगू तेली-	अत्यधिक अन्तर होना।

39	काजी जी दुबले क्यो, शहर का अन्देशा-	दूसरों की चिन्ता से पीडित रहना।
40	काठ की हांडी एक बार ही चढती है-	कपट व्यवहार बार-बार नही चलता।
41	कानी के ब्याह मे सौ झगड़े-	दोष के कारण कार्य बिगडने की आशंका रहती है।
42	काबुल में क्या गधे नही होते-	अच्छे स्थान पर भी बुरे मिल जाते हैं।
43	कुआ प्यासे के पास नही जाता-	जिसका काम होता है वही जाता है।
44	काला अक्षर भैंस बराबर-	निरक्षर।
45	कुछ दाल मे काला है-	संदेहास्पद स्थिति मे होना।
46	कोयले की दलाली में हाथ काले-	बुरे कार्य से बुराई ही मिलती है।
47	खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है-	एक को देखकर ही दूसरा सीखता है।
48	खुदा गजे को नाखून नही देता-	अनाधिकारी व्यक्ति को अधिकार नही मिलता।
49	खोदा पहाड़ निकली चुहिया-	अधिक परिश्रम से थोडा फल मिलना।
50	गगा का आना हुआ भागीरथ को जस-	काम तो स्वय होता है, किन्तु यश किसी को मिल जाता है।
51	गगा गये गगादास, जमुना गये जमुनादास-	हॉ मे हॉ मिलाना।
52	गेहूं के साथ घुन भी पिसता है-	बडो के साथ छोटे भी मारे जाते है या अपराधी के साथ निरपराध भी मरता है।
53	घर की मुर्गी दाल बराबर-	अपनी वस्तु का सम्मान नही होता।
54	घर का भेदी लका ढाये-	अपना आदमी ही हानि पहॅुचाता है।
55	घर में नही दाने बुढ़िया चली भुनाने-	झूठा प्रदर्शन।
56	घर आया नाग न पूजिये, बॉबी पूजन जाये–	अवसर का लाभ न उठाकर फिर उसकी खोज में फिरना।

57	घर का जोगी जोगना आन गॉव का सिद्ध-	जानकार गुणी का सम्मान नही होता और अनजान व्यक्ति को सिद्ध मान लिया जाता है।
58	घोडा घास से यारी करे तो खाये क्या-	यदि लाभाश न हो तो निर्वाह कैसे हो ?
59	चलती का नाम गाडी-	भ्रम बना रहे तभी तक सम्मान है या सफलता मिलती रहे त ी तक यश है।
60	चमडी जाए पर दमडी न जाए-	अत्यधिक कंजूसी।
61	चार दिन की चॉदनी, फिर अधेरी रात-	अल्पकाल का सुख।
62	चिकने घडे पर पानी नही ठहरता-	निर्लज्ज पर कहने का असर नही पडता।
63	चुपडी और दो-दो-	उत्तम वस्तु और वह भी दुगुनी मात्रा में।
64	चोर की दाढी मे तिनका-	अपराधी व्यक्ति का सशक रहना।
65	चोरी और सीनाजोरी-	अपराध करना और अकडना।
66.	चोर-चोर मौसेरे भाई-	एक व्यवसाय के व्यक्ति मेल से रहते हैं।
67.	चौबे जी गये थे छब्बे होने, रह गये दुब्बे-	लाभ के लिए प्रयत्न करना और हानि हो जाना।
68	छोटे मुँह बड़ी बात-	अपनी हैसियत से बढ़कर बातें करना।
69	जल मे रहकर मगर से बैर-	शक्तिशाली से शत्रुता नही करनी चाहिए।
70	जाके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई-	दु ख भोगे बिना दु ख के स्वरूप का ज्ञान नही होता।
71	जिसकी लाठी उसकी भैस-	जिसमे बल होता है वह राजा होता है।
72	जितने मुँह उतनी बाते-	वास्तविकता का ज्ञान न होना।

73	जैसा देश वैसा भेष-	देशानुसार व अवसरानुसार कार्य करना चाहिए।
74	जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा-	परिश्रम के अनुसार फल मिलता है।
75	जो मन चगा तो कठौती में गंगा-	शुद्ध अन्तक़रण वाले व्यक्ति के लिए प्रत्येक स्थल तीर्थ के समान है।
76	जंगल मे मोर नाचा किसने देखा-	बिना देखे किसी के गुणों का पता नही लगता।
77	झूठ के पैर नहीं होते-	झूठ अधिक नहीं चलता।
78	डूबते को तिनके का सहारा-	दुःखी व्यक्ति को कुछ आश्रय मिल जाना।
79	तबेले की बला बंदर के सिर-	सबकी बुराई एक पर आरोपित कर देना।
80	तीन लोक से मथुरा न्यारी-	सबसे भिन्न विचार रखना।
81	तुरत दान महा कल्याण-	कार्य तुरन्त कर लेना चाहिए।
82	तू डाल-डाल मैं पात-पात-	चालाक से बढकर चालाक।
83	तेल तो तिलों से ही निकलता है-	लाभ तो लाभ के स्थान से ही मिलता है।
84.	तेल देखो तेल की धार देखो-	धैर्य से काम लो और परिस्थिति को परखो।
85	थोथा चना बाजे घणा-	मूर्ख व्यक्ति अधिक बोलता है।
86	दान की बछिया के दाँत नही देखे जाते-	मुफ्त में मिली वस्तु का परीक्षण नहीं किया जाता।
87.	दीवार के भी कान होते है-	गुप्त परामर्श में भी सावधान रहना चाहिए।
88	दुधारू गाय की लात भी सहनी पडती है-	जिससे लाभ हो उसका दुर्व्यवहार भी सहना पड़ता है।

89	दूर के ढोल सुहावने-	प्रत्येक वस्तु दूर से ही अच्छी लगती है।
90	दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है-	धोखा खाने के पश्चात् व्यक्ति अधिक सावधानी बरतने लगता है।
91	धोबी का कुत्ता घर का न घाट का-	निश्चित कार्य एव कार्य-स्थल का अभाव।
92	न रहेगा बॉस न बजेगी बॉसुरी-	कारण को समूल नष्ट कर देना।
93	न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी-	किसी कार्य को न करने का बहाना।
94	नमाज छोडने गये रोजे गले पड़े-	एक समस्या के निराकरण मे दूसरी समस्या का आ जाना।
95	नक्कारखाने मे तूती की आवाज-	बड़ो के बीच छोटो की कोई नही सुनता।
96	नाम बडे और दर्शन छोटे-	झूठी ख्याति।
97	नाई की बारात में सभी ठाकुर-	जहॉ सब अपने को बड़ा समझते हों।
98	नेकी कर दरिया मे डाल-	भलाई करके उसे भूल जाना चाहिए।
99	नक्कारखाने मे तूती की आवाज-	बडो के बीच छोटो की कोई नही सुनता।
100	नेकी और पूछ-पूछ-	भलाई मे स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती।
101.	नौ नकद तेरह उधार-	तुरन्त लाभ कम भी अच्छा होता है।
102	पहले अपनी दाढी की आग बुझाई जाती है-	अपना काम पहले किया जाता है।
103.	पाचो अगुलियो से पहुँचा भारी होता है-	एकता एव सहयोग से प्रतिष्ठा मिलती है।
104	पॉचों अंगुलियॉ घी मे है-	लाभ ही लाभ।
105	पाँचों अंगुलियॉ बराबर नही होती-	सभी मनुष्य एक जैसे नहीं होते।
106	फरा सो झरा, बुरा सो बुताना-	अन्त अवश्यम्भावी होता है।
107	बकरे की मॉ कब तक खैर मनायेगी-	भाग्यहीन व्यक्ति को विपत्ति में पड़ना ही होगा।

108	बडे बोल का सिर नीचा-	अभिमान का पतन होता है।
109	शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं-	शत्रुता नाम की वस्तु नही है।
110	बाम्बी में हाथ तू डाल और मन्त्र मै पढ़ू-	दूसरे को विपत्ति मे डालना।
111	बारह वर्ष दिल्ली रहे और भाड ही झोका-	अच्छी संगति मे रहकर भी कुछ नही सीखा।
112	बिल्ली के भाग्य से छीका टूटा-	अयोग्य व्यक्ति को बिना प्रयत्न फल प्राप्ति।
113	बिना रोये मॉ भी दूध नहीं पिलाती-	उद्यम बिना कुछ नही मिलता।
114	बोया पेड़ बबूल का आम कहॉ से होय–	बुरे काम का अच्छा फल नहीं मिल सकता।
115	बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद-	अज्ञानी व्यक्ति गुणो का महत्व नही समझता।
116	भयी गति सॉप छछुन्दर केरी-	किसी काम मे फॅसने पर करने और न करने से -दोनो प्रकार से हानि होना।
117.	भागते चोर की लंगोटी ही सही-	जहॉ कुछ भी मिलने की सम्भावना न हो वहॉ जो कुछ मिल जाए वही ठीक है।
118.	भैस के आगे बीन बजाना-	अज्ञानी व्यक्ति को उपदेश देना व्यर्थ है।
119	भेड़ की लात घुटनों तक-	साधारण आदमी अधिक हानि नही पहुॅचा सकता।
120	भेड जहॉ जाएगी, मूॅडी जाएगी-	मूर्ख आदमी सदैव ठगा जाएगा।
121	मान न मान, मैं तेरा मेहमान-	बलात् किसी के गले पडना।
122	मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त-	जिसका काम हो, वह कुछ भी न करे।
123	मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक-	अधिक उद्योग न करना।
124	मुख में राम बगल में छुरी-	अच्छे प्रदर्शन के माध्यम से धोखा देना।

125	रस्सी जल गई किन्तु बल नही गया-	नष्ट होने पर भी अभिमान न जाना।
126	राम-राम रटना, पराया माल अपना-	मक्कारी से कमाना।
127	रोज कुऑ खोदना, रोज पानी पीना-	रोज कमाना और पेट भरना।
128	सौ मन चूहे खाकर बिल्ली हज को चली-	आजन्म पाप करते रहना और अन्तिम समय में भक्ति करना।
129	सॉप मरे, न लाठी टूटे-	बिना हानि के कार्य करना।
130	सावन के अन्धे को हरा-हरा दिखता है-	एक ही बात पर अड़े रहना।
131	सावन सूखे न भादों हरे-	एक रूप रहना।
132.	सिर मुँडाते ही ओले पडे-	प्रारम्भ करते ही कार्य बिगड़ने के आसार।
133	सीधी अगुली से घी नही निकलता-	प्यार से कोई काम नही करता।
134	हीग लगे न फिटकरी रग चोखा ही चोखा-	मुफ्त में काम बन जाना।
135	हाथ कंगन को आरसी क्या, पढे लिखे को फारसी क्या –	प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नही है।
136	हाथी चलते रहते है, कुत्ते भौकते रहते हैं-	समर्थ व्यक्ति को तुच्छ जनो पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
137	हाथी के दॉत खाने के और दिखाने के और-	कपट व्यवहार।
138	होनहार बिरवान के होत चीकने पात-	होनहार व्यक्ति के लक्षण जन्म से प्रकट होने लगते है।
139	सिफारिशी टट्टू-	जिस व्यक्ति की सिफारिश हो।
140	फूॅक-फूॅक कर कदम रखना-	सावधानी से कार्य करना।
141	शनिश्चर लगना-	बुरे दिन आना।
142	पेट में चूहे दौडना-	भूख लगना।
143	सब्ज बाग दिखाना-	झूंठे आश्वासन देना।
144.	मुँह पर बारह बजना-	उदास हो जाना।
145	गागर मे सागर भरना-	थोड़े मे अधिक कहना।
146	मेंढ़की को जुकाम होना-	सामर्थ्य से बाहर बात करना।

147	अपनी जॉघ उघाडे आप ही लाजे-	अपना भेद देने से अपना ही अपयश होता है।
148	ओछे की प्रीत, बालू की भीत-	नीच जन का प्रेम स्थायी नही होता।
149	गुड देने से मरे तो जहर क्यों दें-	समझाने से मान जाए तो लड़ाई क्यों करे।
150	घर खीर तो बाहर खीर-	जब अपने पास कुछ होता है तभी दूसरे लोग पूछते हैं।
151	जस दुल्हा तस बनी बारात-	प्रधान के अनुसार ही सहयोगी होते हैं।
152.	ऑखों देखते मक्खी नही निगली जाती-	जानबूझ कर किसी का अहित नही किया जाता।
153	नग बडे परमेश्वर से-	दुर्जन से डरना चाहिए।
154	नीम हकीम खतरा- ए जान-	अज्ञानी हानिकारक होता है।
155	मन भावे, मुँह हिलावे-	इच्छा होते हुए भी ऊपर से इनकार करना।

वाग्धाराएँ (मुहावरे)

हिन्दी वाग्धाराओं की यह विशेषता है कि अधिकतर मुहावरों का निर्माण शारीरिक अंगों के और प्रकृति के प्रमुख अवयवो के आधार पर हुआ है। अत. यहॉ पर पहले शारीरिक अगो से सम्बद्ध मुहावरे दिए जाएगे और अन्त में अन्य मुहावरों को रखा जाएगा।

(1) 'ऑख' सम्बन्धी वाग्धाराएँ-

1	ऑखें आना-	ऑखों मे विशेष प्रकार का रोग उत्पन्न होना।
2	ऑखे चुराना-	सामने आने मे शर्माना।
3	ऑखों में धूल झोकना-	देखते-देखते धोखा देना।
4	ऑखें दिखाना-	क्रोध से देखना।
5	ऑखें चार होना	परस्पर देखना।
6	ऑखें फेर लेना-	प्रीति का त्याग करना।
7.	ऑख मारना-	इशारा करना।
8	ऑखें बिछाना-	खूब स्वागत करना।

9	ऑख लगना-	नीद आ जाना।
10	ऑखे बन्द होना-	मर जाना।
11	ऑखें लडाना-	प्रेम करना।
12	ऑख लाल करना-	क्रोध करना।
13	ऑख का काटा होना-	बुरा लगना।
14	ऑख का तारा होना-	प्रिय होना।
15	ऑखों से गिरना-	किसी की दृष्टि मे तुच्छ हो जाना।
16	ऑखे तरसना-	मिलने को लालायित होना।
17	ऑखे तरेरना-	क्रोध से देखना।
18.	ऑखो मे खून उतरना-	अत्यन्त क्रुद्ध होना।
19	ऑखो का पानी ढ़लना-	निर्लज्जतापूर्ण व्यवहार करना।
20.	ऑखो से परदा उठना-	वास्तविक स्थिति का ज्ञान होना।
21	ऑखो पर ठिकरी रखना-	निर्लज्ज बन जाना।
22	ऑखो मे चर्बी छा जाना-	अभिमान का आधिक्य होना।
23	ऑखे खुलना-	समझ मे आ जाना।
24	आँखो मे घर करना- '	अधिक प्रेम प्राप्त करना।
25	ऑख उठना-	आक्रमण करने की इच्छा।
26	ऑखे बैठना-	अन्धा होना।
27	ऑखें मिलाना-	साम्मुख्य करना, प्रेम प्रकट करना।

(2) 'उंगली' से सम्बद्ध वाग्धाराएँ –

1	उगली उठाना-	लाछित करना, आरोप लगाना।
2	उगली पर नाचना-	किसी की इच्छानुसार चलना।
3	उगली पर नचाना-	अपनी इच्छानुसार चलाना।
4	उगली पकडकर पहुँचा पकडना-	थोडा सा सहारा पाकर सर्वस्व पर अधिकार करना।

(3) कान से सम्बद्ध वाग्धाराएँ –

1.	कान काटना-	पराजय देना।

2	कान खाना-	बहुत बोलना।
3	कान पकडना-	पराजय स्वीकार करना, बुरे काम को न करने की प्रतिज्ञा करना।
4	कान पर जूँ न रेगना-	परवाह न करना।
5	कान मे तेल डालना-	ध्यान न देना।
6	कान का कच्चा-	बिना विचारे किसी के कथन पर विश्वास कर लेना।
7	कान पर हाथ रखना-	अस्वीकार करना।
8	कान भरना-	झूठी बातें सिखाना।
9.	कान में तेल डाले बैठे रहना-	सुना अनसुना करना।
10	कान खोलना-	सावधान करना।
11	कान खडे होना-	होशियार होना।
12	कान फूकना-	होशियार होना।
13	कान लगाना-	ध्यान होना।
14	कान देना-	ध्यान देना।

(4) **'गले' 'गरदन' से सम्बद्ध वाग्धाराएं –**

1.	गला काटना-	बहुत हानि पहुँचाना।
2	गले का हार होना-	बहुत प्रिय होना।
3.	गले पड़ना-	अनिच्छा से किसी का आ जाना या वस्तु आदि का प्राप्त होना या बिना बात विवाद करना।
4	गले मॅढना-	इच्छा के विरुद्ध कुछ देना।
5	गले लगना–	भेट करना (प्रेम भाव से)।
6	गला पकड़ना-	मारने को उद्यत होना।
7	गरदन पर छुरी फेरना-	अत्याचार करना, हानि पहॅुचाना।
8	गरदन पर सवार होना-	पीछे पड जाना।
9	गरदन काटना-	अत्यधिक हानि पहॅुचाना।
10	गरदन झुकाना-	अधीनता स्वीकार करना।

11.	गरदन उठाना-	प्रतिवाद करना।
12	गरदन फॅसाना-	संकट मे पड जाना।
(5)	**'गाल' से सम्बद्ध -**	
1	'गाल' बजाना -	डीग हॉकना।
2	गाल फुलाना-	नाराज होना, रूठना।
(6)	**'छाती' या 'सीने' से सम्बद्ध -**	
1	छाती ठोक कर -	साहस के साथ।
2	छाती पर मूँग दलना-	दिल दुखाना।
3	छाती पर पत्थर रखना-	हृदय कठोर करना।
4	छाती फटना-	दु ख से व्यथित होना।
(7)	**जी, 'जान' और 'मन' से सम्बद्ध-**	जी जान और मन से सम्बद्ध
1	जी उकताना -	मन न लगना।
2	जी तोड़कर काम करना-	कठिन परिश्रम करना।
3	जी मे जी आना-	धैर्य आना।
4	जी भर आना-	दया उमडना।
5	जी चुराना-	किसी काम से दूर भागना।
6	जीती मक्खी निगलना-	सरासर बेईमानी करना, अन्याय करना।
7	जी खोल कर काम करना-	साफ हृदय से सकोच रहित होकर काम करना।
8	जी-जान से-	पूर्णतया।
9	जी-जान लडाना-	पूर्ण प्रयास करना।
10	जान पर खेलना	जीवन को खतरे मे डालना, साहस दिखाना।
11	जान से हाथ धोना-	प्राण गॅवाना।
12	जान हथेली पर रखना-	मरने की परवाह न करना।
13	जान के लाले पड़ना-	प्राण बचने कठिन दिखाई देना।
14	जान सूखना-	डरना घबराना।

15 जान छूटना- संकट से बचना।

16 मनमाना- यथेष्ट, यथेच्छ।

17 मन के लड्डू खाना- कल्पना लोक में विचरण करना।

18 मन मसोस कर रह जाना- इच्छा को बलात् रोकना।

19 मन मारना- उदास होना।

20 मन मुटाव होना- वैमनस्य होना।

21 मन मैला करना- असन्तुष्ट होना।

22 मन का राजा- स्वतन्त्र।

23 मनमौजी- मस्त।

(8) 'मुँह', 'माथे' से सम्बद्ध-

1 मुँह काला करना- कलंक लगाना।

2 मुँह चलना- बकना।

3 मुँह बनाना- चिढाना, विकृत मुद्रा बनाना।

4 मुँह लगाना- अनावश्यक महत्व दे देना।

5 मुँह लटकाना- असन्तुष्ट होना, निराश होना।

6 मुँह मे लगाम न लगाना- अनियन्त्रित बोलना।

7 मुँह पसारना या फाड़ना- बहुत अधिक माँगना।

8 मुँह मे पानी भर आना- इच्छा जाग जाना।

9. मुँह होना- प्रतिष्ठा होना।

10 मुँह में दाँत न होना- असमर्थ होना।

11 मुँहफट होना- इच्छानुसार जो चाहे सो कह देना।

12 माथा टेकना- नमस्कार करना, सम्मान देना।

13 माथे मारना- बुरा लगना।

14 माथे पर बल पडना- क्रोध प्रकट होना।

15 सीधे मुँह बात न करना- बहुत अह प्रदर्शित करना।

16 मुँह मोड़ना- किसी काम से दूर हटना।

17 मुँह की खाना- हार जाना, दुर्दशा कराना।

18	मुँह छिपाना –	लज्जित होना।
19	मुँह पकड़ना –	बोलने से रोकना।
20	मुँह उतरना –	उदास होना।

(9) 'सिर' से सम्बद्ध-

1	सिर नीचा करना-	पराजय मान लेना।
2	सिर नीचा होना-	लज्जित होना।
3	सिर ऑखों पर-	बहुत सम्मान देना।
4	सिर पटकना-	कठिन प्रयत्न करना, पछताना।
5	सिर मारना-	अकारण घूमना फिरना, परिश्रम करना।
6	सिर मूॅडना-	ठगना।
7	सिर होना-	लडना, विवाद करना।
8	सिर धुनना-	पछताना।
9	सिर खपाना-	कठिन परिश्रम करना।
10	सिर हिलाना-	मना करना।
11	सिर पर चढाना-	बिगाडना, मनमानी करने देना।
12	सिर पर कफन बॉधना-	मरने को तैयार रहना।
13	सिर उठाना-	विद्रोह करना।

(10) 'हाथ', 'हथेली' से सम्बद्ध-

1	हाथ मे आना-	अधिकार मे आना।
2.	हाथ उठाना-	पीटना।
3.	हाथ खीचना-	योगदान बन्द कर देना।
4	हाथ कटाना-	वचनबद्ध होना।
5	हाथ खाली न होना-	सम्पन्न रहना, हाथ मे पैसे टिके रहना।
6	हाथ तग होना-	पैसे का अभाव होना।
7.	हाथ पसारना-	माग लेना।
8	हाथ गोकर पीछे पड़ जाना-	किसी के पीछे जी जान से लग जाना।

9	हाथ मलना-	पछताना।
10	हाथ का मैल-	तुच्छ पदार्थ।
11	हाथ-पैर मारना-	प्रयत्न करना।
12	हाथ-पैर चलाना-	परिश्रम करना।
13	हाथ-पैर फूल जाना-	भय या शोक से घबरा जाना।
14	हाथ पीले करना-	शादी करना।
15	हाथ बॅटाना-	सहायता देना।
16	हाथ डालना-	कार्य प्रारम्भ करना, हस्तक्षेप करना।
17	हाथ के तोते उड जाना-	घबरा जाना।
18	हाथ धो बैठना-	खो देना।
19	हाथ साफ करना-	हडप जाना।

(11) 'हिय' 'हृदय' से सम्बद्ध –

1	हिये की फूटना-	मूर्खता का काम करना।
2	हिय का हार होना-	प्रिय होना।
3.	हिय का शूल होना-	दुःखदायक होना।
4	हृदय-सम्राट होना-	अत्यन्त प्रिय होना।
5	हृदय पसीजना-	द्रवित होना, दया उमड़ना।

(12) 'दॉत' से सम्बद्ध –

1	दॉत खट्टे करना-	पराजित करना।
2	दॉत निकालना-	व्यर्थ हॅसना।
3	दॉतो तले अंगुली दबाना-	आश्चर्य प्रकट करना।
4	दॉत पीसना-	क्रोध प्रदर्शित करना।
5.	दॉत बजाना-	विवाद या कलह करना।
6	दॉत काटी रोटी-	गहरी दोस्ती
7	दॉत गिनना-	उम्र पता लगाना।

(13) 'नाक' से सम्बद्ध –

1	नाक कटना-	प्रतिष्ठा घटना।

2	नाक मे दम करना-	बहुत परेशान करना।
3	नाक रगडना-	विनीत हो जाना।
4	नाक-भौ सिकोडना-	घृणा करना।
5	नाको चने चबाना-	खूब तग करना।
6	नाक रख लेना-	इज्जत बचाना।
7	नाक का बाल होना-	किसी का प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति या वस्तु।
8	नाक मे नकेल डालना-	पूरी तरह अपने अधीन कर लेना।
9	नक्कू बनना-	किसी बात में अगुआ होकर अपयश लेना।
10	नाक काटना-	बदनाम करना।
11	नाक पर मक्खी न बैठने देना-	निर्दोष बचे रहना।
12	नाक पर गुस्सा रहना-	तुरन्त क्रोध आना।

(14) 'पैर', 'पॉव' या 'टॉग' से सम्बद्ध-

1	पैर पैलाकर सोना-	निश्चिन्त हो जाना।
2	पैर पसारकर सोना-	बेधड़क होना।
3	पैरो तले से ज़मीन खिसकना-	घबरा जाना।
4	फूॅक-फूॅक कर पैर रखना-	सावधानी से काम करना।
5	पॉव उखड़ जाना-	भाग जाना।
6	पांव उखाडना	जमने न देना।
7	टाग अडाना	हस्तक्षेप करना।

(15) 'पेट' से सम्बद्ध–

1	पेट की आग बुझाना-	क्षुधा शान्त करना।
2	पेट पालना-	आजीविका चलाना।
3	पेट में दाढ़ी होना-	बचपन से चतुर होना।
4	पेट मे रखना-	गुप्त रखना।
5	पेट में न पचना-	बात को गुप्त न रखना।
6.	पेट काटना-	उचित से कम देना।

7	पेट का हल्का-	ओछे स्वभाव का।
8	पेट का पानी न हिलना-	आराम से बिना विघ्न के कार्य सम्पन्न होना।
9	पेट में चूहे कूदना-	बहुत भूख लगना।

'बात' पर मुहावरे-

बात का धनी (वायदे का पक्का)-	मै जानता हूँ, वह बात का धनी है।
बात की बात में (अति शीघ्र) -	बात की बात मे वह चलता बना।
बात चलाना (चर्चा चलाना)-	कृपया मेरी बेटी के ब्याह की बात चलाइएगा।
बात तक न पूछना (निरादर करना)-	मैं विवाह के अवसर पर उसके यहॉ गया, पर उसने बात तक न पूछी।
बात बढ़ाना (बहस छिड जाना)-	देखो, बात बढ़ाओगे तो ठीक न होगा।
बात बनाना (बहाना करना)-	तुम्हे बात बनाने मे फुर्सत कहॉ ?

अन्य प्रसिद्ध वाग्धाराऍं –

1	अक्ल का दुश्मन-	मूर्ख।
2	अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना-	मूर्खता करना।
3	अगूठा दिखाना-	चिढ़ाना, उपेक्षा से मना करना।
4.	अन्धे की लकड़ी-	सहारा।
5	आकाश के तारे तोड़ना-	कठिन कार्य कर देना।
6	आग बबूला होना-	बहुत क्रोध आना।
7	आपे से बाहर होना-	क्रुद्ध होना।
8	आवाज उठाना-	विरोध करना।
9	उड़ती चिड़िया पहचानना-	थोडे से सकेत से रहस्य को समझ लेना।
10	उल्टे छुरे से मूॅडना-	मूर्ख बनाकर ठगना।
11.	उल्लू सीधा करना-	स्वार्थ सिद्ध करना।
12	एक ही थैली के चट्टे-बट्टे-	सब समान बुरे।

13	कमर कसना-	लड़ने को या कार्य करने को तैयार होना।
14	काठ का उल्लू-	वज्र मूर्ख।
15	किस खेत की मूली-	अस्तित्वहीन।
16	कुए मे भॉग पडना-	सभी की बुद्धि खराब होना।
17	कौडी के मोल-	बहुत सस्ता।
18	खाक उडाना-	बर्बाद करना।
19	खाक छानना-	असफल भ्रमण करना।
20	खून खौलना-	खूब गुस्से मे आना।
21	गुड़ गोबर करना-	सारा काम बिगाडना।
22	गोबर गणेश-	मूर्ख।
23	छठी का दूध याद दिलाना-	कठिनाई में पडना।
24	थूक कर चाटना-	कह कर मना कर देना।
25	धज्जियॉ उडाना-	दुर्गति करना, कडी आलोचना करना।

■■■

11

उपसर्ग एवं प्रत्यय

भाषाएँ परिवर्तनशील होती हैं। बोलचाल एव व्यवहार से शब्द घिसते रहते हैं और अन्त मे वे शब्द उपसर्ग एव प्रत्ययों का रूप धारण कर लेते हैं।

उपसर्ग

वे शब्द या शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व मे लगकर उसके अर्थ को या तो परिवर्तित कर देते है अथवा उनमे वैशिष्ट्य आ जाता है।

(i) उपसर्ग का अपना कोई स्वतन्त्र अर्थ नही होता।

(ii) उपसर्ग का वाक्य मे स्वतन्त्र प्रयोग नही होता।

(iii) शब्द के योग मे 'ही' अपना अर्थ प्रकट करता है।

(iv) एक ही उपसर्ग भिन्न-भिन्न शब्दों के साथ भिन्न-भिन्न अर्थ देता है।

हिन्दी भाषा के उपसर्गों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

(1) तत्सम उपसर्ग

(2) तद्भव उपसर्ग और

(3) विदेशज उपसर्ग।

(1) **तत्सम उपसर्ग-** सस्कृत भाषा मे उपसर्गो की सख्या कुल '22' थी। इनमे से भी 'अपि' का उपसर्गवत् प्रयोग केवल 'अपिधानम्' शब्द मे ही उपलब्ध होता है। हिन्दी मे सस्कृत से आगत शब्दो के साथ ही तत्सम उपसर्गो का प्रयोग उपलब्ध होता है-

1. प्र. · (अधिक, आगे) प्रारम्भ, प्रक्रम, प्रभु, प्रदान, प्रकार, प्रसिद्ध, प्रमेय आदि।

2. परा · (उलटा, पीछे) पराक्रम, पराभूत, पराजित, पराजय, पराभव।

3. अप (बुरा, दीन, अभाव, विरुद्ध) अपशकुन, अपकीर्ति, अपभ्रश, अपभाव, अपशब्द, अपव्यय, अपहरण, अपकार।

4. सम् . (अच्छा, भला) सगति, संकल्प, संगम, संग्रह, संतोष, सन्यास, सयोग, सस्करण, सहार, सरक्षक ।

5. अनु : (पीछे, समान) अनुहार, अनुसार, अनुरूप, अनुबन्ध, अनुष्ठान, अनुकरण, अनुग्रह, अनुचर, अनुज, अनुपात, अनुकूल, अनुशासन, अनुस्वार, अनुशीलन ।

6. अव · (नीचे, हीन, अभाव आदि ।) अवसान, अवदान, अवधारणा, अवगत, अवगाह, अवतार, अवनत, अवलोकन, अवस्था, अवरोहण, अवनति, अवशेष ।

7. निस्/निर . (बाहर, निषेध) निरवलम्ब, निष्क्रमण, नि सन्देह, निराधार निर्मम, नि शक, निरपराध, नि श्वास, निर्भय, निर्वाह, निराकरण, नीरोग, निर्मल, निर्दोष ।

8. दुस्/दुर . (बुरा, कठिन, दुष्ट) दुराचार, दुर्गुण, दुर्व्यवहार, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुष्प्राप्य, दुर्लभ, दुर्बल, दुर्जन, दुष्ट, दुस्सह्य ।

9. वि . (विशेष और विगत) विकास, विकार, विशेष, विग्रह, विज्ञान, विधवा, विदेश, विवाद, विलास, विबोध, विवेक, विमन ।

10. आ : (चारों ओर से, पूर्ण तक, समेत, ओर) आजन्म, आकर्षण, आकार, आकाश, आगामी, आगमन, आसक्त, आक्रमण, आचपल, आबाल-वृद्ध, आरम्भ, आरक्त, आजीवन, आरोहण, आमुख ।

11. नि (भीतर, नीचे, विशेष आदि) नियुक्ति, निगम, निकृष्ट, निदर्शन, निदान, निपात, निबध, नियोग, निखित्व, निपट, निलय ।

12. अधि . (ऊपर, श्रेष्ठ आदि) अधीक्षक, अधिष्ठाता, अधिकार, अधिकरण, अधिराज, अधीक्षण, अध्यात्म, अध्येता, अध्यवसाय, अधिपति ।

13 परि (आसपास, चारो ओर, पूर्ण) परिक्रमा, परिरम्भ, परिभ्रान्त, परीक्षा, परीक्षण, परिजन, परिणाम, परिम्, परिधि, परिपूर्ण, परिमाण आदि ।

14. अभि : (ओर, पास, सामने) अभिप्राय, अभिज्ञान, अभिज्ञ, अभिलाषा, अभिरूप, अभिमुख, अभिमान, अभिसार, अभ्यास, अभिशाप, अभिनव, ।

15. उत/उद् (ऊपर, ऊंचा, श्रेष्ठ) उद्भव, उदान्त, उत्कर्ष, उत्कण्ठा, उद्बोधन, उद्घोष, उद्घाटन, उदाहरण, उद्यम, उत्तम, उल्लेख, उन्नति, उत्पन्न, उत्थान, उत्साह, उद्गार, उद्धत ।

16. उप . (निका, सदृश, गौण) उपाध्यक्ष, उपकार, उपयोग, उपदेश, उपनाम, उपभेद, उपवेद, उपनिवेश, उपस्थिति, उपमंत्री ।

17. कु . (बुरा) कुपुत्र, कुकर्म, कुरूप, कुकृत्य, कुशिक्षा ।

18. सु · (अच्छा) सुकर्म, सुपुत्र, सुकृत, सुगम, सुशिक्षित, सुन्दर, स्वागत, सुनिश्चित आदि ।

हिन्दी उपसर्ग

हिन्दी में कुछ तो सस्कृत उपसर्गो से, कुछ उपसर्ग प्रतिरूपको से विकसित हुए हे और कुछ हिन्दी ने अपने उपसर्ग विकसित किए है –

1. अ · यद्यपि यह नञ् तत्पुरूष मे लगने वाला अव्यय शब्द है किन्तु हिन्दी मे यह अब उपसर्ग की तरह ही प्रयुक्त होता है- अज्ञान, अजान, अथाह, अबेर, अलग आदि।

2. अन यह भी सस्कृत के नञ् तत्पुरूष समास मे लगने वाला अव्यय है जो उन शब्दो के पूर्व मे आता है। जिनके आदि मे स्वर हो, किन्तु हिन्दी मे इस नियम का पालन नही किया जाता है। इसके विपरीत व्यजनाद्य-शब्दो के पूर्व में अधिक आता है-अनजान, अनभल, अनचाहा, अनगिनत आदि।

3. अध : 'अध' शब्दाश भी आजकल कुछ शब्दो के साथ उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने लगा है वैसे यह शब्द अपने आप में सख्या वाचक विशेषण है और किसी भी सख्या के 'आधे' का बोध कराता है। उपसर्ग रूप में भी यह आधे का ही अर्थ देता है। मेरी दृष्टि मे इसे उपमर्ग नही माना जाना चाहिए- अधकचरा, अधपका, अधखिला, अधमरा आदि।

4. ओ सस्कृत के 'अव और अप' उपसर्गो से 'औ' रूप विकसित हुआ है जो इन्ही अर्थो मे तद्‌भव शब्दो के साथ प्रयुक्त होता है- औगुण (अवगुण), औघट (अवघट), औदसा (अपदशा), औदर (अवद्रव), औसर (अवसर)।

5. दु यह उपसर्ग सस्कृत के 'दुर/दुस्' का प्रतिनिधि है और हिन्दी मे तद्‌भव शब्दों के साथ प्रयुक्त होना है-दुकाल, दुबला।

6. नि : यह उपसर्ग संस्कृत के निर/निस् से विकसित हुआ है और तद्‌भव शब्दो के साथ प्रयुक्त होता है-निकम्मा, निवल, निखरा, निडर, निधडक, निहत्था, निरोगी निगोडा आदि।

7. बिन : निषेध अर्थ में इसका प्रयोग होता है। यह भी एक प्रकार से अव्यय शव्द है जिसे हिन्दी मे उपसर्ग के रूप में भी स्वीकार कर लिया है। सस्कृत के 'विना' शब्द से विकसित है- बिनजाने, विनबोया, विनखाया, बिनब्याहा आदि।

8. भर : (पूर्ण अर्थ, पूरा, ठीक) भरपूर, भरपेट, भरसक, आदि।

उर्दू उपसर्ग

हिन्दी भाषा मे कुछ उर्दू उपसर्गो का भी प्रयोग किया जाता है जो अपने उर्दू शब्दो के साथ-साथ हिन्दी भाषा में आ गये हैं-

1. कम (थोडा, रिक्त) कमबख्त, कमजोर, कमसमझ, कमदाम, कमउम्र, कमख्रयाल, कमसिन।

रच् = रचना, विद् = वेदना, घट् = घटना, सूच् = सूचना।

5. अनीय धातु को योग्यार्थ में विशेषण बनाता है-

रम् = रमणीय, सम्मान् = सम्माननीय, कृ = करणीय, पठ् = पठनीय।

6. 'आ' : धातु को भाव वाचक सज्ञा बनाता है। निर्मित शब्द सदैव स्त्रीलिग रहता है-

इष् = इच्छा, पूज् = पूजा, क्रीड् = क्रीडा, यथ् = व्यथा, तृष् = तृषा।

7. आलु : धातु को विशेषण बनाता है-

दय् = दयालु, शक् = शकालु, शी = शयालु।

8. 'इ' · धातु को कृर्तृवाचक सज्ञा बनाता है–

हृ = हरि, कु = कवि।

9. 'इन्' . धातु को कर्तृवाचक सज्ञा बनाता है–

त्यज् = त्यागिन्, (त्यागी), अर्थ् = अर्थिन् (अर्थी), द्विष = द्वेषिन् (द्वेषी), वद् = वादिन् (वाटी)।

10. उक : यह धातु को कर्तृवाचक बनाता है-

भिक्ष् = भिक्षुक, भू = भावुक, कम् = कामुक, हन् = धातुक।

11. 'म' · विविध अर्थ प्रदान करता है-

(मन्) दा = दाम, कृ = कर्म, धा = धाम, जन् = जन्म, छद् = छद्म, चर् = चर्म, हि = हेम।

12. मान : यह प्रत्यय सज्ञा या विशेषण बनाता है-

यज् = यजमान, वृत् = वर्तमान, विद् = विद्यमान्

दीप् = देदीप्यमान, विरज् = विराजमान।

13. य · योग्यार्थ में धातु के साथ लगता है-

कृ = कार्य, त्यज् = त्याज्य, पठ् = पाठ्य, दा = देय,

गम् = गम्य, क्षम् = क्षम्य, गद् = गद्य, पद् = पद्य।

14. या : धातु को भाव वाचक सज्ञा बनाता है-

विद् = विद्या, चर् = चर्या, कृ = क्रिया, समस् = समस्या,

शी = शय्या, मृग् = मृगया।

15. 'वर' : धातु को गुणवाचक बनाता है-

ईश् = ईश्वर, नश् = नश्वर, भास् = भास्वर आदि।

हिन्दी कृत् प्रत्यय

1. 'अ' : यह प्रत्यय अकारान्त धातुओं के साथ लगता है और उसे भाव वाचक बना देता है। कुछ धातुओ मे आद्य 'अ' को आ, 'इ' को 'ए' और 'उ' को 'ओ' आदेश होता है-

लूटना = लूट, मारना = मार, चलना = चाल, पहुँचना = पहुँच, मिलना = मेल, मिटना = मेट, बढना = बाढ़, रुकना = रोक आदि।

2. अक्कड़ · यह प्रत्यय धातु को कर्तृवाचक बनाता है। इस प्रत्यय के योग मे आद्य दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है और कुछ धातुओं में 'इ' को 'इय' और 'ऊ' को 'उव' भी हो जाता है-

भूलना = भुलक्कड, पीना = पीयक्कड, बूझना = बुझक्कड, सोना = सुअक्कड़।

3. आ : यह प्रत्यय धातु को भाववाचक सज्ञा बनाता है। कुछ धातुओ मे आद्य स्वर मे परिवर्तन आता है-

घिरना = घेरा, फिरना = फेरा, चलना = चाला,

जुडना = जोड़ा, फूटना = फोडा, छापना = छापा

झगडना = झगडा, झटकना = झटका।

4. आई · (अ) यह प्रत्यय धातु को भाव वाचक सज्ञा बनाता है।

प्रत्ययान्त शब्द सदैव स्त्रीलिग रहता है-

कमाना = कमाई, चढना = चढाई, पीटना = पिटाई,

पढना = पढ़ाई, लड़ना = लड़ाई, बॉटना = बॅटाई,

सिलना = सिलाई, बुनना = बुनाई।

(आ) व्यवसाय का बोध भी कराता है-

चराना = चराई, पीसना = पिसाई, धुलाना = धुलाई।

5. आऊ : यह प्रत्यय धातु को कर्तृवाचक और योग्यतार्थक बनाता है-

टिकना = टिकाऊ, चलना = चलाऊ, बिकना = बिकाऊ,

दिखना = दिखाऊ, गिरना = गिराऊ, खाना = खाऊ,

उड़ाना = उडाऊ, जूझना = जुझाऊ, पटना = पटाऊ,

खटना = खटाऊ।

6. आक, आक् . यह प्रत्यय धातु को विशेषण कर्तृवाचक संज्ञा बनाता है-

उडना = उड़ाकू, लडाना = लडाकू, पढना = पढाकू,

तैरना = तैराक, चलना = चालाक, भिडना = भिड़ाक ।

7. आन : यह प्रत्यय धातु को भाव वाचक संज्ञा बनाता है-

उठना = उठान, मिलना = मिलान, चलना = चलान,

उडना = उडान, भरना = भरान, लगना = लगान ।

8. आप और आव : दोनों प्रत्यय धातु को भाव वाचक बनाते हैं –

मिलना = मिलाप, चढना = चढाव, बहना = बहाव,

खटना = खटाव, लगना = लगाव, जमना = जमाव,

पडना = पड़ाव, दबना = दबाव, बचना = बचाव ।

9. आवट · यह प्रत्यय धातु को भाव वाचक बनाता है-

बनना = बनावट, रुकाना = रुकावट, थकना = थकावट,

दिखना = दिखावट =, मिलाना = मिलावट

10. आवना यह प्रत्यय धातु को विशेषण बनाता है-

सुहाना = सुहावना, डरना = डरावना, लुभाना = लुभावना,

टिप्पणी- वस्तुत. 'आवना' कोई भिन्न प्रत्यय नही है बल्कि 'ना' प्रत्यय ही है जो प्रेरणा मे 'आवना' जैसा लगता है ।

गुणवाचक विशेषण भी-

बढना = बढ़िया, तराशना = तरशिया ।

11. आवा . यह प्रत्यय धातु को भाव वाचक बनाता है । प्रत्ययान्त शब्द सदैव पुल्लिग रहता है-

भूलना = भुलावा, छलना = छलावा, बुलाना = बुलावा,

बढना = बढावा, पहनना = पहनावा, पहिरावा, पछताना = पछतावा ।

12. आहट यह प्रत्यय अनुकरणात्मक धातुओं के साथ लग कर तथा कुछ अन्य धातुओ के साथ भी लग कर उन्हे भाव वाचक बनाता है-

गडगड़ाना = गडगडाहट, छनछनाना = छनछनाहट,

जगमगाना = जगमगाहट, बड़बड़ाना = बड़बड़ाहट,

घबराना = घबराहट, चिल्लाना = चिल्लाहट,

गुर्राना = गुर्राहट।

13. इयल यह प्रत्यय धातु के साथ लगकर कर्तृवाचक या विशेषण बनाता है-

अडना = अडियल, मरना = मरियल, सड़ना = सडियल।

14. इया · यह धातु को कर्तृवाचक संज्ञा बनाता है-

जडना = जड़िया, सुनना = सुनिया।

15. 'ई' . यह प्रत्यय धातु को भाव वाचक सज्ञा या करणमूलक सज्ञा बनाता है-

हॅसना = हॅसी, बोलना = बोली, धमकाना = धमकी,

घुड़कना = घुड़की, रेतना = रेती, फॅसाना = फॉसी,

चिमटना = चिमटी, टॉकना = टॉकी।

16. 'ऊ' · यह धातु को कर्तृवाचक सज्ञा और विशेषण बनाता है-

खाना = खाऊ, रटना = रट्टू, बिगाडना = बिगाड़ू,

मारना = मारू, चलना = चालू, ढलना = ढालू।

17. एरा : यह प्रत्यय धातु को कर्तृवाचक और भाव वाचक सज्ञाएं बनाता है-

लूटना = लुटेरा, निबटना = निबटेरा, बसना = बसेरा,

कमाना = कमेरा।

18. औंता, औती . यह प्रत्यय धातु को भाववाचक सज्ञा बनाता है-

समझाना = समझौता, मनाना = मनौती, चुनना = चुनौती, चुकाना = चुकौती।

19. औंना/ ओनी : यह प्रत्यय विविध अर्थ प्रदान करता है-

खेलना = खिलौना, बिछाना = बिछौना, मीचना = मिचौनी।

20. ती : यह धातु को भाव वाचक सज्ञा बनाता है-

बढ़ना = बढती, घटना = घटती, चढना = चढती,

चलना = चलती, गिनना = गिनती, पाना = पावती,

फबना = फबती।

21. वाला : यह प्रत्यय धातु को कर्तृवाचक विशेषण और संज्ञाए बनाता है। इस प्रत्यय का योग क्रियार्थक संज्ञा के साथ होता है-

जाने वाला, खाने वाला, पढ़ने वाला।

22. हार यह प्रत्यय 'वाला' के स्थान पर कुछ धातुओ के साथ प्रयुक्त होता है होनहार, मरनहार, करनहार, जानहार, देनहार।

तद्धित प्रत्यय

ये प्रत्यय भी तीन वर्गों मे विभाजित किए जाते हैं –

(1) सस्कृत

(2) हिन्दी ओर

(3) उर्दू।

सस्कृत तद्धित प्रत्यय

1. 'अ' विशेषण शब्दो को भाव वाचक बनाता है। 'अ' प्रत्यय के योग में विशेषण शब्द के आद्य स्वर की वृद्धि होती है अर्थात् 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ई', 'ए' को 'ऐ' और 'उ' को 'ऊ', 'ओ' को 'औ' आदेश होता है-

कुशल = कौशल, पुरुष = पौरुष, शुचि = शौच, मुनि = मौन,

लघु = लाघव, गुरु = गौरव।

2. अक सज्ञा को विशेषण बनाता है और 'जानने वाला' अर्थ प्रदान करता है-

मीमासा = मीमॉसक, शिक्षा = शिक्षक, अध्यापन = अध्यापक।

3. इक : यह प्रत्यय संज्ञा शब्दो को गुण वाचक विशेषण बनाता है। आद्य स्वर मे वृद्धि होती है-

वेद = वैदिक, वर्ष = वार्षिक, मानस = मानसिक, देह = दैहिक, समाज = सामाजिक, उपचार = औपचारिक, सेना = सैनिक, ना = नाविक।

4. इत . सज्ञा को गुणवाचक विशेषण बनाता है-

पुष्प = पुष्पित, फल = फलित, कटक = कंटकित, शका = शकित,

पल्लव = पल्लवित, हर्ष = हर्षित।

5. 'इन्' यह प्रत्यय सज्ञा को कर्तृवाचक संज्ञा बनाता है। हिन्दी में 'इन' को 'ई' मिलता है। संस्कृत मे भी प्रथमा एकवचन में यह रूप बनता है। हिन्दी ने इसे ही अपना लिया-

शास्त्र = शास्त्री, धन = धनी, गुण = गुणी, क्रोध = क्रोधी, योग = योगी, भोग = भोगी, पक्ष = पक्षी।

6. इम · अव्ययो को विशेषण बनाता है-

अग्र = अग्रिम, अन्त = अन्तिम, पश्चात् = पश्चिम,

महा = महिम।

7. इमा . विशेषण को भाव वाचक संज्ञा बनाता है-

मधुर = मधुरिमा, काला = कालिया, गुरु = गरिमा,

लघु = लघिमा, रक्त = रक्तिमा, महत = महिमा,

अरुण = अरुणिमा।

8. ईन : संज्ञा को भाव वाचक सज्ञा बनाता है-

ग्राम = ग्रामीण।

9. ईय : सम्बन्ध वाचक विशेषण बनाता है-

त्वत् = त्वदीय, भवत् = भवदीय, स्वक = स्वकीय,

परक = परकीय, मत् = मदीय, नरक = नारकीय।

10. 'त्र' सर्वनाम शब्दो को स्थान वाचक क्रिया विशेषण बनाता है-

यत् = यत्र, तद् = तत्र, सर्व = सर्वत्र, एक = एकत्र।

11. ता : सज्ञा और विशेषण शब्दो को भाव वाचक बनाता है-

गुरु = गुरुता, दास = दासता, मधुर = मधुरता, सम = समता,

नवीन = नवीनता, कवि = कविता, जन = जनता, सहाय = सहायता।

12. त्व : भाव वाचक सज्ञा बनाता है-

गुरुत्व, लघुत्व, बन्धुत्व, सतीत्व, राजत्व, नरत्व, मनुष्यत्व, नारीत्व।

13. 'म' गुण वाचक विशेषण बनाता है-

मध्यम, आदिम, अधम, द्रुम, एकम्, पचम।

14. 'मत्' : 'मत्' प्रत्यय गुणवाचक विशेषण बनाता है-

श्रीमत् , आयुष्यमत् मतिमान् , बुद्धिमान या वृद्धिमान आदि।

('मत' को 'मान्' प्रथमा एकवचन मे होता है, हिन्दी ने इसे भी अपना लिया)

15. 'य' . यह विशेषण को भाव वाचक संज्ञा बनाता है, योग मे आद्य स्वर की वृद्धि होती है-

मधुर = माधुर्य, चतुर = चातुर्य, पण्डित = पाण्डित्य,

कठिन = काठिन्य, धीर = धैर्य, वीर = वीर्य।

16. विन् : यह प्रत्यय गुणवाचक विशेषण बनाता है, हिन्दी मे 'विन्' को 'वी' शेष रहता है-

तपस् = तस्वी, तेजस् = तेजस्वी, मनस् = मनस्वी,

मेधा = मेधावी, माया = मायावी।

हिन्दी तद्धित प्रत्यय

भाव वाचक और समुदाय वाचक-

1. आ सज्ञा शब्दो को विशेषण बनाता है-

भूख = भूखा, प्यास = प्यासा, रूख = रूखा, प्यार = प्यारा,

खार = खारा, ठण्ड = ठण्डा, जोड = जोडा,

सर्राफ = सर्राफा, बजाज = बजाजा, बोझ = बोझा।

2. आई . यह विशेषण और संज्ञा शब्दो को भाव वाचक संज्ञा बनाता है-

भला = भलाई, चतुर = चतुराई, बुरा = बुराई, कड़ा = कडाई,

चिकना = चिकनाई, पण्डित = पण्डिताई, ठाकुर = ठकुराई।

3. आऊ · यह प्रत्यय संज्ञा शब्दों को विशेषण बनाता है-

बाट = बटाऊ, आगे = अगाऊ, घर = घराऊ, पण्डित = पण्डिताऊ।

4. आका · अनुकरणमूलक शब्दो को भाव वाचक सज्ञाए बनाता है-

सन = सनाका, धम = धमाका, पट = पटाका, सड़ = सड़ाका, धड़ = धडाका, खट = खटाका।

5. आटा यह प्रत्यय 'आका' का समानार्थी है-

अर्राटा, सन्नाटा, भन्नाटा आदि।

6. आर : यह प्रत्यय कर्तृवाचक संज्ञाएं, विशेषण आदि बनाता है-

कुम्ह = कुम्हार, सोना = सुनार, चाम = चमार, लोह = लुहार, गॉव = गॅवार, दू = दुआर।

7. आल · यह प्रत्यय विशेषण और संज्ञा बनाता है-

दया = दयाल, कृपा = कृपाल, गाय = ग्वाल, लाठी = लठियाल, ससुर = ससुराल।

8.आलू : संज्ञा से विशेषण बनाता है-

झगड़ा = झगडालू, लाज = लजालू।

9. आस : यह प्रत्यय भाव वाचक संज्ञा बनाता है-

(II) अनता का भी बोध कराता है-

पहाड = पहाडी, घाट = घाटी, ढोलक = ढोलकी,

रस्सा = रस्सी ।

(III) व्यवसाय बोधक सज्ञाएं भी बनाता है-

धोबी, माली, तेली, ढोली, तमोली ।

(IV) भाव वाचक सज्ञाएं भी बनाता हैं-

गृहस्थी, बुद्धिमानी, सावधानी, गरीबी, साहूकारी ।

चोर = चोरी, किसान = किसानी, खेत = खेती,

डाक्टर = डाक्टरी ।

13. ईला : संज्ञाओं को विशेषण बनाता है-

रंग = रगीला, छवि = छबीला, रौब = रौबीला, रस = रसीला,

जहर = जहरीला ।

उर्दू के कृत् और तद्धित-प्रत्यय

बहुतेरे उर्दू शब्द भी हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। ये शब्द अरबी, फारसी और कुछ तुर्की के हैं। इनके कृत-तद्धित-प्रत्यय भी इन्ही भाषाओ के हैं।

कृदन्त

फारसी कृत-प्रत्यय है – अ, आ, आन (ऑ), इन्दा, इश ई इत्यादि। **अरबी** के सभी शब्द संस्कृत के समान किसी-न-किसी धातु से बनते हैं। धातुएँ तीन, चार, पॉच वर्णो तक की होती हैं। धातुओं के वर्णो के मान (वजन) के अक्षर 'मूलाक्षर' है और वे सभी कृदन्त-रूपों में पाए जाते हैं। इन मूलाक्षरों के अलावा, कृदन्त-रूपों मे धातु मे कुछ और अक्षर जोड़ दिए जाते हैं। जिन्हे अधिकाक्षर कहा जाता है। ये अधिकाक्षर सात है – अ, त, म, म, न, ऊ, य। अधिकाक्षरो को याद रखने का सूत्र है– अतसमनूय। ये अधिकाक्षर ही **अरबी के कृत्-प्रत्यय हैं**। ये अधिकाक्षर धातु मे आगे, पीछे, बीच में या मात्रा के रूप मे– कही भी लग सकते हैं। इन प्रत्ययो के आधार पर **अरबी के** (1) कृदन्त-विशेषण, (2) कृदन्त क्रियार्थक सज्ञा, (3) कृदन्त क्रियार्थक विशेषण, (4) कृदन्त स्थानवाचक और कालवाचक सज्ञाएँ बनती है। **फारसी** कृदन्त-प्रत्ययो से (1) भाववाचक, (2) कर्तृवाचक, (3) वर्तमानकालिक कृदन्त और (4) भूतकालिक कृदन्त- शब्द बनते है।

अरबी कृदन्त-विशेषण

धातु	प्रत्यय	कृदन्त रूप	प्रकार
अलम (जानना)	फाइल	आलिम (विद्वान)	कर्तृवाचक संज्ञा

रहम (दया करना)	फईल	रहीम (दयालु)	अधिकताबोधक
कबीर (बडा होना)	अफअल	अकबर (बहुत बड़ा)	अधिकताबोधक

अरबी कृत् क्रियार्थक सज्ञा

धातु	**प्रत्यय**	**कृदन्तरूप**
कबल (सामने होना)	मुफाअलत	मुकाबला
नकर (न जानना)	इफ्आल	इनकार
अरज (आगे रखना)	इफ्तिआल	एतराज

अरबी कृदन्त क्रियार्थक विशेषणों के अन्य रूप

कर्तृवाचक प्रत्यय	**धातु**	**कर्तृवाचक**	**कर्मवाचक प्रत्यय**	**कर्मवाचक**
मुफइल	नफस	मुन्सिफ (न्यायाधीश)	मुफ्अल	मुनसफ (न्याय पाने वाला)
मुन्फइल	सरम	मुन्सरिम (शासक)	मुन्फअल	मुन्सरम (शासित)
मुत्फाइल	वतर	मुत्वातिर (लगातार)	मुत्फाअल	मुत्वातर (निर्विघ्न)
मुस्तफइल	कवल	मुस्तक्बिल (भविष्य)	मुस्तफ्अल	मुस्तकबल (चित्र)

अरबी कृदन्त स्थानवाचक-कालवाचक संज्ञाएँ

धातु	**प्रत्यय**	**संज्ञारूप**
कतब (लिखना)	मफअल	मकतब (जहा लिखना सिखाया जाए)
जलस (बैठना)	सफ्इल	मजलिस
सजद (पूजा करना)	मफ्इल	मस्जिद

'प्रत्यय' का सस्कृत और हिन्दी मे अर्थ है 'कोई शब्दांश या अक्षर, जो किसी सज्ञा या धातु के अन्त मे जुड़कर कोई पद बनाती हो'। किन्तु साधारणतया 'प्रत्यय' का शब्दार्थ है 'चिह्न', 'पहचान' या 'प्रतीति'। अरबी के ये 'प्रत्यय' शब्द पर किसी मात्रा या अक्षर का अतिरिक्त 'भार' या 'वजन' देने के अर्थ मे प्रयुक्त होते हैं। अत ये प्रत्यय 'प्रतीति' के अर्थ में शब्दो पर एक विशेषण 'वजन' पैदा करते है। उपर्युक्त प्रत्ययों या वजनो के अलावा भी अन्य कृदन्त प्रत्यय है जो आगे दिये गये हैं।

अरबी के मूल कृत्-प्रत्यय

प्रत्यय	**उदाहरण**	**प्रत्यय**	**उदाहरण**
फअ्ल	कत्ल	फिआल	कियाम (ठहरना)
फिअ्ल	इल्म	फुआल	सुवाल (पूछना)

फुअ्ल	हुक्म	फऊल	जहूर (रूप)
फिअ्लत	खिदमत	फआलत	बगावत

ये सारे, कृत्-प्रत्यय अधिकाक्षर या वजन ही है और ये वजन 'अतसमनूय' सूत्र वर्णो के अन्तर्गत है।

फारसी कृत्-प्रत्यय

प्रत्यय	**धातु**	**कृदन्त-शब्द**	**वाचक**
अ	आमद	आमद (अवाई)	भाववाचक
अ	खरीद	खरीद (क्रय)	भाववाचक
ऑ (आन)	चस्प (चिपकाना)	चस्पॉ (चिपका हुआ)	वर्तमानकालिक

फारसी तद्धित - प्रत्यय के तीन प्रकार होते है- (1) सज्ञात्मक, (2) विशेषणात्मक और (3) वे कृदन्त पद जो संज्ञाओ मे तद्धित-प्रत्यय के समान जुडते हैं।

सज्ञात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय हैं-(1) भाववाचक-आ, आना (आनह), ई, नामा, गी, (2) कर्तृवाचक- कार, गर, गार, वान, (3) ऊनतावाचक-क, चा, अथवा ईचा; (4) स्थितिवाचक-दान, आ (ह), आब।

विशेषणात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय हैं- आना, इन्दा, आवर, नाक, ई, ईन, मद, वार, वर, ईना, जादा (जादह) गीन इत्यादि।

सज्ञाओ से तद्धित-प्रत्यय के समान जुटने वाले फारसी कृदन्त-पद है-(1) कर्तृवाचक-फअदाज, दार, साज; (2) स्थितिवाचक-आवेज, माल; (3) संज्ञावाचक-कुन, खोर, गीर, दान, दार, नुष्मा, नवीस, नशीन, वद, बीर, बर, बाज, पोश, साज, सार, (4) स्थानवाचक-आबाद, खाना, गाह, इस्तान, शन, जार, बार इत्यादि।

संज्ञात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय

प्रत्यय	**मूल शब्द**	**सम्प्रत्यय शब्द**	**वाचक**
आ	सफेद	सफेदा	भाववाचक
आ	खराब	खराबा	"
नामा	इकरार	इकरारनामा	"
गी	मर्दाना	मर्दानगी	"
कार	काश्त	काश्तकार	कर्तृवाचक
कार	पेश	पेशकार	"
गार	खिदमत	खिदमतगार	"

गार	मदद	मददगार	"
बान	मेज	मेजबान	"
ईचा	बाग	बगीचा	स्थितिवाचक
दान	कलम	कलमदान	"
आब	गुल	गुलाब	'
आब	गिल (मिट्टी)	गिलाब (कीचड)	"

विशेषणात्मक फारसी तद्धित-प्रत्यय

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	प्रत्ययार्थ
आना (आनह)	मर्द	मर्दाना	स्वभाव
आना (आनह)	जन	जनाना	स्वभाव
इन्दा	शर्म	शर्मिन्दा	सज्ञा
इन्दा	कार	कारिन्दा	सज्ञा
नाक	दर्द	दर्दनाक	गुण
ई	ईरान	ईरानी	विशेषण
ई	आसमान	आसमानी	विशेषण
ईन	शौक	शौकीन	स्वभाव
मन्द	अक्ल	अक्लमन्द	स्वभाव
वार	उम्मीद	उम्मीदवार	स्वभाव
ईना	कम	कमीना	ऊनार्थ
ईना	माह	महीना	सज्ञा
जादा (जादह)	हराम	हरामजादा	अपत्य
जादा (जादह)	शाह	शाहजादा	अपत्य
गीन	गम	गमगीन	स्वभाव

तद्धित-प्रत्ययो जैसे फारसी कृदन्त-पद

प्रत्यय	मूलशब्द	सप्रत्यय शब्द	वाचक
अन्दाज	तीर	तीरन्दाज	कर्तृ
दार	दूकान	दुकानदार	"

साज	घड़ी	घड़ीसाज	कर्तृ
आवेज	दस्त	दस्तावेज	स्थिति
खोर	हराम	हरामखोर	विशेषण
गीर	राह	राहगीर	"
दार	फौज	फौजदार	"
नुमा	कुतुब	कुतुबनुमा	विशेषण
नशीन	परदा	परदानशीन	"
बर	पैगाम	पैगामबर	सज्ञा
बाज	नशा	नशेबाज	विशेषण
सार	खाक	खाकसार	"
आबाद	अहमद	अहमदाबाद	स्थान
गाह	ईद	ईदगाह	"
इस्तान	तुर्क	तुर्किस्तान	"
जार	अबा (भोजन)	बाजार	"
बार	दर	दरबार	"

फारसी के उपर्युक्त तद्वित-पद प्रत्ययो द्वारा न बनकर कृदन्त-पदो के लिये हुए सामासिक रूप हैं, अत ये समस्तपद हैं, तद्धितान्त नहीं। किन्तु, इनका तद्धितान्त के समान प्रयोग होता है, अतः यहां इनकी भी गणना कर दी गई है।

अरबी तद्धित-प्रत्यय है– आनी, इयत, ई, ची, म। 'आनी' से विशेषणवाचक, 'इयत' से भाववाचक और 'ई' के गुणवाचक तद्धितान्त बनते हैं। 'ची' तुर्की व्यापारवाचक तद्धित प्रत्यय है, जिसे अरबी ने भी अपना लिया है। 'म' तुर्की स्त्रीलिंग प्रत्यय है, जो अरबी मे भी ज्यो-का-त्यो व्यवहृत होता है। उदाहरण –

अरबी तद्धित-प्रत्यय

प्रत्यय	**मूलशब्द**	**सप्रत्यय शब्द**	**वाचक**
आनी	जिस्म	जिस्मानी	विशेषण
आनी	रूह	रूहानी	विशेषण
इयत	कैफ (कैसे)	कैफियत	भाव
इयत	इसान	इसानियत	भाव

ची	बाबर (विश्वास)	बाबरची	व्यापार
म	बेग	बेगम ('बेग' जाति की स्त्री)	स्त्री

कुछ अन्य उदाहरण

ऊ : सज्ञाओ को विशेषण बनाता है –

पेट - पेटू, घर-घरू, ढाल-ढालू, बाजार-बाजारू, नाक-नक्कू, कान-कन्नू।

ऐरा व्यवसाय का बोध कराता है तथा विशेषण भी बनाता है–

साँप-सँपेरा, काम-कमेरा, काँसा-कसेरा, चित्र-चितेरा, लाख-लखेरा।

ऐत . यह प्रत्यय व्यवसाय का बोध कराता है –

लट्ठ-लठैत, डाका-डकैत।

पन, पा ये प्रत्यय भाव वाचक संज्ञा बनाते है –

लड़का-लडकपन, बच्चा-बचपन, पागल-पागलपन, बाल-बालपन, बूढ़ा-बुढ़ापा, मोटा-मुटापा, राण्ड-रण्डापा।

हारा . विशेषण बनाता है –

लकड- लकडहारा, पानी- पनिहारा, मनि- मनिहारा।

उर्दू कृत् एवं तद्धित प्रत्यय

1. **इश** : दाना = दानिश , रिहा = रिहायश।
2. **इन्दा** · जिन्दा, वाशिन्दा, परिन्दा आदि।
3. **इश** : परवरिश, वारिश, कोशिश, नालिश, मालिश आदि।
4. **ई** : आमदनी, आगजनी, नकबजनी।

तद्धितान्त शब्द –

1. **आना** : जुर्माना, नजराना, हर्जाना, मेहनताना, बयाना।
2. **ई** : खुशी, गर्मी, नेकी, बदी, खुदकशी, नवाबी, फकीरी, दुश्मनी, दलाली, मजूरी, मजदूरी, दुकानदारी, जिन्दगी, रवानगी, बन्दगी आदि।

12

विराम चिह्न

विराम चिह्नो की आवश्यकता – 'विराम' का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव, जीवन की दौड मे मनुष्य को कही-न-कही रुकना या ठहरना भी पडता है। विराम की आवश्यकता हर व्यक्ति को होती है। जब हम काम करते-करते थक जाते हैं, तब मन आराम करना चाहता है। यह आराम विराम का ही दूसरा नाम है। पहले विराम होता है, फिर आराम। स्पष्ट है कि साधारण जीवन में भी विराम की आवश्यकता है।

लेखन मनुष्य के जीवन की एक विशेष मानसिक अवस्था है। लिखते समय लेखक यो ही नही दौडता, बल्कि कही थोडी देर के लिए रुकता है, ठहरता है और पूरा (पूर्ण) विराम लेता है। ऐसा इसलिए होता है कि हमारी मानसिक दशा की गति सदा एक-जैसी नही होती। यही कारण है कि लेखन कार्य मे भी विरामचिह्नों का प्रयोग करना पडता है। यदि इन चिह्नो का उपयोग न किया जाये, तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता मे बाधा पडेगी और वाक्य एक-दूसरे से उलझ जाएगे और तब पाठक को व्यर्थ ही माथापच्ची करनी पडेगी। पाठक के भाव-बोध को सरल और सुबोध बनाने के लिए विरामचिह्नों का प्रयोग होता है। साराश यह कि वाक्य के सुन्दर गठन और भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए इन विरामचिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता मानी गयी है। प्रत्येक विरामचिह्न लेखक की विशेष मनोदशा का एक-एक पडाव है, उसके ठहराव का संकेत स्थान है। इन्ही संकेतों को लेखन मे प्रदर्शित करना विराम चिह्न कहलाता है। लेखक वक्ता भी होता है। अत लिखते समय वह जानता है कि कहाँ पर कितना और किस प्रकार से विराम हुआ है। वह उन स्थानों पर सम्बद्ध चिह्न लगा देता है और उससे भाव स्पष्ट हो जाता है। उदाहरणार्थ किसी ने लिखा–'रोको मत जाने दो।' यह वाक्य दो प्रकार के विचार प्रकट करने मे समर्थ है। विराम चिह्न के अभाव मे कौनसा विचार ग्रहण किया जाए, यह कठिनाई पाठक के सामने आ जाती है। यदि रोको' के पश्चात् अल्प विराम लगा देते है तो भाव होगा कि व्यक्ति विशेष को जाने मत देना, रोक लेना और यदि 'मत' के बाद अल्प विराम होगा तो अर्थ होगा कि व्यक्ति विशेष को रोकना नही है।

(1) रोको, मत जाने दो।

(2) रोको मत, जाने दो।

इन कठिनाइयो को देखकर विराम चिह्नो पर विचार कर लेना आवश्यक है। हिन्दी मे मुख्यत दस प्रकार के विराम चिह्न लगाये जाते है जो इस प्रकार हैं –

1. अल्प विराम (Comma)

2 अर्द्धविराम (Semi-colon)

3 पूर्ण विराम (Full Stop)

4 प्रश्न वाचक (Sıgn fo interogation)

5 विस्मय सूचक (Sign of Exclamation)

6 योजक (Dash)

7 कोष्ठक (Bracket)

8 अवतरण सूचक (Inverted Comma)

9 हसपद

1. अल्प विराम (,) किसी शब्द के उच्चारण के पश्चात् तथा दूसरे शब्द का उच्चारण प्रारम्भ करने से पूर्व कुछ क्षण के लिए जो विराम आता है उसे अल्प विराम कहते हैं। इसका बोधक चिन्ह (,) है।

प्रयोग - (i) जब एक वाक्य मे अनेक शब्द साथ-साथ आ जाते हैं और जिनमें कोई समुच्चय बोधक का प्रयोग न हो वहॉ अल्प विराम लगाया जाता है, यथा - राम, श्याम, हरि और नकुल आ रहे हैं।

(ii) जब अनेक युग्म शब्द एक साथ आते है और युग्म शब्दो को अव्यय से जोडा हुआ होता है तब प्रत्येक जोडे से पूर्व अल्प विराम आता है - पाप और पुण्य, सुख और दुख, राग और द्वेष तथा ज्ञान और अज्ञान एक दूसरे के पूरक है।

(iii) समानाधिकरण शब्द से पूर्व और पश्चात् अल्प विराम आता है–

(1) मैं, हरि सिह, शपथ पूर्वक कहता हूॅ।

(2) अयोध्या के राजा, राम ने या अधोध्या के राजा, राम ने लंका पर आक्रमण किया।

(iv) उक्ति या अवतरण से पूर्व अल्प विराम आता है।

(v) लबे वाक्य मे जब उद्देश्य लबा हो जाता है तो उसके पश्चात् अल्प विराम आता है।

(vi) जिसे सम्बोधित किया जा रहा है उसके बाद अल्प विराम आता है।

(VII) जहॉ समच्चुय बोधक न लगा कर काम चलाना हो वहॉ अल्प विराम लगाते हैं।

2. अर्द्धविराम (;) - जहॉ पूर्ण विराम से आधा समय या अल्प विराम से अधिक समय का विराम होता है वहॉ अर्द्धविराम (;) का चिह्न लगाया जाता है–

(i) संयुक्त वाक्यो के प्रधान वाक्यो मे जब परस्पर विशेष सम्बन्ध नहीं होता तब उनके मध्य अर्द्धविराम चिन्ह लगाया जाता है।

(ii) 'यथा', 'जैसे' आदि शब्दों से पूर्व अर्द्धविराम का चिह्न लगाया जाना चाहिए।

(iii) मिश्रवाक्य के उन अनेक उपवाक्यो के मध्य अर्द्धविराम का चिह्न लगाया जाता है जो एक ही प्रधान वाक्य पर आश्रित रहते हैं।

3. पूर्ण विराम (।) –

1 पूर्ण विराम का अर्थ है, पूरी तरह रुकना या ठहरना। सामान्यत· जहॉ वाक्य की गति अतिम रूप ले ले, विचार के तार एकदम टूट जाये, जहॉ पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। जैसे -

यह हाथी है। वह लडका है। मै आदमी हूॅ। तुम जा रहे हो।

इन वाक्यों में सभी एक-दूसरे से स्वतत्र हैं। सबके विचार अपने मे पूर्ण हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक वाक्य के अंत में पूर्ण विराम लगना चाहिए। सक्षेप में, प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

2. कभी-कभी किसी व्यक्ति या वस्तु का सजीव वर्णन करते समय वाक्यांशों के अत मे पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। जैसे : -

गोरा रग। गालो पर कश्मीरी सेव की झलक। नाक की सीध में ऊपर के होठ पर मक्खी की तरह कुछ काले बाल। सिर के बाल न अधिक बड़े, न अधिक छोटे। कानो के पास बालो में कुछ सफेदी। पानीदार बडी-बड़ी ऑखे। चौड़ा माथा। बाहर बंद गले का लबा कोट।

दृष्टव्य - यहॉ व्यक्ति की मुखमुद्रा का बड़ा ही सजीव चित्र कुछ चुने हुए शब्दों तथा वाक्यांशो में खीचा गया है। प्रत्येक वाक्याश अपने में पूर्ण और स्वतंत्र है। ऐसी स्थिति मे पूर्ण विराम का प्रयोग उचित ही है।

पूर्णविराम का दुष्प्रयोग - पूर्णविराम के प्रयोग मे सावधानी न रखने के कारण निम्नलिखित उदाहरण में अल्पविराम लगाया गया है –

आप मुझे नहीं जानते, महीने मे मैं दो ही दिन व्यस्त रहा हूॅ।

दृष्टव्य– यहॉ 'जानते' के बाद अल्पविराम के स्थान पर पूर्णविराम का चिह्न लगाना चाहिए, क्योंकि यहॉ वाक्य पूरा हो गया है। दूसरा वाक्य पहले से बिलकुल स्वतंत्र है।

निम्नलिखित उदाहरण मे पूर्णविराम के स्थान पर अर्द्धविराम का प्रयोग होना चाहिए –

मै मनुष्य मे मानवता देखना चाहती हूँ। उसे देवता बनाने की मेरी इच्छा नही।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित अवस्थाओ मे होता है–

1 जहा प्रश्न करने या पूछे जाने का बोध हो। जैसे –

क्या आप गया से आ रहे है ?

2 जहा स्थिति निश्चित न हो। जैसे –

आप शायद पटना के रहने वाले हैं ?

3 व्यग्योक्तियो मे। जैसे –

भ्रष्टाचार इस युग का सबसे बडा शिष्टाचार है, है न ?

जहॉ घूसखोरी का बाजार गर्म है, वहॉ ईमानदारी कैसे टिक सकती है ?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

इसका प्रयोग हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि भाव व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित स्थितियो मे होता है –

1 आह्लादसूचक शब्दो, पदो और वाक्यो के अन्त मे इसका प्रयोग होता है। जैसे– वाह! तुम्हारे क्या कहने!

2 अपने से बडे को सादर सम्बोधित करने मे इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे– हे राम! तुम मेरा दुःख दूर करो। हे ईश्वर! सबका कल्याण हो।

3 जहा अपने से छोटों के प्रति शुभकामनाए और सद्‌भावनाऍ प्रकट की जायें। जैसे –

भगवान तुम्हारा भला करे! यशस्वी होओ! उसका पुत्र चिरजीवी हो! प्रिय किशोर, स्नेहाशीर्वाद!

4 जहां मन की हसी-खुशी व्यक्त की जाये। जैसे –

कैसा निखरा रूप है! तुम्हारी जीत होकर रही, शाबाश! वाह! वाह! कितना अच्छा गीत गाया तुमने!

द्रष्टव्य – विस्मयादिबोधक चिह्न मे प्रश्नकर्त्ता उत्तर की अपेक्षा नही करता।

6. योजक चिह्न (-)

हिन्दी में अल्पविराम के बाद योजक चिह्न (-) का अत्यधिक प्रयोग होता है। पर

इसके दुष्प्रयोग भी कम नही हुए। हिन्दी व्याकरण की पुस्तकों में इसके प्रयोग के संबध में बहुत कम लिखा गया है। अत इसके प्रयोग की विधियाँ स्पष्ट नही होती। परिणाम यह है कि हिन्दी के लेखक इसका मनमाना व्यवहार करते है। हिन्दी के विद्वानो को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

1 योजक चिह्न सामान्यत दो शब्दों को जोड़ता है और दोनो को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है, लेकिन दोनो का स्वतत्र अस्तित्व बना रहता है। जैसे - माता-पिता, लडका-लडकी, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य इत्यादि। इन उदाहरणो से यह नियम इस प्रकार बनाया जा सकता है कि **जिन पदो के दोनो खण्ड प्रधान हो और जिनमे 'और' अनुक्त या लुप्त हो, वहाँ योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे –**

घर-द्वार = घर और द्वार, दाल-रोटी = दाल और रोटी, दही-बडा = दही और बड़ा, सीता-राम = सीता और राम, फल-फूल = फल और फूल।

2 दो विपरीतार्थक शब्दों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे ऊपर-नीचे, लेन-देन, माता-पिता, रात-दिन, आकाश-पाताल, पाप-पुण्य, स्त्री-पुरुष, भाई-बहन, देर-सबेर, आगा-पीछा, बेटा-बेटी, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, शुभ-अशुभ, लघु-गुरु, विरह-मिलन, स्वर्ग-नरक, जय-पराजय, देश-विदेश, झूठ-सच, जन्म-मरण, जड-चेतन, योगी-भोगी, हानि- लाभ, मानव-दानव।

3 द्वन्द्व समास में कभी-कभी ऐसे पदों का भी प्रयोग होता है, जिनके अर्थ प्राय समान होते हैं। ये पद बोलचाल मे प्रयुक्त होते हैं। ऐसे पदों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। ये 'एकार्थबोधक सहचर शब्द' कहलाते हैं। जैसे–

मान-मर्यादा, हाट-बाजार, दीन-दुखी, बल-वीर्य, मणि-माणिक्य, सेठ-साहूकार, सडा-गला, भूल-चूक, रुपया-पैसा, देव-पितर, समझ - बूझ सम्बंध- सम्पर्क, भोग- विलास, हिसाब-किताब, भूत-प्रेत, चमक- दमक, जी-जान, साग- पात, बाल-बच्चा, मार-पीट, कौल-करार, शोर-गुल, धूम-धाम, हँसी-खुशी, चाल-चलन, कपड़ा-लत्ता, बरतन-बासन, जीव-जतु, कूडा-कचरा, नौकर-चाकर, सजा-धजा, नपा-तुला।

4 जब दो विशेषण पदो का सज्ञा के अर्थ में प्रयोग हो, वहाँ योजक चिह्न लगता है। जैसे – लूला-लँगडा, भूखा-प्यासा, अधा-बहरा।

5 जब दो शब्दों में से एक सार्थक और दूसरा निरर्थक हो, तब वहाँ भी योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे – परमात्मा-अरमात्मा, उलटा-पुलटा, अनाप-शनाप, रोटी-वोटी, खाना-वाना, पानी-वानी, झूठ-मूठ।

6. जब दो शुद्ध संयुक्त क्रियाएँ एक साथ प्रयुक्त हो, तब दोनों के बीच योजक चिह्न लगता है। जैसे–

पढना-लिखना, उठना-बैठना, मिलना-जुलना, मारना-पीटना, खाना-पीना, आना-जाना, करना-धरना, दौड़ना- धूपना, मरना-जीना, कहना-सुनना, समझना-बूझना, उठना-गिरना रहना-सहना, सोना-जागना।

7 क्रिया की मूल धातु के साथ आयी प्रेरणार्थक क्रियाओ के बीच भी योजक चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

उडना-उडाना, चलना-चलाना, गिरना-गिराना, फैलना-फैलाना, पीना-पिलाना, ओढना-उढाना, सोना-सुलाना, सीखना-सिखाना, लेटना-लिटाना।

8 दो प्रेरणार्थक क्रियाओ के बीच भी योजक चिह्न लगाया जाता है।

जैसे - डराना-डरवाना, भीगना-भिगवाना, जिताना-जितवाना, चलाना-चलवाना, काटना-कटाना, करना-करवाना।

9 जब एक ही संज्ञा दो बार प्रयुक्त हो, तब सज्ञाओ के बीच योजक चिन्ह लगता है इसे 'द्विरुक्ति कहते है। जैसे–

गली-गली, नगर-नगर, द्वार-द्वार, गॉव-गॉव, शहर-शहर, घर-घर, कोना-कोना, चप्पा-चप्पा, कण-कण, बूॅद-बूॅद, राम-राम, वन-वन, बात-बात, बच्चा-बच्चा, रोम-रोम।

10 परिमाणवाचक और रीतिवाचक क्रिया विशेषण मे प्रयुक्त दो अव्ययो तथा 'ही' 'से', 'का', 'न' आदि के बीच योजक चिह्न का व्यवहार होता है। जैसे –

बहुत-बहुत, थोडा-थोडा, थोडा-बहुत, कम-कम, कम-बेश, धीरे-धीरे, जैसे-जैसे, आप-ही-आप, बाहर-भीतर, आगे-पीछे, यहॉ-वहॉ, अभी-अभी, जहॉ-तहॉ, आप-से-आप, ज्यो-का-त्यो, कुछ-न-कुछ, ऐसा-वैसा, जब-तब, तब-तब किसी-न-किसी, साथ-साथ।

11 निश्चित सख्यावाचक विशेषण के जब दो पद एक साथ प्रयुक्त हो, तब दोनो के बीच योजक चिह्न लगता है। जैसे –

दो-चार, एक-एक, एक-दो, चार-चार, नौ-छह, दस-बारह, दस-बीस, पहला-दूसरा, चौथा-पॉचवा।

12 अनिश्चित सख्यावाचक विशेषण में जब 'सा', 'से' आदि जोडे जाये तब दोनों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे –

बहुत-सी बातें, कम-से-कम, बहुत-से लोग, बहुत-सा रुपया, अधिक-से अधिक, थोडा-सा काम।

13 गुणवाचक विशेषण मे भी 'सा' जोड़कर योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे–बड़ा-सा पेड़, बडे-से-बडे लोग, ठिगना -सा आदमी।

14 जब किसी पद का विशेषण नही बनता, तब उस पद के साथ 'सम्बन्धी' पद जोडकर दोनों के बीच योजक चिह्न लगाया जाता है। जैसे –

भाषा-सम्बन्धी चर्चा, पृथ्वी-सम्बन्धी तत्व, विद्यालय-सम्बन्धी बातें, सीता-सम्बन्धी वार्त्ता।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि जिन शब्दो के विशेषण पद बन चुके हैं या बन सकते हैं, वैसे शब्दों के साथ 'सम्बन्धी' जोडना उचित नही। यहाँ 'भाषा-सम्बन्धी' के स्थान पर 'भाषागत' या 'भाषिक' या 'भाषाई' विशेषण लिखा जाना चाहिए। इसी तरह 'पृथ्वी-सम्बन्धी' के लिए 'पार्थिव' विशेषण लिखा जाना चाहिए। हॉ, 'विद्यालय' और 'सीता' के साथ 'सम्बन्धी' का प्रयोग किया जा सक्ता है, क्योकि इन दो शब्दों के विशेषण रूप प्रचलित नहीं हैं। आशय यह कि सभी प्रकार के शब्दो के साथ 'सम्बन्धी' जोड़ना ठीक नहीं।

15. जब दो शब्दों के बीच सम्बन्धकारक के चिह्न - का, के और की- लुप्त या अनुक्त हों, तब दोनों के बीच योजक चिन्ह लगाया जाता है। ऐसे शब्दों को हम सन्धि या समास के नियमों सें अनुशासित नही कर सकते। इनके दोनो पद स्वतत्र होते है। जैसे -

शब्द-सागर, लेखन-कला, शब्द-भेद, सत-मत, मानव-जीवन, मानव-शरीर, लीला-भूमि, कृष्ण-लीला, विचार-श्रृंखला, रावण-वध, राम-नाम, प्रकाश-स्तम्भ।

16 लिखते समय यदि कोई शब्द पक्ति के अत मे पूरा न लिखा जा सके तो उसके पहले आधे खण्ड को पंक्ति के अत मे रखकर उसके बाद योजक चिन्ह लगाया जाता है। ऐसी हालत में शब्द को 'शब्दखण्ड' या 'सिलेबुल' या पूरे 'पद' पर तोडना चाहिए। जिन शब्दों के योग में योजक चिह्न आवश्यक हैं, उन शब्दो को पक्ति मे तोडना हो तो शब्द के प्रथम अश के बाद योजक चिह्न देकर दूसरी पंक्ति, दूसरे अंश के पहले योजक देकर जारी करनी चाहिए। जैसे–

खाने मे रोटी और चने का व्यवहार अधिक करें।

सही बोलने वाला व्यक्ति सदा नपे-तुले शब्दो में बोलता है।

योजक चिह्न का प्रयोग कहाँ नही होना चाहिए– हिन्दी के लेखक योजक चिह्न के प्रयोग में काफी उदारता से काम लेते हैं। ये अब योजक चिह्न को धीरे-धीरे हटाते जा रहे है। भारत की स्वतंत्रता के पहले हिन्दी मे निम्नलिखित शब्दो के बीच योजक चिह्न लगता था, कितु अब इसे हटा दिया गया है। खासकर पत्र-पत्रिकाओं मे ये अधिक देखने को मिलते हैं। ये शब्द इस प्रकार हैं–

रजतपट, कार्यक्रम, जनरुचि, लोकमत, जनपथ, योगदान, चित्रकला, पटकथा, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग, उच्चवर्ग, आकाशवाणी, कामकाज, सूचीपत्र, सीमारेखा, वर्षगाँठ, जन्मदिन, आसपास, अंधविश्वास, गतिविधि, आत्मविश्वास, आत्मसमर्पण, रक्तदान, पदचिन्ह, आत्मनिर्भर, मानपत्र, प्रशंसापत्र, आवेदनपत्र, अभिनंदन पत्र, परीक्षाफल, हिन्दी परिषद, हिन्दी ससार, हिन्दी विभाग, राष्ट्रभाषा।

निश्चय ही, यह अंग्रेजी का प्रभाव है। इस प्रभाव के फलस्वरूप आज नगरो, सस्थाओ, दुकानो, समितियो, आयोगो, कल-कारखानो और पत्र-पत्रिकाओ के नाम, बिना योजक चिह्न लगाये, लिखे जा रहे हैं। जैसे–

सोवियत भूमि, नेहरू पुरस्कार समिति, शाति दल, बिहार सहकारी समिति, मगध विश्वविद्यालय, राजेन्द्र नगर, पटेल कॉलेज, प्रसारण मंत्री, संगीत नाटक अकादमी, बिहार विधान परिषद्, नागरी प्रचारिणी सभा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, दीक्षात समारोह, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, पटना सचिवालय, टाटा आयरन कम्पनी, बोकारो स्टील कारपोरेशन, शिक्षा आयोग, कॉलेज पत्रिका, सयुक्त राष्ट्रसंघ, प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

इन शब्दों के प्रयोग से यह स्पष्ट है कि हिन्दी पर अँग्रेजी का प्रभाव है। एक हद तक यह ठीक भी है। निस्सदेह, इन शब्दो की अपनी उपयोगिता है। इसे हम अँग्रेजी का अधानुकरण नही कहेगे। यह हमारी उदारता है कि हम अँग्रेजी से उपयोगी तत्वों को अपना लेने मे सुरुचि और तत्परता से काम ले रहे है। बात-बात मे योजक चिह्न का व्यवहार भाषा को बोझिल बना देगा। इस दिशा में हमारी देवभाषा सस्कृत पहले से सावधान रही। संस्कृत मे इसीलिए योजक चिह्न का प्रयोग नही के बराबर है। संस्कृत ने सन्धि और समास के नियम बनाकर योजक चिह्न की बहुतेरी समस्याओं का हल निकाल लिया है। हिन्दी को यह विरासत संस्कृत मे मिली है। सन्धि और समास के नियमो से अनुशासित ऐसे हजारों शब्द हिन्दी मे चलते है, जिनमें योजक चिह्न का प्रयोग नहीं होता। अपने आप मे समस्त पद बन गये है। जैसे –

तत्पुरुष समास - राजमत्री गंगाजल, शोकाकुल, शरणागत, पाकिटमार, आकाशवाणी, कर्मपटु, देशांतर, जन्मान्तर, देवालय, लखपति, पकज, रेलकुली।

तत्पुरुष समास के नियम से अपरिचित रहने के कारण हिन्दी में निम्नलिखित शब्द योजक चिन्हों के साथ लिखे गये हैं–

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
गंगा-प्राप्त	गंगाप्राप्त	पद-च्युत	पदच्युत
मन-गढन्त	मनगढ़न्त	पन-डब्बा	पनडब्बा
मन-माना	मनमाना	रसोई-घर	रसोईघर
ईश्वर-दत्त	ईश्वरदत्त	आप-बीती	आपबीती
पुत्र-शोक	पुत्रशोक	जल-मग्न	जलमग्न
देश-निकाला	देशनिकाला	गगा-जल	गगाजल
गुरु-भाई	गुरुभाई	डाक-घर	डाकघर
काम-चोर	कामचोर	जन्म-रोगी	जन्मरोगी

मुँह-तोड	मुँहतोड़	राष्ट्र-भाषा	राष्ट्रभाषा
गिरह-कट	गिरहकट	आनन्द-मग्न	आनदमग्न
मद-माता	मदमाता	घुड-दौड	घुडदौड
तिल-चट्टा	तिलचट्टा	दर्शन-मात्र	दर्शनमात्र

कर्मधारय समास से बने शब्दों के प्रयोग मे भी असावधानी पाई जाती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है –

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कमल-नयन	कमलनयन	कर-पल्लव	करपल्लव
चन्द्र-मुख	चन्द्रमुख	चरण-कमल	चरणकमल
गोबर-गणेश	गोबरगणेश	विद्या-धन	विद्याधन
डाक-गाड़ी	डाकगाड़ी	भव-सागर	भवसागर
रजत-ककण	रजतकंकण	धर्म-शाला	धर्मशाला

अव्ययीभाव समास - अव्ययीभाव समास मे भी योजक चिह्न के दुष्प्रयोग हुए है।

जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दिन-रात	दिनरात	पहले-पहल	पहलेपहल
रात-भर	रातभर	रातो-रात	रातोंरात
यथा-स्थान	यथास्थान	उप-नगर	उपनगर
मुँहा-मुँह	मुँहामुँह	यथा-शक्ति	यथाशक्ति
एक रुपया-मात्र	एक रुपया मात्र	आज-कल	आजकल

द्विगु समास –द्विगु समास से बने सामासिक पदो मे योजक चिन्ह का प्रयोग नहीं होता है। जैसे– सप्तलोक, त्रिभुवन, पचवटी, नवग्रह, सतसई, चवन्नी, चौमासा।

अतः 'सप्त-वर्षीय योजना' लिखना ठीक नही होगा। यह अशुद्ध होगा।

द्वन्द्व समास की चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं और यह कह चुके हैं कि इस समास से बने पदों मे योजक चिन्ह का प्रयोग बहुत अधिक होता है। ऊपर उदाहरण दिए जा चुके हैं।

जिन शब्दो के अंत मे पूर्वक, पूर्ण, मय, युक्त, व्यापी, द्वारा, रूपी, गण, भर, मात्र, स्वरूप इत्यादि जोड़े जाएँ, वहाँ योजक चिह्न का प्रयोग नही होना चाहिए। नयी हिन्दी

मे इनका व्यवहार इस प्रकार होता है–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पूर्वक-श्रद्धापूर्वक	श्रद्धापूर्वक	द्वारा-परिषद्-द्वारा	परिषद् द्वारा
पूर्ण-विनोद-पूर्ण	विनोदपूर्ण	व्यापी-भारत-व्यापी	भारतव्यापी
मय-मगल-मय	मगलमय		
युक्त-योग-युक्त	योगयुक्त	रूपी-कृष्ण-रूपी	कृष्णरूपी
गण-तारा-गण	तारागण	मात्र-मानव-मात्र	मानवमात्र
भर-दिन-भर	दिनभर	स्वरूप-परिणाम-स्वरूप	परिणामस्वरूप

विशेष्य और विशेषण के बीच योजक चिह्न का प्रयोग नही होना चाहिए। जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
काशी-वासी	काशीवासी	अहिन्दी-भाषी	अहिन्दीभाषी
सहेतुक-वाक्य	सहेतुक वाक्य	हिन्दी-फिल्म	हिन्दी फिल्म
बाह्य-आडम्बर	बाह्य आडम्बर	सान्ध्य-गोष्ठी	सान्ध्य गोष्ठी
मातृ-भक्ति	मातृभक्ति	आदर्श-मैत्री	आदर्श मैत्री
मातृ-भाषा	मातृभाषा	हिन्दू-विवाह	हिन्दू विवाह
विभिन्न-ऋतु	विभिन्न ऋतु	अनधिकार-चेष्टा	अनधिकार चेष्टा
रसीली-कहानियॉ	रसीली कहानियॉ	शुभ-समाचार	शुभ समाचार

कुछ लोग नञ् समास से बने नकारात्मक पदो में योजक चिह्न लगाते हैं। जैसे– ना-खुश, अन-पढ़, अन-सुन, बे-बुनियाद, अन-चाहा, बे-मजा, बे-शुमार अन-गिनत। मेरी समझ से ऐसा करना ठीक नही। ये सारे शब्द या तो विदेशज हैं या देशज। यदि हम इन शब्दो मे योजक चिह्न लगाते हैं तो 'अ' या 'अन' से लगने वाले तत्सम और तद्भवो के साथ भी ऐसा करना होगा। जैसे–अनन्त, अनाथ, अपवित्र, अनादर, अनादि, अछूत, अनजान। हिन्दी मे ये शब्द स्थिर हो चुके हैं। हॉ, उर्दू, फारसी और अरबी से आने वाले कुछ शब्दो में उच्चारण की स्पष्टता के लिए हम योजक चिन्ह का प्रयोग कर सकते हैं। जैसे – अजुमन-ए-इस्लाम, आईन-ए-अकबरी, साल-ब-साल, रोज-ब-रोज, कदम-ब- कदम।

यहॉ हम यह भी स्पष्ट कर दे कि शब्दो के आरम्भ में लगने वाले उपसर्गो को योजक चिह्न लगाकर पृथक करना ठीक नही है। पृथक् करने की राय अँग्रेजी के अनुकरण पर दी जाती है। अँग्रेजी के ये शब्द इस प्रकार लिखे जाते हैं–

अँग्रेजी	हिन्दी (अशुद्ध)	हिन्दी (शुद्ध)
Vice-chancellor	उप-कुलपति	उपकुलपति
Ex-soldier	भूतपूर्व-सैनिक	भूतपूर्व सैनिक
Non-cooperation	अ-सहयोग	असहयोग
Vice-Principal	उप-प्राचार्य	उपप्राचार्य
Vice-President	उप-सभापति	उपसभापति

पद निर्माण का यह तरीका हिन्दी की प्रकृति से मेल नही खाता। दूसरी बात यह है कि हिन्दी मे उपसर्गो के साथ योजक चिह्न लगाने की प्रथा नही है। जैसे–

उपसर्ग	शब्द	पद
परा	जय	पराजय
अनु	क्रम	अनुक्रम
उप	कार	उपकार
अति	काल	अतिकाल
मनु	ज	मनुज

स्पष्ट है कि हिन्दी मे अँग्रेजी की इस प्रकार की नकल नही चल सकती। एक उदाहरण इस प्रकार है –"The cow is a four-footed animal' हिन्दी मे इसका अनुवाद होगा– गाय एक चौपाया ('चौ-पाया' नही) जानवर है।

ऊपर हमने योजक चिह्न के प्रयोग का सामान्य परिचय सोदाहरण दिया है और पाया है कि हिन्दी मे पदो के निर्माण मे और समस्त पदों की रचना मे इसका बडा महत्व है, जो पदो के अर्थ और उच्चारण में चार चॉद लगा देता है। किन्तु हमारी समझ से योजक चिन्ह का अत्यधिक प्रयोग भाषा को जटिल और पदो को दुर्बोध बना देगा। इसका प्रयोग सयत और मर्यादित हो और अँग्रेजी की व्यर्थ नकल न की जाये।

7. कोष्ठक –

(i) किसी शब्द का पर्याय, अन्य भाषा का शब्द, अर्थ या कोई तत्सबधी अन्य सूचना देनी हो तो इन्हें कोष्ठक मे रखा जाता है।

(ii) किसी ऐसे वाक्य के साथ दूसरा वाक्य कोष्ठक मे लिखा जाता है जिसका मूल वाक्य के साथ कोई सम्बन्ध न हो।

8. उद्धरण चिन्ह – किसी अवतरण या उक्ति को और किसी शब्द का वैशिष्ट्य बताना हो तो उस शब्द को अवतरण चिह्नो मे रखा जाता है।

उद्धरण चिह्न के दो रूप होते हैं – इकहरा (' ') और दुहरा (" ")।

1 जहाँ किसी पुस्तक से कोई वाक्य या अवतरण ज्यों-का-त्यो उद्धृत किया जाए, वहाँ दुहरे उद्धरणचिह्न का प्रयोग होता है और जहा कोई विशेष शब्द, पद, वाक्य-खण्ड इत्यादि उद्धृत किये जाए, वहाँ इकहरे उद्धरण चिह्न लगते हैं। जैसे–

"जीवन विश्व की सम्पत्ति है।"–जयशंकर प्रसाद

'कामायनी' की कथा संक्षेप में लिखिए।

2 पुस्तक, समाचार-पत्र, लेखक का उपनाम, लेख का शीर्षक इत्यादि उद्धृत करते समय इकहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे–

'निराला' पागल नही थे।

'किशोर-भारती' का प्रकाशन हर महीने होता है।

'जुही की कली' का साराश अपनी भाषा मे लिखो।

सिद्धराज 'पागल' एक अच्छे कवि हैं।

'प्रदीप' एक हिन्दी दैनिक पत्र है।

3 महत्त्वपूर्ण कथन, कहावत, सन्धि आदि को उद्धृत करने मे दुहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे–

भारतेन्दु ने कहा था–"देश को राष्ट्रीय साहित्य चाहिए।"

9. हस-पद – किसी शब्द या शब्दाश के छूट जाने पर उसके अभाव का द्योतन हसपद चिह्न से कराया जाता है।

■ ■ ■

डॉ. जगदीश प्रसाद कौशिक

जन्म तिथि :- 6 सितम्बर, 1930

जन्म स्थानः- ग्राम : पोता, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

शिक्षा·- एम.ए. (दिल्ली), पी.एच.डी. (राजस्थान)

रचनाएँ:- भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास

: संक्षिप्त हिन्दी व्युत्पत्ति कोश

: भाषा वैज्ञानिक निबन्ध

: व्यावहारिक हिन्दी-व्याकरण

: शुद्ध हिन्दी

: अच्छी हिन्दी

: काव्य एवं काव्य-रूप

: अलंकार-शास्त्र

: छन्द-शास्त्र

: काव्य-दर्पण

: भारतीय काव्य-शास्त्र के प्रतिमान

डॉ. कौशिक हिन्दी जगत् के एक जाने-माने भाषा वैज्ञानिक हैं। विगत तीन दशकों में इनकी लेखनी भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में अविराम गति से कार्यरत है।

हिन्दी के साथ-साथ डॉ. कौशिक संस्कृत, पंजाबी, राजस्थानी एवं विभिन्न पहाड़ी बोलियों के अन्छे विद्वान हैं। डॉ. कौशिक श्री कल्याण राजकीय महाविद्यालय, सीकर (राजस्थान) में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर भी रह चुके हैं।